सुशांत की मौत अशांत बौलीवुड

औनलाइन क्लासेज शिक्षा का मजाक

कोरोना ने बताई रिश्तों की अहमियत

# सरिता

अगस्त (द्वितीय) 2020, ₹ 50

## ओटीटी ने किया बौलीवुड स्क्रीनों पर कब्जा

सब्सक्राइब करने के लिए 8588843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

SUNCARE

A WHO GMP COMPANY

SURE SAFE SECURE

कोविड-19 से सुरक्षित रहें. जब भी बाहर निकलें मास्क लगाकर निकलें. सावधानी में ही बचाव है.

# हाथ साफ तो आप संक्रमण से सुरक्षित

## COVISAFE

**Antiseptic Hand Sanitiser Gel**

- फार्मा ग्रेड सैनिटाइजर
- लुभावनी खुशबू
- हाथों की नमी बनाए रखे
- चिपचिपाहट रहित
- शीशे की तरह पारदर्शी

## हेमोक्रॉल*

शहद सा गाढ़ा... संतरे सा स्वादिष्ठ

आयरन एवं फोलिक ऐसिड की कमी दूर कर खून बढ़ाए

## स्टोमाफिट®

टैबलेट व लिक्विड

रखे स्टमक फिट... पेट फिट...आप फिट

**फायदा पहली खुराक से ही**

2 चम्मच/2 टैबलेट दिन में 3 बार खाने के बाद आधा कप पानी के साथ 4 हफ्तो तक

Now Available on 1mg

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

**सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.**

फोन : 8447977889 / 999, 011-46108735, मेल : info@stomafit.com

फ्री होम डिलीवरी 84479 77999

# सरिता

अगस्त (द्वितीय) 2020 अंक 1568

संपादक
प्रकाशक
**परेश नाथ**

संस्थापक
**विश्वनाथ**
1917-2002



14 **ओटीटी ने किया बौलीवुड स्क्रीनों पर कब्जा**

## लेख

28 **सुशांत की मौत**
अशांत बौलीवुड

38 **राममंदिर**
सभी के लिए मंगलकारी नहीं

46 **कमला हैरिस**
अमेरिका में उपराष्ट्रपति उम्मीदवार



38

54 **विदेश नीति**
अलगथलग पड़ता भारत

56 **महेंद्र सिंह धौनी**
शायराना अंदाज में कहा क्रिकेट को अलविदा

60 **रक्षा उत्पादों पर**
विदेशी निर्भरता क्यों

64 **अमेरिका बेबस**
डौलर पर लगी लाल आंख

68 **रोग निरोधक क्षमता**
कैसे बढ़ाएं

74 **औनलाइन क्लासेज**
शिक्षा का मजाक

80 **पीरियड्स से पहले**
क्यों होता है दर्द

82 **कोरोना ने बताई**
रिश्तों की अहमियत और असलियत

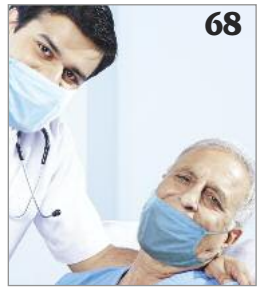

86 **डाक्टर से औनलाइन**
परामर्श कैसे लें

134 **चुगली की आदत**
बच्चों में न पनपने दें


## कहानी


90 **लौकडाउन सरप्राइज**
बेटी ने सरप्राइज दिया या कुछ और

96 **मैं फिर हार गया**
क्या थी अमित की दुविधा

106 **मृत्युदंड से रिहाई**
मां क्यों कर रही थीं अजीब व्यवहार

114 **इंतजार**
सोमा ने आखिर क्या लिया निर्णय

122 **नजरिया बदल रहा**
क्या अपर्णा की सोच बदल सकी


और भी कहानियां पढ़ने के लिए
sarita.in पर login करें.

## बातचीत


142 **विद्या बालन**
आत्मविश्वास है तो आप कुछ भी कर...


## व्यंग्य


130 **चोरों के काम में हस्तक्षेप...**
चुप भई, धर्म के नाम पर चुप रहो


## स्तंभ


8 **आप के पत्र**

10 **सरित प्रवाह**

26 **श्रीमतीजी**

62 **भारत भूमि युगे युगे**

67 **बच्चों के मुख से**

95 **जीवन की मुसकान**

105 **दिन दहाड़े**

113 **इन्हें आजमाइए**

128 **पाठकों की समस्याएं**

136 **चंचल छाया**

145 **हमारी बेड़ियां**

146 **ननमुन**

"India's best English-language magazine"
*—The Guardian, UK*

"For those with an interest in India, it has become an absolute must-read"
*—The New Republic, USA*

As India's only magazine devoted to long-form narrative journalism, *The Caravan* has quickly become renowned for its high standard of detailed reporting, elegant writing, and incisive commentary. As a literary and political journal, it has gained global recognition beyond its growing readership and is now at the forefront of Indian political debates. *The Caravan* is now considered the most respected and intellectually agile magazine in the country.

## INDIA'S ONLY NARRATIVE JOURNALISM MAGAZINE

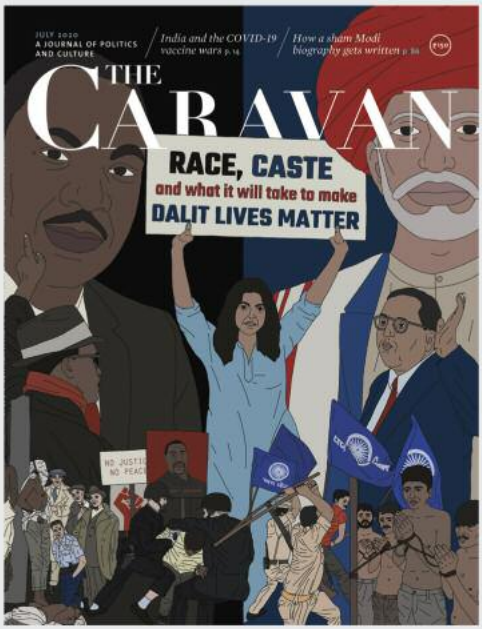


## The Caravan now available for only Rs 1125 (12 issues)

***Assured Delivery by Registered Post.***

THE CARAVAN
*Journal of politics, culture & business.*
www.caravanmagazine.in

To subscribe call toll free at: 1 800 103 8880, Landline 011-41398888, Ext. 119/221/264 (Monday to Saturday 10.00 am to 6.00 pm)
For subscribing online, kindly visit www.delhipress.in/subscribe or e-mail at subscription@delhipress.in
For advertising kindly call Mr. Shantanu Choudhury at +919810604922 or mail shantanu.choudhury@delhipress.in

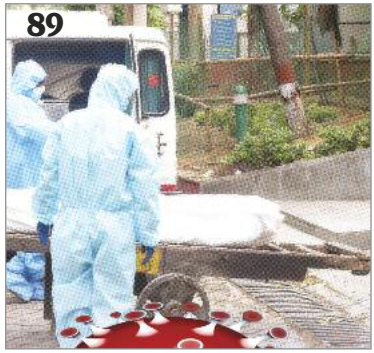


# कविताएं

89 कोविड लाई बेवफाई
93 हालात
103 भयभीत है समाज

**मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय**

**दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.**
**फोन : 011-41398888, 32468201, 32495622, 23529557, फैक्स : 011-41540714, 23625020.**
**अन्य कार्यालय :** 31, ग्राउंड फ्लोर, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009. फोन : 079-26577845.** 11, फर्स्ट क्रास, बालप्पा गार्डन, शिवाजी नगर, **बेंगलुरु-560051. फोन : 080-42013076.** गीतांजली टावर, शौप नं. 114 (व्यास अस्पताल के सामने), अजमेर रोड, **जयपुर-302006. फोन : 09529020226.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, जीडी अंबेडकर मार्ग, वडाला, **फोन : 022-24122661.** 16-ए, अमृता बनर्जी लेन, पहली मंजिल, कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026. फोन : 033-40675040.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लैक्स, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008. फोन : 044-28554448, 28412161.** 122, चिनौय ट्रेड सेंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003. फोन : 040-27896947, 27841596.** बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ-226001. फोन : 0522-2618856.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, ऐग्जिबिशन रोड, **पटना-800001. फोन : 0612-2323840.** जी-7, पायनियर टावर्स, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031. फोन : 0484-2371537.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फिट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.**

**सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें : फोन : 011-41398888, फैक्स : 011-41540714. एक्सटैंशन नंबर : 119, 221, 264 (सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक) मोबाइल/एसएमएस/व्हाटसऐप नंबर : 08588843408 ईमेल : subscription@delhipress.in**

© दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा **ई-8,** झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित. संपादक : परेश नाथ.

**मूल्य : एक प्रति ₹ 50. वार्षिक : ₹ 999, दो वर्ष : ₹ 1,860 (रजिस्टर्ड डाक से)**

**वार्षिक मूल्य :** केवल चैक/ड्राफ्ट/मनीऔर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से **ई-8,** झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. हमारी कोई डिपोजिट योजना नहीं है.
**अंतर्राष्ट्रीय सब्सक्रिप्शन मूल्य (हवाई डाक से) :** वार्षिक 100 अमेरिकी डौलर.

संपर्क करें :

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल : article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल : invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ईमेल : editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ईमेल : subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE

वर्ष : 75, अंक : 16

© Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055. INDIA ISSN 0971-1538
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.
THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

गृहशोभा सरिता मुक्ता

सरस सलिल सत्यकथा मनोहर कहानियां

# पत्रिकाओं की सैकड़ों रोचक कहानियां पढ़ने के लिए आज ही डाउनलोड करें

Kahani सरिता ऐप

रोमांस, क्राइम, फैमिली, रिलेशनशिप व हास्य में से अपनी पसंदीदा विधा चुनने का विकल्प

पसंदीदा कहानियों को ऑफलाइन सेव करने की सुविधा

प्रतिदिन नई कहानियां व व्यंग्य

सुविधानुसार फौंट साइज कमज्यादा करने की सुविधा

गूगल प्लेस्टोर पर उपलब्ध

DELHI PRESS MAGAZINES

## दूसरों की जेब क्यों काट रहे हैं

हम मध्यम श्रेणी के लोग हैं. बेटा लोटस में सर्विस करता है. इलैक्ट्रा कंपनी के 4 शोरूम भोपाल में हैं. मध्य प्रदेश के 5-6 शहरों में शोरूम कितने हैं, नहीं जानता, लेकिन वर्कर 600 के लगभग हैं. तारीख 3 जुलाई को सैलरी मिली. उस में से सभी वर्कर्स के तीनतीन हजार रुपए काट लिए गए हैं, पीएम केयर के नाम पर. सैलरी 18 हजार 500 रुपए है.

भला यह क्या बात हुई, जो बौर्डर पर सैनिक मारे गए हैं उन के नाम पर इतनी देशभक्ति का जज्बा है तो अपनी कमाई से मदद भेजनी थी.

मोदी ने चापलूसी, जीहुजूरी, डर का माहौल बना रखा है. बड़ीबड़ी पार्टियां राजनेताओं को खुश करने में लगी हैं. प्रादेशिक स्तर पर भी ये देशभक्त तो लौकडाउन में भी बिजनैस कर रहे थे जबकि दूसरे शोरूम बंद थे. **सुरेंद्र**

*

## पानी का दुरुपयोग

देश में जिन इलाकों में पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध कराया जाता है वहां लोगों को पानी का दुरुपयोग करने की आदत सी हो जाती है. घर के बच्चों को पानी का अपव्यय करने से न रोका जाता है और न ही नलों को ठीक से बंद रखने की हिदायत दी जाती है.

परिवार की तो बात छोड़ो, घर पर कामवाली बाइयों को भी पानी बरबाद करने की आदत पड़ जाती है, जो मना करने पर भी सुधरने का नाम नहीं लेतीं.

पानी सहेजना, उस का दुरुपयोग रोकना हम सभी देशवासियों की जिम्मेदारी है. देश के कई हिस्सों में लोग पानी की बूंदबूंद को तरसते हैं, लेकिन जिन को भरपूर पानी आसानी से प्राप्त होता है वे क्यों नहीं ऐसा सोच पाते कि जितना फुजूल पानी बहाया जाता है उस से कई गरीबों, जिन को पीने मात्र के पानी का अभाव है, का जीवन संवारा जा सकता है. **शीला हडप**

*

## पप्पू कौन

मगरूर व्यक्ति अपने अलावा दूसरे को कम ही आंकता है. ऐसा व्यक्ति दूसरे को पप्पू कहता है. ऐसे मगरूर व्यक्ति को अपने अंदर भी झांक लेना चाहिए. वह दूसरे को पप्पू कह देता है पर खुद भी किसी पप्पू से कम नहीं है. आप टीवी पर नेताओं की बहस देखें, वहां भाजपा के लोग, बस, मोदी का गुणगान करते हैं. ऐसे भाजपा वाले राज्यों के मुख्यमंत्री हो सकते हैं और साधारण व्यक्ति भी. ऐसे व्यक्ति दूसरे की प्रशंसा, दूसरे को महिमामंडित करना, और दूसरे के काम की तारीफ करते हैं. भला ऐसे व्यक्ति का कोई वजूद होगा? ऐसे लोग समझ जाएं, वही पप्पू हैं, और मोदी ने उन की सोचनेसमझने की शक्ति को गिरवी रख लिया है.

एक बात और कहना चाहता हूं. फर्जी प्रमाणपत्रों से नौकरी पाने का मामला अभी चर्चा में है. जबकि ऐसे शिक्षक वर्षों से नौकरी कर रहे थे. जब इन की भरती

हुई थी, उस समय इन का मामला क्यों नहीं उठा जबकि फर्जीवाड़ा रोकने के लिए पारदर्शी व्यवस्था है. देरसवेर जो हुआ, अच्छा हुआ. इस खबर से शिक्षकों के चेहरे क्यों उतरे हुए हैं. अब रूहेलखंड विश्वविद्यालय के टीचरों के अभिलेखों की जांच होगी. जो टीचर सही है, जो शिक्षक पात्रता की योग्यता पर खरा उतरा है, उसे डरने की क्या जरूरत है. वे इस से बचने का बहाना क्यों ढूंढ़ रहे हैं? जाहिर है जो व्यक्ति सही है, वह इस तरह के आदेशों से नहीं डरता. अब गलती की है, आरोपों से क्यों बच रहे हो? सच्चे हो, सत्य का सामना करो.

अंत में एक चर्चा और करना चाहूंगा. 'देर आए दुरुस्त आए' यह उक्ति प्रवासी लोगों के लिए फिट बैठती है. लौकडाउन में काम बंद होने से अनेक लोगों को अपने शहर आना पड़ा. ऐसे लोग बदहाल स्थिति में अपने घर चल दिए. इन की स्थिति देख कर सरकर ने अपने खर्च से इन्हें इन के घर पहुंचाने की व्यवस्था की. अब ये अपने घर आ कर सुकून से हैं कि वर्षों बाद उन्हें अपने घर की छांव मिली है.

ऐसे लोगों के अपने अनुभव हैं. वे कह रहे हैं, परदेस नहीं जाएंगे. अपने शहर में रह कर रोजीरोटी का जुगाड़ करेंगे. अपना शहर छोड़ने की मजबूरी नई नहीं है, लोग बेहतर काम मिलने की आशा से अपना शहर छोड़ते हैं. इस से क्या होता था, महानगरों में आबादी का बोझ बढ़ता था. अब लौकडाउन की वजह से उन्हें सबक मिल गया कि अपना शहर ही रहने के लिए मुफीद है. **दिलीप गुप्ता**

*

## बेजोड़ पत्रिका

दिल्ली प्रैस की पत्रिकाएं अपनेआप में बेजोड़ हैं. अंधविश्वास पर प्रहार करने में 'सरिता' अपना मिशन जारी रखे हुए है.

कोरोना कहर ने मंदिरों तक को ताले में कर दिया था. बेचारे मंदिर रात्रि को तो ताले में रहते ही थे, लौकडाउन में चौबीसों घंटों के कैदी हो गए थे. कोरोना से मंदिर भी भयभीत हो गए.

**नारायण सिंह राजावत**

*

## आत्महत्या क्यों?

आजकल आत्महत्या के मामले कुछ ज्यादा ही सामने आ रहे हैं, विशेष रूप से सैलिब्रिटीज के. ये उस दुनिया के बाशिंदे हैं, जहां सिर्फ दिखावा ही दिखावा है. परदे पर और वास्तविक जीवन में भी. दिखाने के चक्कर में मित्र, परिवार सभी फिल्मी हो जाते हैं. गुटबाजी, गलाकाट प्रतिस्पर्धा, संघर्ष से भागने की प्रवृत्ति.

दिखावे के चक्कर में मितव्ययता से दूर, आमदनी अठन्नी खर्चा रुपया भी एक वजह है. एकल परिवार और लिवइन रिलेशनशिप, जहां भावनात्मक लगाव नहीं होता, भी एक वजह है. कोरोना काल में ये सब बातें उजागर हो गई हैं. क्या हम कुछ सीख लेंगे और 'संतोषी सदा सुखी' को अपना कर एक खुशहाल जीवनदर्शन अपना पाएंगे? **महेश टंडन** ●

**आप भी भेजें**

सरिता में प्रकाशित रचनाओं तथा अन्य सामयिक विषयों पर अपने विचार भेजिए. कृपया पत्रों पर अपना पता अवश्य लिखें. पत्र इस पते पर भेजिए : **आप के पत्र, सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.**

नीचे लिखे नंबर पर ***एसएमएस*** या ***व्हाट्सऐप के जरिए मैसेज/ऑडियो भी कर सकते हैं.***

**08527666772**

# सरित प्रवाह

संपादकीय

## पुरानी शिक्षा का नया संस्करण

सरकार की नई शिक्षा नीति 2020 में सब से बड़ी आपत्ति तो 'नई' शब्द पर ही होनी चाहिए. इस नीति में आधुनिकता, नैतिकता, तार्किकता, वैज्ञानिकता पर जोर कम जबकि पौराणिकता, संस्कारिता, संस्कृत, पौराणिक हथियारों, पौराणिक काल की कपोलकल्पित प्रथाओं को अंतिम सत्य मान लेने पर ज्यादा है. इस का नाम तो असल में 'प्राचीन शिक्षा नीति 2020' होना चाहिए.

पहला वाक्य चाहे यह हो कि इस का उद्देश्य न्यायसंगत, न्यायपूर्ण समाज का विकास और राष्ट्रीय विकास है, पर ज्यादा जोर 'सांस्कृतिक संरक्षण', 'बुनियादी कथा', 'साहित्य', 'संस्कृति', 'भारत की परंपरा', 'सांस्कृतिक मूल्यों', 'प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान व विचार की समृद्ध परंपरा', 'ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज', 'भारतीय परंपरा', 'भारतीय दर्शन', 'ज्ञान अर्जन नहीं पूर्ण आत्मज्ञान', 'मुक्ति' जैसे शब्दों पर होने से इस नीति को प्रारंभ में ही इस तरह सजा दिया गया है जैसे पंडित किसी भी जन्म, विवाह और मृत्यु जैसे आवश्यक प्राकृतिक कर्म के प्रारंभ पर कब्जा कर के तथाकथित मंत्रों से उस की सफलता की गारंटी लेते हैं.

प्राचीन नीति के इस नए संस्करण में लचीलेपन शब्द का इस्तेमाल बहुत किया गया है. चाहे उस का शाब्दिक मतलब कुछ हो, वर्तमान में यही माना जाएगा कि लचीलेपन का मतलब है कि जो पढ़ने योग्य है उसे पढ़ाओ, बाकी को छोड़ दो. विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति को पहचान कर के बच्चे को शिक्षा देने का अर्थ है कि जो बच्चे पढ़ना नहीं चाहते या जिन के परिवार उन्हें पढ़ा नहीं सकते, उन से कोई जोरजबरदस्ती न की जाए.

क्या बच्चे अपनी क्षमता और प्रतिभा कक्षा में तय कर सकते हैं? पर यह नीति कहती है कि उसे निर्णय लेने दो. वह अपनी प्रतिभा के अनुसार जीवन का रास्ता चुने यानी जिसे गांव में गाय चराने में मजा आता है उसे करने दो, स्कूल तक न ले जाओ. दलितों, शूद्रों के बच्चे पढ़ कर क्या करेंगे? उन्हें अपने मन की मरजी करने दो. यह इस नीति की मूल आत्मा है जो पूरी तरह पौराणिक वर्णव्यवस्था के अनुसार है जिस में बच्चों और औरतों को पढ़ने पर पूरी पाबंदी है और अनपढ़ों के किस्सों को दिखादिखा कर ढोल बजाया जाता है.

मूलभूत सिद्धांतों में यह निर्देश स्पष्ट है कि शिक्षा का भारतीय जड़ों और गौरव से बंधे रहना अनिवार्य है. प्रधानमंत्री मानवनिर्मित रामलला की मूर्ति के सामने जिस तरह लोट लगा कर 5 अगस्त को फोटो खिंचवा रहे थे वह इस सिद्धांत का प्रैक्टिकल उदाहरण है. छात्रों और शिक्षकों को यह ज्ञान प्राप्त करना होगा कि कहां इस तरह का साष्टांग प्रणाम

करना जरूरी है और कब असल ज्ञान के लिए किसी गुफा में जाना है. शिक्षा नीति कहती है कि जड़ों को वहां याद रखें और उन से बंधे रहें जहां प्रासंगिक लगें. गौमूत्र, गोबर के सिद्धांत आज भी हमें याद दिलाए जा रहे हैं और यह शिक्षा नीति का छिपा हुआ अतिरिक्त आदेश है.

प्रारंभिक शिक्षा अब कक्षा 1-2, कक्षा 3 से 5, कक्षा 6 से 8, कक्षा 9 से 12 के 4 वर्गों में विभाजित होगी. एलिमैंट्री चाइल्ड केयर शिक्षा के वर्ग में अक्षर, भाषा, खेल, पहेलियां, चित्रकला, नाटक, कठपुतली, शिष्टाचार, नैतिकता, समूह में काम करना या रैजिमैंटेशन, अच्छा व्यवहार यानी ओबिडियंस, सांस्कृतिक विकास यानी पूजापाठ आदि 6-7 वर्षों तक सिखा कर बच्चों को ऐसा बना दिया जाए कि वे आगे मस्तिष्क चलाने के लायक ही न रहें.

इस शिक्षा नीति में इसी तरह की बातें कहीं छिपा कर, कहीं खुले शब्दों में बिना हिचक के कही गई हैं.

पिछली शिक्षा नीतियों का कोई अच्छा परिणाम निकला हो, ऐसा नहीं. आजादी के बाद से ही हमें कूपमंडूक बने रहने की शिक्षा मिली है. कभी केंद्र के निर्देश पर तो कभी राज्यों या स्थानीय शिक्षा नौकरशाही के कारण जो शिक्षा मिली है उस के कारण देश में हर वर्ष अंधविश्वासी लोगों की गिनती बढ़ी है. आधुनिक तकनीक का सहारा अंधविश्वास और अपना दंभ बढ़ाने के लिए पिछले सालों में लिया गया है. आज कुछ नया नहीं होने वाला है. कांग्रेस ने भी धार्मिक शिक्षा नीति बनाई थी, पर ढोल नहीं पीटा था.

## भाजपा फेल, गहलोत पास

कर्नाटक और मध्य प्रदेश में कांग्रेस से सत्ता छीन लेने के बाद भारतीय जनता पार्टी अब राजस्थान में बेईमानी से सत्ता पर आना चाहती है. अपने को नैतिक व भ्रष्टाचारमुक्त कहने वाली पार्टी जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों को खरीद कर रही है. यह असल में नया नहीं है. पौराणिक कहानियां इसी तरह के प्रपंचों से भरी हैं. विभीषण का तो नाम है ही, पर महाभारत के युद्ध में भी अपनों का साथ छोड़ कर दुश्मन से मिलने की कई कथाएं बिना आंख झपकाए बारबार दोहराई जाती हैं और उन पर धार्मिकता का ठप्पा भी लगा दिया जाता है.

कांग्रेस को तोड़ने की पूरी कोशिश कर रही भाजपा को खासी असफलताओं का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि असल बात यह है कि रामधुन गाने भर से ही जनता का कल्याण नहीं होता. रामलला के सामने लोट लगाने से जनता का भला नहीं होता, उलटे, अपना खुद का आत्मविश्वास समाप्त होता है. राजस्थान में सचिन पायलट को मध्य प्रदेश में ज्योतिरादित्य सिंधिया की तरह फोड़ कर

मिलाने का काम आसान नहीं रहा. कांग्रेसी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने फिलहाल मात दे दी है.

भाजपा की राज्य सरकारें थोड़ेबहुत अच्छे काम कर रही हैं, इस का दावा नहीं किया जा रहा, बल्कि भाजपा के दोनों नेता देश की अर्थव्यवस्था से बेखबर होते हुए राज्यों की विपक्षी सरकारों को गिराने में लगे हैं. अपने कर्तव्य के प्रति भाजपा सरकार की इस तरह की उदासीनता एकदम खतरनाक है. खासतौर से तब जब देश कोविड से भी कराह रहा है और बढ़ती बेकारी व बंद होते उद्योगों तथा व्यापारों से भी.

यह कहना कि देश तो चल रहा है, गलत है. जब राजा नहीं होते तब भी तो देश चलते हैं. तब, लोकल गुंडों की बन आती है. जिस के हाथ में बंदूक होती है, वह अपना पैरेलल शासन बना लेता है. देश अब इस कगार पर पहुंच गया है कि जिस के हाथ में आज भगवा झंडा है, मुंह में जय श्रीराम है वह विधायकों को हड़का सकता है और थानेदार को पीट सकता है, आम आदमी की तो हैसियत ही क्या है.

जब देश सरकार से सही फैसलों की उम्मीद कर रहा है, उसे थालियों, तालियों, दीयों और रामनगरी के झुनझुने पकड़ाए जा रहे हैं, ताकि देश को चलाने वाले राज्यों की विपक्षी सरकारें गिरा सकें. मजेदार बात यह भी है कि इस हमले के शिकार कांग्रेसी शिकारी के छिप कर वार करने की पोल खोलने के बजाय अपनी ही कमियां गिनाने में लगे दिख रहे हैं.

## प्यार के रिश्ते में कानूनी दीवारें

पतिपत्नी विवादों में अब काजियों का दखल बढ़ता जा रहा है, क्योंकि अब पतिपत्नी एकदूसरे से ज्यादा ही मांग कर रहे हैं. दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस बारे में ऐलीमनी को निर्धारित करने के लिए पतिपत्नी दोनों को अपने बारे में और ज्यादा बताने का शपथपत्र तैयार किया है. इस में वे कौन सी घड़ी पहनते हैं, कौन सा मोबाइल इस्तेमाल करते हैं, कौन सी मेड या डोमैस्टिक हैल्प रखते हैं और सोशल मीडिया अकाउंटों में किसकिस तरह के फोटो डालते हैं, बताने को कहा गया है.

ऐलीमनी मांगते समय पत्नियां पति की ब्लैक ऐंड व्हाइट इनकम बढ़ाचढ़ा कर बताती हैं और इतना ज्यादा पैसा मांगती हैं कि पति का दीवाला ही निकल जाए. दूसरी तरफ गुस्सा हुआ पति सबकुछ दांव पर लगाने को तैयार होता है, पर पैसा देने को तैयार नहीं होता. पति व्यवसाय बंद कर देते हैं, नौकरी छोड़ देते हैं.

विवाहपूर्व अपना सही खर्चा दोनों बताएं, इसलिए यह 99 पौइंट का शपथपत्र पति और पत्नी दोनों की पोल खोल देगा. पक्की बात है कि दोनों को लगेगा कि विवाह करना आसान है, झगड़ा करना मुश्किल नहीं है. हां, घर छोड़ना कठिन है. वहीं, तलाक पाना, वह भी झगड़ा कर के, सब से बड़ी मुसीबत है.

कहने को तो यह औरतों को बराबरी का हक दिलाने की सारी कोशिश है ताकि पति पत्नी से उस की जवानी छीन लेने के बाद उसे फटेहाल बना कर दरदर

भटकने को मजबूर न करे, पर असल में, यह दोनों के लिए एक आफत लाएगा.

विवाह 2 जनों का आपसी सहमति से बना संबंध है. उसे संस्कार या कानूनी जामा पहना कर जटिल बना दिया गया है कि जिस पर आप पूरा विश्वास कर के अपना तनमन दे दें उसी से चीजें छिपा लें. विवाह तभी तक सफल होता है जब तक दोनों पक्ष रजामंदी से इसे निभाते हैं. जब एकदूसरे पर हावी होने लगें या किसी और के प्रति किसी भी कारण से आकर्षित होने लगें तो खटास पैदा होगी. पर इस में विवाद नहीं खड़ा होना चाहिए, यह आराम से टूटने वाला संबंध होना चाहिए.

आज आखिर बेटोंबेटियों का मातापिता पर क्या हक है, क्या वे बेघर और बेसहारा हैं? बिना कानूनी संरक्षण के बच्चों को मातापिता का पूरा कानूनी और सामाजिक प्रोटैक्शन मिलता है. उन्हें अपने हकों के लिए अदालतों के दरवाजे नहीं खटखटाने पड़ते.

अगर पतिपत्नी विवादों में सदियों से विवाद खड़े होते रहे हैं तो इस का मुख्य कारण धार्मिक कानून रहे हैं, जिन्होंने विवाह पर कब्जा कर के अपना हित साधा है. कानून उसी विवाह को मानता है जो धार्मिक बिचौलिए द्वारा या अदालत द्वारा संपन्न कराया गया हो.

पत्नी को सुरक्षा देने के नाम पर इस बहाने धर्म ने पत्नी को असल में अपने जाल में फंसाया होता है. हर धर्म में पतिपत्नी विवाद में औरतों को सब से पहले चर्च, मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारे में जाने का आदेश दिया जाता है. वहां वे अपना रोना रोती हैं, अपना सबकुछ देती हैं. अब उन की जगह अदालतों ने ले ली है. पर, धर्म के दुकानदारों का रसूख आज भी बड़ा है.

पतिपत्नी में विवाद होंगे, दोनों एकसाथ न रह पाएं, यह असंभव बात नहीं. पति और पत्नी के बीच में कोई और भी भा सकता है और वे पुराने साथी को छोड़ कर नए के साथ कुछ समय या हमेशा के लिए रहने की जिद सी पकड़ सकते हैं. इसे ज्यादा तूल देना गलत है. उस ने विवादों को जन्म दिया है, सुलटाया नहीं है. पतिपत्नी के प्यार के रिश्ते में कानूनी दीवारें खड़ी कर दी गई हैं.

पति और पत्नी अब जरा सी अनबन होने पर मेरातेरा करने लगते हैं. पहले तो सबकुछ पति का ही होता था, तो विवाद की गुंजाइश ही नहीं होती थी. पति ने छोड़ा तो या तो मर जाओ या फिर मांबाप के पास लौट कर नौकरानी की तरह रहो. अबला की तरह भी बहुत थीं, आज भी बहुत हैं.

पतिपत्नी विवादों को देखते हुए लगता है कि दोनों पक्षों को तो विवाह के पहले ही प्यार को ताक पर रख कर एक कौंट्रैक्ट साइन करना पड़ेगा. विवाह के बाद भी तेरामेरा बना रहेगा. जीवनसाथी की ही कठिनाई उस की कठिनाई होगी, दोनों की नहीं. यह स्थिति और भयंकर व विवादों से भरी होगी. अफसोस यह है, दुनियाभर की सरकारें धर्म की दुकानों की जिद के कारण पतिपत्नी संबंधों को सहज और सरल बनाने के लिए कुछ नहीं कर रही हैं, जबकि अदालतें इन्हें और उलझा रही हैं. तलाक आसान क्यों न हो, इस पर कहीं कोई चर्चा तक नहीं हो रही. ●

# ओटीटी ने किया बौलीवुड स्क्रीनों पर कब्जा

• शांतिस्वरूप त्रिपाठी

ओटीटी प्लेटफौर्म की लगातार बढ़ती लोकप्रियता ने पहले ही बौलीवुड के स्क्रीन प्रदर्शन को चुनौती देनी शुरू कर दी थी और कोरोना वायरस के चलते जहां बौलीवुड ठप पड़ने लगा वहीं ओटीटी ने रफ्तार पकड़ ली. क्या बौलीवुड ओटीटी प्लेटफौर्म्स की मार से बच पाएगा?

सिनेमा मनोरंजन का अहम साधन है. विज्ञान व तकनीक के विकास के साथसाथ सिनेमा भी विकसित होता रहा है. तो वहीं समय के साथ सिनेमा को अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए कई बार तरहतरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा और हर चुनौती में सिनेमा सदैव निखर कर आता रहा है. यह कटु सत्य है कि कोरोना वायरस व लौकडाउन के चलते कुछ फिल्मों के ओटीटी अर्थात 'ओवर द टौप मीडिया सर्विसेस' प्लेटफौर्म्स पर सीधे प्रसारित होने की वजह से चर्चा गरम है कि ओटीटी प्लेटफौर्म्स ने बौलीवुड अर्थात सिनेमा पर हमला कर दिया है. मगर यह दौर अस्थायी है.

यदि ओटीटी प्लेटफौर्म्स के कर्ताधर्ताओं ने अपनी कार्यशैली में बदलाव नहीं किया, तो ओटीटी प्लेटफौर्म्स के सामने अपने अस्तित्व को बचाए रखने का संकट गहरा जाएगा. कोरोना वायरस व लौकडाउन के चलते 17 मार्च से फिल्म, टीवी सीरियल्स और वैब सीरीज की शूटिंग्स बंद हो गईं. परिणामस्वरूप, इन ओटीटी प्लेटफौर्म्स ने फिल्मकारों की व्यावसायिक सोच पर हमला करते हुए प्रदर्शन के लिए तैयार फिल्में खरीदनी शुरू कर दीं. इधर कई फिल्में मार्च, अप्रैल व मई माह में प्रदर्शन के लिए तैयार थीं. फिल्मों के निर्माताओं के सामने भी समस्याएं थीं क्योंकि हर फिल्म के निर्माण में कई सौ करोड़ रुपए लगे होते हैं. इसी के चलते कुछ निर्माताओं ने अपनी फिल्में ओटीटी प्लेटफौर्म को बेच दीं. मगर ओटीटी प्लेटफौर्म ने अवसर का बेहतर फायदा उठाते हुए कुछ बड़ी फिल्मों के

साथसाथ छोटी फिल्मों और उन फिल्मों को भी हासिल कर लिया, जो शायद कमतर गुणवत्ता के चलते सिनेमाघरों तक नहीं पहुंच पा रही थीं.

इस समय एंटरटेनमैंट इंडस्ट्री में केवल ओटीटी प्लेटफौर्म्स ही ऐसे हैं जो फायदे में हैं. बहुचर्चित शोज और फिल्मों को लोग लौकडाउन के चलते बिंज वौच कर रहे हैं, जिन के जरिए इन प्लेटफौर्म्स की व्यूअरशिप बढ़ी है. भारत में इस समय

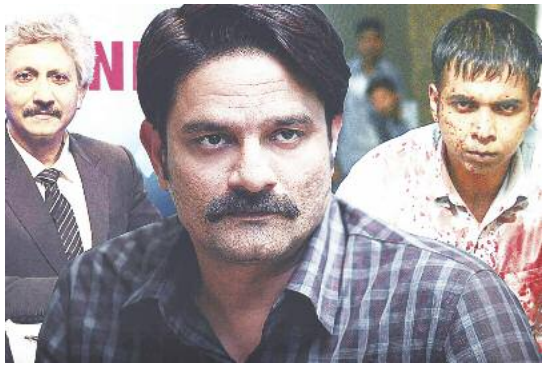

अनुष्का शर्मा के प्रोडक्शन में बनी अमेजोन ओरिजिनल सीरीज 'पाताललोक' ने लौकडाउन के दौरान खूब शोहरत बटोरी.

40 ओटीटी प्लेटफौर्म्स हैं जिन का मार्केट साल 2018 में कुल 2,150 करोड़ रुपए का था. वहीं, साल 2019 में इस इंडस्ट्री ने 17,300 करोड़ की कमाई की थी. इस से अंदाजा लगाया जा सकता है कि साल 2020 में इन प्लेटफौर्म्स की कमाई के कितने रिकौर्ड टूटेंगे. ओटीटी का किंग कहे जाने वाले नैटफ्लिक्स ने न केवल यूएस बल्कि भारत में भी मजबूती से पैर जमा लिए हैं.

'नैटफ्लिक्स एंड चिल' का मजा जहां केवल कुछ लोग ही उठा रहे थे वहीं जरूरत से ज्यादा मिले खाली समय ने लोगों को बेवक्त फिल्में और शोज देखने की आदत डलवा दी है. नतीजतन, नैटफ्लिक्स की कमाई पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई है और वैश्विक स्तर पर इस का सब्सक्रिप्शन 25 फीसदी बढ़ा है. लेकिन, यह सफलता की सीढ़ियां केवल नैटफ्लिक्स ही नहीं चढ़ा है बल्कि अमेजोन प्राइम भी इस में शामिल है. अपनी ग्लोबल पौलिसी के चलते प्राइम ने आंकड़े नहीं बताए हैं लेकिन तेजी से बढ़ रहे प्रचारप्रसार और हालिया शो 'पाताललोक' सफलता की कहानी कह रहा है. इस प्लेटफौर्म पर कुछ और ओरिजिनल सीरीज की एडिटिंग का काम चल रहा है जो जल्द ही प्रसारित होंगी.

लौकडाउन के दौरान हिंदीभाषी शोज भी लोगों को इन प्लेटफौर्म्स की तरफ अत्यधिक आकर्षित कर रहे हैं. जहां इंग्लिश भाषा के शोज केवल पढ़ेलिखे व इंग्लिश के जानकार, जिन में ज्यादातर युवा हैं, देख सकते हैं तो हिंदी शोज की पहुंच हर घर तक है. हिंदी के दर्शकों में औरतें, बुजुर्ग, युवा व हिंदीभाषी पुरुष हैं. यह भी एक कारण है कि छोटे ओटीटी प्लेटफौर्म वूट के शो 'असुर' को अप्रत्याशित सफलता मिली. हिंदी में होने के कारण इस शो को लौकडाउन की शुरुआत में ही अनेक लोगों ने देखा जिस से वूट की व्यूअरशिप अत्यधिक बढ़ गई. वहीं, फिल्मों की बात करें तो

चाहे कुछ फिल्में ओटीटी पर न भी चली हों, फिर भी दर्शक अनेक फिल्में देख रहे हैं. इसी के चलते डिज्नी+हौटस्टार ने अक्षय कुमार की फिल्म 'लक्ष्मी बौंब' को 150 करोड़ रुपए में खरीदा है. इतनी महंगी फिल्म को खरीदने का मतलब साफ है कि लोगों का ध्यान इस ओटीटी प्लैटफौर्म की तरफ आकर्षित हो और ज्यादा से ज्यादा लोग फिल्म को देखने के लिए सब्सक्रिप्शन लें.

शोज और मूवीज ही नहीं, बल्कि ब्रिटिश, एशियन खासकर कोरियन शोज की भी भरमार है. ये शोज न केवल लोगों को दूसरे देशों के कल्चर और क्रिएटिविटी से अवगत कराते हैं बल्कि कुएं का मेंढक बने रहने की भावना से बाहर भी निकालते हैं. हर तबके और उम्र के व्यक्ति में बिंज वौच की जो आदत पनपी है, उसे लौकडाउन ने और ज्यादा हवा दी है. खाली समय और घर में मौजूदा हर आराम के बीच एक पैर

सिनेमाघरों में फिल्मों के प्रदर्शित न होने के चलते ओटीटी प्लेटफौर्म हौटस्टार प्लस डिज्नी ने अपना सब्सक्रिप्शन बढ़ाने के लिए फिल्म 'लक्ष्मी बौंब' को 150 करोड़ रुपए में खरीदा है.

---

ओटीटी प्लेटफौर्म की लोकप्रियता और कोरोनाकाल में अत्यधिक कमाई का सब से बड़ा कारण इस का भारी स्टौक है. ओटीटी पर किसी भी साल की, कितनी ही पुरानी सीरीज या फिल्म को दिखाया जाता है. लोगों को विंटेज शोज अत्यधिक पसंद आते हैं. 'ब्रैंड्स', 'ब्रूकलिन नाइन नाइन', 'मनी हाइस्ट', 'द औफिस' जैसे कई सालों पुराने शोज आज भी यूथ की पहली पसंद हैं. न केवल यह अत्यधिक मनोरंजक हैं बल्कि बौलीवुड की दोहरी मानसिकता वाली फिल्मों से बेहद अलग भी हैं. ओटीटी पर केवल बौलीवुड या हौलीवुड पर दूसरे पैर को चढ़ा मोबाइल हाथ में ले शो देखते हुए आजकल हर कोई दिख जाता है. चाहे आंखें पथरा जाएं, चाहे नींद पूरी न हो लेकिन शो एक ही दिन में पूरा हो जाना चाहिए. यही भावना है जो व्यक्ति को इन प्लेटफौर्म्स से जोड़े रखती है. अब हर तरफ नए शो की चर्चा चल रही हो तो उस में भाग लेने का आनंद ही कुछ और है. ऐसे में बौलीवुड फिल्मों की चर्चा भर के लिए हर कोई सिनेमाघर का रास्ता नहीं ताकता. इसलिए यह एक बड़ा कारण है कि ओटीटी प्लेटफौर्म्स बौलीवुड को पछाड़ने की पूरी क्षमता रखते हैं.

ऐप डिस्ट्रिब्यूशन प्लेटफौर्म मोमैजिक के हालिया सर्वे के अनुसार, 72 फीसदी दर्शकों का कहना है कि कोरोना के चलते सिनेमाघरों में फिल्म देखने से बेहतर वे अपने पैसे एक बड़े एलईडी टीवी और होम थिएटर पर खर्च करना अधिक पसंद करेंगे और घर पर ही नई फिल्मों का आनंद लेंगे.

## ओटीटी प्लेटफौर्म की शुरुआत

पहला भारतीय ओटीटी प्लेटफौर्म बिगफ्लैक्स था जिसे 2008 में रिलायंस

हिंदी वैब सीरीज के स्तर को बढ़ाने वाली सीरीज 'सैक्रेड गेम्स' अपने दूसरे सीजन में वह कमाल नहीं दिखा पाई जो पहले सीजन में दिखाया था.

एंटरटेनमैंट ने लौंच किया था. 2010 में डिगिविव ने भारत की पहली मोबाइल ओटीटी ऐप नैक्सजीटीवी लौंच की थी जिस पर आईपीएल लाइव देखा जा सकता था. ओटीटी प्लेटफौर्म्स को भारत में डिट्टो टीवी और सोनी लाइव के लौंच होने के बाद सफलता मिलनी शुरू हुई.

नैटफ्लिक्स भारत में साल 2016 में आया जिसे वैश्विक शोज के कारण यूथ के बीच अपार लोकप्रियता मिली. इस के बाद से अनेक ओटीटी प्लेटफौर्म्स लौंच हुए जिन में से कुछ शुरुआत में फ्री थे, लेकिन जल्द ही वे सब्सक्रिप्शन पर उपलब्ध होने लगे. अमेजोन प्राइम (अमेजोन), नैटफ्लिक्स (नैटफ्लिक्स आईएनसी), विऊ (एच के टैलीविजन एंटरटेनमैंट), मुबी (मुबी आईएनसी), हौटस्टार+डिज्नी (स्टार इंडिया, द वाल्ट डिज्नी कंपनी इंडिया), औल्ट बालाजी (बालाजी टैलीफिल्म्स), इरोस नाओ (इरोस इंटरनैशनल), एमएक्स प्लेयर (टाइम्स इंटरनैट), सोनी लाइव (सोनी पिक्चर्स नैटवर्क्स इंडिया), वूट (वाइकौम 18), द वायरल फीवर, जी5 (जी एंटरटेनमैंट एंटरप्राइसेस), उल्लू ऐप आदि कुछ ओटीटी प्लेटफौर्म्स हैं जो भारत में लोकप्रिय हैं.

इन में कुछ क्षेत्रीय ओटीटी प्लेटफौर्म्स हैं जिन में होईचोई (श्री वेंकटेश्वर फिल्म्स) पहला भारतीय रीजनल ओटीटी प्लेटफौर्म था. होईचोई पर 200 से अधिक बंगाली फिल्में, शोज व कुछ ओरिजिनल कंटैंट भी हैं. इस प्लेटफौर्म पर हिंदी और इंग्लिश का डब कंटैंट भी है व इस की पहुंच केवल भारत तक ही सीमित नहीं है बल्कि बंगलादेश और यूनाइटेड अरब अमीरात में भी इस के दर्शक हैं. इस के अलावा साउथ इंडियन भाषाओं के प्लेटफौर्म्स सन एनएक्सटी (सन टीवी नैटवर्क्स) और अहा (अरहा मीडिया एंड ब्रौडकास्ट प्राइवेट लिमिटेड) भी दर्शकों के लिए उपलब्ध हैं.

शुरुआत में फिल्मकारों ने ओटीटी प्लेटफौर्म्स को महत्त्व नहीं दिया. तब नए लेखक, निर्देशक और कलाकारों ने ओटीटी प्लेटफौर्म्स के लिए लघु फिल्में और वैब सीरीज बनानी शुरू कीं. ओटीटी प्लेटफौर्म पर प्रसारित होने वाली लघु फिल्मों या वैब सीरीज को केंद्रीय फिल्म

## हिंदी फिल्मों के लिए नया ओटीटी प्लेटफौर्म

भारतीय फिल्मों को समर्पित एक नया ओटीटी प्लेटफौर्म 'सिनेमाप्रेन्योर' तेजी से उभर रहा है. इस ओटीटी प्लेटफौर्म का ग्राहक बनने की जरूरत नहीं है, बल्कि हर फिल्म देखने के लिए एक अलग राशि दे कर देख सकते हैं. इस पर फीचर फिल्मों के साथ ही डौक्यूमैंट्री व लघु फिल्में भी उपलब्ध हैं. यह ओटीटी प्लेटफौर्म दिल्ली निवासी गौरव रतुरी व रुपिंदर कौर ले कर आए हैं.

फिल्म बाजार में यदि हर साल 300 फिल्में बनती हैं तो उन में से 15 को थिएटर रिलीज मिलती है, 10 नैटफ्लिक्स पर जाती हैं, 5 अमेजोन पर जाती हैं. तो, बाकियों का क्या होता है? अनेक छोटे बजट की फिल्में व डौक्यूमैंट्री कहीं कोने में धूल खाती रह जाती हैं. इन छोटी बजट की फिल्मों को विदेशों में तो फिल्म फैस्टिवल्स में जगह मिलती है परंतु भारत में इन की कोई सराहना नहीं होती. उदाहरण के तौर पर, अनिरबान दत्ता की फिल्म 'जहनबी' को रोमानिया, यूके व हंगरी फिल्म फैस्टिवल्स में जगह मिली. इसे अमेजोन प्राइम यूके, कनाडा व यूएस में भी दिखाया गया लेकिन, अमेजोन इंडिया में इसे जगह नहीं मिली.

ओटीटी प्लेटफौर्म 'सिनेमाप्रेन्योर' को लाने के पीछे मकसद यह है कि आर्टिस्टिक और छोटे बजट की फिल्मों को भी भारतीयों तक पहुंचाया जा सके.

प्रमाणन बोर्ड से सैंसर प्रमाणपत्र लेने की भी जरूरत नहीं होती है. इस वजह से 90 प्रतिशत वैब सीरीज अश्लील दृश्यों व खूनखराबे से परिपूर्ण ही प्रसारित हुईं.

इस नई संस्कृति का फायदा उठाने में यशराज फिल्म्स भी पीछे नहीं रहा. यशराज फिल्म्स ने 'बैंड बाजा बरात' और 'सैक्स चैट विद पप्पू एंड पापा' जैसी युवाओं को आकर्षित करने वाली वैब सीरीज बनाईं, तो वहीं एकता कपूर ने 'ट्रिपलएक्स', 'गंदी बात' व 'रागिनी एमएमएस' जैसी सैक्स से भरपूर इरोटिक वैब सीरीज परोसीं. इस के बाद इस तरह की वैब सीरीज का ओटीटी प्लेटफौर्म्स पर बोलबाला हो गया. ऐसे में शाहरुख खान भी पीछे नहीं रहे. शाहरुख खान की कंपनी रैड चिली ने नैटफ्लिक्स के लिए 'बार्ड औफ ब्लड' और जौंबी पर आधारित हौरर रोमांचक 'बेताल' जैसी वैब सीरीज का निर्माण किया.

**सैक्स से सराबोर वैब सीरीज की सफलता से प्रेरित हो कर सैक्स को भुनाने के लिए ओटीटी प्लेटफौर्म पर 'उल्लू' की शुरुआत हो गई. 'उल्लू' ने तो सारी मर्यादाएं लांघ डालीं. अब तो लोग कहते हैं कि पौर्न फिल्म देखने के बजाय 'उल्लू' पर जा कर वैब सीरीज देखें. शुरुआत में 'उल्लू' ने प्रतिमाह 16 रुपए का शुल्क रखा था पर इसे इतने दर्शक मिले कि अब उस का शुल्क 99 रुपए हो गया है.**

### यों हुए हौसले बुलंद

अनुराग कश्यप व विक्रमादित्य मोटवाणे ने विक्रम चंद्र के 2006 के चर्चित उपन्यास 'सैक्रेड गेम्स' पर इसी नाम की वैब सीरीज बनाई. 'सैक्रेड गेम्स' के पहले सीजन में सैफ अली खान, नवाजुद्दीन सिद्दीकी, कुबरा सैत, पंकज त्रिपाठी, राधिका आप्टे जैसे दिग्गज

कलाकारों ने अभिनय किया. इस का पहला सीजन 5 जुलाई, 2018 को नैटफ्लिक्स पर प्रसारित हुआ. सैक्स, हिंसा सहित हर तरह के मसाले से भरपूर इस वैब सीरीज को जबरदस्त शोहरत मिली. इस के बाद अमेजोन, हौटस्टार, एमएक्स प्लेयर व जी 5 जैसे ओटीटी प्लेटफौर्म के अंदर नया जोश पैदा हुआ.

राधिका आप्टे को जो नाम बड़े परदे पर नहीं मिल सका वह ओटीटी प्लेटफौर्म पर वैब सीरीज से मिला.

इन सभी ने लगातार तमाम वैब सीरीज प्रसारित करनी शुरू कीं. हर ओटीटी प्लेटफौर्म पर कुछ वैब सीरीज सफल हुईं, पर ज्यादातर वैब सीरीज ने सैक्स व हिंसा को ही परोसा.

## नैपोटिज्म की मार

बौलीवुड में व्याप्त नैपोटिज्म के चलते बहुत से कलाकरों के लिए बौलीवुड की राह जरूरत से ज्यादा लंबी हो गई है. उन कलाकारों, जिन्हें बौलीवुड में काम नहीं मिलता, छोटे परदे का सहारा लेने को मजबूर थे, को ओटीटी प्लेटफौर्म्स ने एक नई मंजिल दी है. शमा सिकंदर, वत्सल सेठ, राधिका आप्टे कुछ ऐसे ही कलाकार हैं जिन्होंने ओटीटी की राह पकड़ी. और इस बात में तो कोई दोराय नहीं कि जितनी सफलता राधिका आप्टे को अपनी फिल्मों से नहीं मिली थी उस से कहीं ज्यादा शोहरत नैटफ्लिक्स से मिली है.

अब सुशांत सिंह राजपूत की मृत्यु के बाद बौलीवुड की गलियों में एक बार फिर नैपोटिज्म के नारे गूंजने लगे. सोशल मीडिया पर भी हर तरफ नैपोटिज्म और नैपोटिज्म के लिए सितारों को बुरी तरह खदेड़ा जा रहा है, चाहे फिर वे आलिया भट्ट हों या वरुण धवन.

बौलीवुड के अंदरूनी सूत्रों की मानें तो कुछ फिल्मकारों ने न चाहते हुए भी अपनी फिल्में ओटीटी प्लेटफौर्म्स को बेच दीं. वास्तव में सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद कंगना रनौत, शेखर सुमन जैसे कई लोगों ने करण जौहर व सोनाक्षी सिन्हा सहित कुछ निर्माताओं व कलाकारों की फिल्मों को बैन करने का ऐलान कर दिया. ऐसे में कुछ लोगों ने अपनी फिल्में ओटीटी प्लेटफौर्म को देने में ही भलाई समझी.

## फिर संकट में बौलीवुड

80 के दशक में वीडियो तकनीक के प्रादुर्भाव के बाद हर घर में किराए के वीडियो कैसेट मंगा कर टीवी पर फिल्में देखने का सिलसिला शुरू हुआ था. परिणामस्वरूप, लोगों ने फिल्म देखने के लिए सिनेमाघरों में जाना बंद कर दिया था. तब कई निर्माताओं ने ऐलान कर दिया था कि अब देश के सभी सिनेमाघरों के अंत का समय आ गया. तब कहा गया था कि देश में 'सिनेमाघर जा कर फिल्में देखने की संस्कृति' का खात्मा हो जाएगा.

इस वीडियो संस्कृति के चलते कुछ समय के लिए सिनेमा का नुकसान हुआ था. देखते ही देखते हजारों घटिया वीडियो फिल्में बन कर बाजार में आ गई थीं. आखिरकार, एक दिन दर्शकों को एहसास हुआ कि वे तो चंद रुपयों को बचाने के चक्कर में पायरेटेड सिनेमा और घटिया वीडियो फिल्मों को बढ़ावा दे रहे हैं. तो वहीं फिल्मकारों ने अपनी फिल्मों में बदलाव करते हुए भव्यता को महत्त्व दिया. अब इन फिल्मों को वीडियो कैसेट के माध्यम से टीवी पर देखने का मजा किरकिरा हो गया. परिणामस्वरूप, लोगों ने फिल्म देखने के लिए फिर सिनेमाघर जाना शुरू कर दिया.

भारत में फिल्म 'लगान' से ही स्टूडियो सिस्टम की शुरुआत हुई थी. यह उस समय बौलीवुड की पारंपरिक फिल्मों के लिए खतरा था.

## टीवी भी खतरा बना था

अक्तूबर 1992 में जी टीवी जैसे सैटेलाइट चैनल की शुरुआत के साथ ही मनोरंजन क्षेत्र में बड़ा धमाका हुआ था. तब भी लोगों ने घर में रहते हुए टीवी से मुफ्त मनोरंजन पाना शुरू कर दिया था और सिनेमाघर के भीतर जाना बंद कर दिया था. उस वक्त चर्चा गरम हो गई थी कि अब सिनेमा का अस्तित्व खत्म हो गया. इसी चर्चा के चलते इंडस्ट्री 2 भागों में विभाजित हो गई थी. जो लोग टीवी सीरियल के निर्माण, निर्देशन व लेखन के अलावा टीवी सीरियलों में अभिनय कर रहे थे, उन के साथ फिल्मकारों ने अछूत जैसा व्यवहार करना शुरू कर दिया था. इसी के साथ फिल्मकारों ने अपनी फिल्म के कथानक आदि पर खास ध्यान दिया. मगर टीवी के लिए कार्य करने वालों को अपने ऊपर से अछूत का ठप्पा हटाने में 15 वर्ष से अधिक का समय लग गया. अब टीवी कलाकार फिल्मों में अभिनय कर रहे हैं. टीवी सीरियल के निर्मातानिर्देशक फिल्में भी बना रहे हैं, जिस के चलते टीवी चैनलों और फिल्मों दोनों का अपना अस्तित्व बरकरार रहा. दोनों जगह मनोरंजन का अपना अलग मजा है.

## स्टूडियो सिस्टम का बोलबाला

2001 में फिल्म 'लगान' के साथ स्टूडियो सिस्टम आया. 'स्टूडियो सिस्टम' के नाम पर कई भारतीय कौर्पोरेट कंपनियों और कुछ विदेशी

कंपनियों यानी कि व्यवसायियों ने भारतीय सिनेमा पर धावा बोला था. विदेशी धन की ताकत पर इन स्टूडियो ने 10 रुपए वाले कलाकार को हजार रुपए दे कर अपने स्टूडियो के साथ जोड़ फिल्में बनानी शुरू कीं और अपनी तरफ से भारतीय सिनेमा व सिनेमाघरों को तहसनहस करने के साथसाथ भारतीय आम जनमानस की गाढ़ी कमाई को बटोरने की असफल कोशिश की थी. आखिरकार, 90 प्रतिशत स्टूडियो कब आए और कब गए, पता ही न चला. हम यहां हर स्टूडियो के इतिहास को दोहराना नहीं चाहते, मगर कुछ समय के लिए लगा था कि बौलीवुड का खात्मा हो जाएगा. मगर फिर मल्टीप्लैक्स का जाल बिछना शुरू हो गया. देखते ही देखते सिनेमाघर फिर भरने लगे.

हमें याद रखना होगा कि 'गुलाबो सिताबो', 'धूमकेतु' फिल्मों के बजाय 'पाताललोक', 'पंचायत' जैसी वैब सीरीज ज्यादा चर्चा में रहीं. जो पैसा इन फिल्मों के सिनेमाघर में प्रसार से कमाया जा सकता था उतना ओटीटी से नहीं कमाया जा सका.

## ऐसे संभली ओटीटी

'सैक्रेड गेम्स' के पहले सीजन को मिली जबरदस्त सफलता के बाद नैटफ्लिक्स ने इस का दूसरा सीजन बनाया, जो 15 अगस्त, 2019 को प्रसारित हुआ. मगर सैक्रेड गेम्स का दूसरा सीजन बुरी तरह से असफल हो गया. परिणामस्वरूप, हर ओटीटी प्लेटफौर्म के अंदर गहन मंथन की शुरुआत हुई. वहीं, हौटस्टार और डिज्नी एक हो गया. अब जी 5 जैसे भारतीय ओटीटी प्लेटफौर्म के साथ अमेजोन, नैटफ्लिक्स और डिजनी हौटस्टार के बीच प्रतिस्पर्धा शुरू हुई. इसी बीच, इन के अमेरिका में बसे मूल मालिकों ने लंबीचौड़ी रकम इन्वैस्ट कर दी. परिणामस्वरूप, उन्होंने बड़े बजट की भव्य वैब सीरीज बनवानी शुरू कीं, जिस के चलते 17 मार्च, 2020 को हौटस्टार+डिज्नी पर बेहतरीन वैब सीरीज 'स्पैशल ओप्स' प्रसारित हुई.

नीरज पांडे निर्मित इस वैब सीरीज को काफी पसंद किया गया. 3 अप्रैल, 2020 को अमेजोन पर हास्य वैब सीरीज 'पंचायत' ने सफलता दर्ज कराई. दीपक कुमार मिश्रा निर्देशित इस वैब सीरीज को काफी पसंद किया गया. इस का दूसरा सीजन भी बनवाया जा रहा है. इस के बाद अमेजोन पर ही 15 मई, 2020 को अपराध व रोमांचप्रधान वैब सीरीज 'पाताललोक' ने सफलता दर्ज कराई. तो वहीं 2020 में जी 5 पर 'कोड एम' को पसंद किया गया, जबकि हौटस्टार पर 'क्रिमिनल जस्टिस' के साथ 'आर्या' भी काफी पसंद की गईं. वहीं लगभग हर ओटीटी प्लेटफौर्म पर घटिया वैब सीरीज व कुछ फिल्में भी प्रसारित हुईं.

## क्या 5 लाख दर्शक मिलेंगे

ओटीटी प्लेटफौर्म्स के लिए खासतौर पर बनवाई गई कुछ वैब सीरीज की सफलता के बाद हर ओटीटी प्लेटफौर्म की मूल मालिकाना कंपनी को भारत में बड़ा बाजार नजर आने लगा. परिणामस्वरूप, अप्रैल 2020 से मार्च 2021 के बीच इन ओटीटी प्लेटफौर्म्स ने भारत में 5 लाख नए ग्राहक बनाने की चुनौती रखते हुए इन की मूल कंपनियों ने लंबीचौड़ी रकम इन्वैस्ट कर दी. नैटफ्लिक्स पर मौलिक भारतीय कंटैंट को खरीदने के लिए इस की मूल कंपनी ने 3,000 करोड़ रुपए इन्वैस्ट किए हैं

जबकि अमेजोन के सीईओ जेफ बेजोस भी कह चुके हैं कि भारतीय कंटैंट के लिए दोगुनी राशि इन्वैस्ट की है. इस वर्ष अप्रैल माह में डिज्नी हौटस्टार में 1,113 करोड़ रुपए इन्वैस्ट किए गए हैं. इस से पहले मार्च माह में स्टार इंडिया और स्टार अमेरिका ने एक हजार 66 करोड़ रुपए इन्वैस्ट किए थे. तो क्या इस रकम को जल्द से जल्द फिल्म खरीद कर खत्म करने की आपाधापी तो नहीं है.

इस के अलावा सभी ओटीटी प्लेटफौर्म्स की पैतृक कंपनियों ने उन पर 5 लाख नए ग्राहक बनाने की चुनौती भी सामने रखी है, जोकि असंभव है. इतना ही नहीं, लौकडाउन में यदि ग्राहक मिल भी गए तो सिनेमाघर शुरू होते ही ये ग्राहक ओटीटी से दूरी बना लेंगे, यदि उन्हें अच्छा कंटैंट नहीं दिया गया. अफसोस है कि दर्शक बढ़ाने के लिए हर ओटीटी प्लेटफौर्म कंटैंट की गुणवत्ता पर कम ध्यान दे रहा है.

नवाजुद्दीन सिद्दीकी की फिल्म 'घूमकेतु' ओटीटी प्लेटफौर्म पर रिलीज तो हुई परंतु वे उस से नाखुश हैं. उन्हें सिनेमा पर खतरा मंडराता नजर आ रहा है.

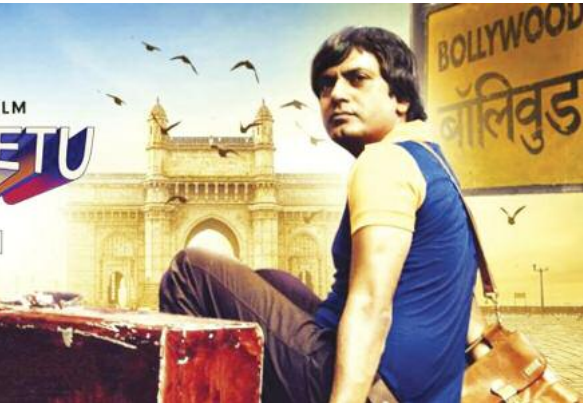


## सिनेमा एक उत्सव

लोगों के लिए सिनेमा महज मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि सिनेमा देखना एक उत्सव है. लोग अपने दोस्तों या परिवार के साथ सिनेमाघर में फिल्म देख कर जिस आनंद की अनुभूति करते हैं, उस आनंद की अनुभूति वे अपने घरों में बंद हो कर टीवी, मोबाइल, लैपटौप या कंप्यूटर पर ओटीटी प्लेटफौर्म की फिल्में देखते हुए कदापि नहीं पा सकते.

इस के अलावा दर्शक सिनेमाघरों में फिल्में देखते हुए उस में इस कदर मगन हो जाते हैं कि वे दूसरी दुनिया में पहुंच जाते हैं, फिल्म के किरदारों के साथ जुड़ कर वे उसी की तरह के सपने देखने लगते हैं, कुछ घंटों के लिए वे अपना दुखदर्द, तनाव सबकुछ भूल जाते हैं. यह तो बिलकुल नहीं नकारा जा सकता कि गर्लफ्रैंड के साथ जो मजा मूवीडेट का है, वह और कहीं नहीं.

यहां पर नवाजुद्दीन सिद्दीकी के विचार बहुत माने रखते हैं. ओटीटी प्लेटफौर्म पर नवाजद्दीन सिद्दीकी की 'घूमकेतु' के अलावा 'रात अकेली है' जैसी 2 फिल्में रिलीज हो चुकी हैं, मगर खुद नवाजुद्दीन सिद्दीकी खुश नहीं हैं. वे कहते हैं, "मैं ओटीटी प्लेटफौर्म पर फिल्म के रिलीज को सही नहीं मानता. मेरी राय में ओटीटी पर फिल्म के रिलीज होने से कलाकार की अभिनय क्षमता को नुकसान होता है और अमूमन असफल फिल्म ही ओटीटी पर आती हैं. ओटीटी प्लेटफौर्म से कलाकार की

क्षमता की चर्चा नहीं होती है और न ही उसे सही समय पर यह पता चलता है कि उस ने फिल्म के किरदार को कितना सही ढंग से निभाया है. दर्शकों की प्रतिक्रिया भी सही ढंग से नहीं मिल पाती है."

इतना ही नहीं, अभिनेता पंकज त्रिपाठी के इस कथन से भी मुंह नहीं मोड़ा जा सकता कि "दर्शकों का जो अनुभव थिएटर में होता है, वह तो ओटीटी

हर ओर फिल्म 'गुलाबो सिताबो' की चर्चा थी लेकिन बुरी तरह से असफल होने के कारण यह फटा पोस्टर निकला, जीरो माफिक रही.

प्लेटफौर्म पर नहीं होगा. बड़ी स्क्रीन पर फिल्म देखने का जो मजा होता है, वह टीवी की 20 से 25 इंच की स्क्रीन पर या मोबाइल पर देखते समय नहीं मिल सकता. मोबाइल, टीवी तथा सिनेमाघर के अंदर फिल्म देखने का अनुभव एकजैसा कभी नहीं हो सकता."

इसी के साथ एक तबका प्रचारित करने लगा कि अब बौलीवुड पूरी तरह से ओटीटी प्लेटफौर्म्स पर ही निर्भर रहेगा. ओटीटी प्लेटफौर्म्स ने यह भी प्रचारित किया कि अब सिनेमाघरों में लोग फिल्में देखने नहीं जाएंगे. इस तरह के प्रचार के साथ ओटीटी प्लेटफौर्म्स अपनी मूल कंपनियों से मिले धन का उपयोग फिल्मों को खरीदने में कर रहे हैं.

अब तक ओटीटी प्लेटफौर्म्स पर 'घूमकेतु', 'शकुंतला देवी' और 'गुलाबो सिताबो' जैसी जो फिल्में प्रदर्शित हुई हैं, उन का हश्र कुछ अच्छा नहीं रहा. सुशांत सिंह राजपूत की फिल्म 'दिल बेचारा' को बिना ग्राहक बने भी लोग देख सकते थे, फिर भी इसे अपेक्षित दर्शक नहीं मिले.

'गुलाबो सिताबो' देख कर यह एहसास हो गया कि यह फिल्म बौक्सऔफिस पर औंधेमुंह गिर जाती. 'घूमकेतु' को पिछले 5 वर्षों से कोई खरीद नहीं रहा था. जी 5 पर यह आई, इसे कितने दर्शक मिले, यह शोध का विषय हो सकता है. इस के बाद अनुराग कश्यप की 'चोक्ड: पैसा बोलता है' और उर्वशी रौतेला की 'वर्जिन भानुप्रिया' का भी ओटीटी प्लेटफौर्म पर बुरा हश्र हो चुका है.

अभी ओटीटी प्लेटफौर्म पर अक्षय कुमार की 'लक्ष्मी बौंब,' अजय देवगन की 'भुज: द प्राइड औफ इंडिया,' अभिषेक बच्चन की 'लूडो,' संजय दत्त की 'टोरबाज,' कोंकणा सेन शर्मा की 'डोली किट्टी और वो चमकते सितारे,' विक्रांत मैसे और यामी गौतम की 'गिन्नी वैड्स सन्नी' जैसी फिल्में प्रसारित होने वाली हैं. ओटीटी प्लेटफौर्म्स पर इन फिल्मों का भविष्य क्या होगा, यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा.

## तूफान के पहले की खामोशी

कलाकारों के कथन में यह बात छिपी है कि सिनेमाघरों को नजरंदाज कर ओटीटी प्लेटफौर्म्स पर फिल्मों के प्रदर्शन से कलाकार खुश नहीं हैं.

## सिनेमा जगत छुआछूत के दौर में तो नहीं लौट रहा?

सिनेमा खुलने के बाद बौलीवुड में एक बार फिर 90 के दशक यानी 1992-2000 के बीच का इतिहास दोहराया जा सकता है. उस वक्त जिस तरह से टीवी को फिल्म वालों ने 'अछूत' मान लिया था, उसी तरह सिनेमाघर खुलने के बाद एक बार फिर बौलीवुड में 2 भाग हो जाएंगे और ओटीटी प्लेटफौर्म के लिए वैब सीरीज व फिल्मों का निर्माण, निर्देशन, लेखन व अभिनय करने वालों को मेनस्ट्रीम सिनेमा से अलग कर अछूत जैसा व्यवहार किया जा सकता है.

टीवी ऐक्टर्स और बौलीवुड स्टार्स को आज भी कई स्तरों पर एकदूसरे से अलग माना जाता है. जो रुतबा, शोहरत, नाम और एक्सपोजर बौलीवुड स्टार्स को मिलता है, वह टीवी स्टार्स को नहीं मिलता. यही कारण है कि टीवी स्टार्स बौलीवुड की ओर बढ़ना चाहते हैं. ओटीटी एक ऐसा प्लेटफौर्म बन कर उभरा जिस ने टीवी और बौलीवुड के ऐक्टर्स को एकसमान स्तर देने की कोशिश की. देखना, वाकई दिलचस्प होगा कि क्या यह स्तर कायम रह पाता है.

'गुलाबो सिताबो' में अमिताभ बच्चन थे, इसलिए कलाकारों ने मुखर हो कर अपनी बात कहने में संकोच दिखाया. मगर सच यही है कि फिल्म के सब से पहले ओटीटी प्लेटफौर्म पर आने से हर कलाकार के स्टारडम पर गहरा असर होने वाला है. उन का स्टारडम बढ़ने के बजाय घटने वाला है.

कटु सत्य यही है कि ओटीटी प्लेटफौर्म के चलते धीरेधीरे कलाकार की हालत 'घर की मुरगी दाल बराबर' जैसी हो जाएगी, जिस का असर उन के द्वारा किए जाने वाले विज्ञापन की राशि पर भी पड़ना लाजिमी है. यही वजह है कि कलाकारों के बीच तूफान के आने से पहले की खामोशी दिखाई दे रही है.

वैसे, कुछ कलाकारों ने दबी आवाज में कहा है कि उन्होंने फिल्म के लिए कई तरह की तैयारियां की थीं. मेकअप में लंबा समय खर्च किया था, मेहनत से फिल्म बनाई थी कि दर्शक सिनेमाघर में बड़े परदे पर उन को देखेंगे और अब जब यही फिल्म ओटीटी प्लेटफौर्म पर आने जा रही है, तो यह उन की मेहनत के साथ पूरा अन्याय है. मगर कुछ नए कलाकार, जोकि निर्मातानिर्देशक के रहमोकरम पर हैं, कह रहे हैं कि एक फिल्म में अभिनय करने के बाद कलाकार के वश में नहीं रहता कि वह तय करे कि उन की फिल्म कब, कैसे और कहां रिलीज होगी.

कड़वा सत्य यह भी है कि ओटीटी प्लेटफौर्म पर फिल्म के आने से कलाकार का आत्मविश्वास भी हिलेगा और उस का बाजार भी. इतना ही नहीं, ओटीटी प्लेटफौर्म पर फिल्म के असफल होने का सारा ठीकरा कलाकार के मत्थे मारा जाएगा. इस तरह, सब से अधिक नुकसान कलाकार को होना तय है. ऐसे में हर कलाकार को इस मसले पर गंभीरता से विचार कर अपनी फिल्म के निर्माताओं से बात करनी होगी. हर कलाकार को याद रखना होगा कि ओटीटी प्लेटफौर्म पर स्टार कलाकार और नए कलाकार को एक ही नजर से देखा जाता है. ●

श्रीमतीजी
सामान
हाय! मैं कब से मॉल खुलने का इंतज़ार कर रही थी. इतने दिनों से हम ने नए कपड़े नहीं खरीदे.
यह मुन्ना के लिए.
यह मुन्नी के और यह आपकी बहन के लिए. दीदी अगले सप्ताह अपने घर आ रही हैं.
हमारे परदे भी पुराने हो गए हैं. सोफे की गद्दियां भी बदलने वाली हैं.
वाह! यह फूलदान कितना सुंदर है. इसे तो मैं किसी भी क़ीमत पर नहीं छोड़ने वाली.

बेचारे बच्चों ने कब से अपने मनपसंद नूडल्स, पास्ता, चिप्स, केक बिस्कुट और चॉकलेट नहीं खाए!
घर का राशन भी खत्म होने को है.
किराना
सब के लिए ओढ़ने की चादरें भी तो लेनी हैं.
कुछ और लेना है क्या?
भुगतान
नहीं, सर आप के क्रेडिट कार्ड में इतना बैलेंस ही कहां बचा है.
हैं!!

# सुशांत की मौत से भी अशांत बौलीवुड

• नसीम अंसारी

सुशांत सिंह राजपूत की आत्महत्या ने बहुत से बड़े सितारों की छवि को खराब किया है और खबरों को मनमरजी मोड़ देने वाले टीवी न्यूज चैनलों ने नारेबाजी की ताकि बड़े सितारों को कटघरों में खड़ा कर सकें. ये सितारे फुल स्क्रीन चालू होने के बाद भी अब इस कालिख को नहीं मिटा पाएंगे.

'शुद्ध देसी रोमांस', 'पीके', 'डिटेक्टिव ब्योमकेश बक्शी', 'छिछोरे', 'केदारनाथ' और 'एमएस धौनी : द अनटोल्ड स्टोरी' जैसी फिल्मों में दमदार भूमिका निभा चुके ख्यात अदाकार सुशांत सिंह राजपूत 14 जून, 2020 की दोपहर मुंबई में बांद्रा स्थित अपने अपार्टमैंट में मृत पाए गए. अपने अभिनय के दम पर लोगों के दिलों में खास मुकाम बनाने वाले सुशांत बौलीवुड की जगमगाती दुनिया के पीछे के घुप्प अंधेरों में गुम हो गए. 2 माह से

अधिक समय गुजर चुका है, लेकिन अभी तक यह साफ नहीं हो पाया है कि यह अंधेरा उन्होंने खुद चुना या इस अंधेरे में उन्हें धकेला गया.

ओटीटी के हमले के दौरान सुशांत सिंह राजपूत की आत्महत्या ने बहुत से बड़े सितारों की छवि को खराब किया है और खबरों को मनमरजी मोड़ देने वाले टीवी न्यूज चैनलों ने जम कर नारेबाजी की ताकि बड़े सितारों को कटघरों में खड़ा कर सकें. ये सितारे फुल स्क्रीन चालू होने के बाद भी अब इस कालिख को नहीं मिटा पाएंगे. जब बड़े सितारे ही आदर्श न हों तो छोटों को क्यों नहीं अपनाया जाए.

सुशांत सिंह राजपूत के कैरियर की बात करें तो बैचलर औफ इंजीनियरिंग डिग्रीधारी और भौतिकी के राष्ट्रीय ओलिंपियाड के विजेता सुशांत ने अपने अभिनय कैरियर की शुरुआत टीवी सीरियल 'किस देश में है मेरा दिल' से की थी. इस के बाद वे टीवी के मशहूर धारावाहिक 'पवित्र रिश्ता' में मुख्य भूमिका में दिखे. 2013 में फिल्म 'काय पो छे' से अपने फिल्मी सफर की शुरुआत करने वाले सुशांत ने एक के बाद एक कई सफल फिल्में दीं और लोगों के दिलों में अपना खास मुकाम बनाया.

सुशांत का फिल्म इंडस्ट्री में कोई माईबाप नहीं था. वे इंडस्ट्री से बाहर के व्यक्ति थे. पटना के एक मध्यवर्गीय परिवार से मायानगरी मुंबई आए थे. अपनी मेहनत और लगन के दम पर उन्होंने अपनी खास जगह बनाई थी. अभिनय के अलावा वे विभिन्न कार्यक्रमों, जैसे सुशांत4एजुकेशन में भी सक्रिय रूप से शामिल थे. इस के अलावा वे कुछ प्रौद्योगिकी कंपनियों के संस्थापक भी थे. भविष्य के लिए उन की कई बड़ी योजनाएं थीं.

अपनी मौत से एक दिन पहले ही उन्होंने प्रोड्यूसर रमेश तौरानी और डायरैक्टर निखिल आडवाणी से कौन्फ्रैंस कौल की थी. तीनों एक संभावित स्क्रिप्ट पर बात कर रहे थे और सुशांत को उन का आइडिया काफी पसंद आया था. लेकिन उन की असमय मौत ने सारी योजनाओं और भविष्य के सुनहरे सपनों पर काली स्याही लीप दी. 34 साल के अभिनेता की मौत के मामले में मुंबई पुलिस ने कहा कि उन्होंने अपने कमरे में पंखे से लटक कर सुसाइड कर लिया.

गौरतलब है कि सुशांत की मौत से मात्र 5 दिनों पहले ही उन की मैनेजर रह चुकीं दिशा साल्यान की भी संदेहास्पद परिस्थितियों में मौत हुई थी. उन की मौत को भी पहले मुंबई पुलिस ने आत्महत्या

दिशा साल्यान की मौत की गुत्थी भी सुलझनी बाकी है.

और बाद में ऐक्सिडैंट करार दिया. 8 जून की रात दिशा अपने दोस्त के 14वीं मंजिल स्थित अपार्टमैंट से नीचे गिर कर मर गईं. कहा गया कि वे उस अपार्टमैंट में अन्य दोस्तों के साथ पार्टी कर रही थीं

जब उन का पैर फिसला और वे 14वीं मंजिल से नीचे आ गिरीं. इस मामले को ऐक्सिडैंट बता कर मुंबई पुलिस ने अपनी तफ्तीश की इतिश्री कर ली.

दिशा की मौत के महज 5 दिनों बाद जब संदेहास्पद परिस्थितियों में सुशांत सिंह राजपूत की मौत हुई, तब भी मुंबई पुलिस इस को सुसाइड बता कर अपनी जिम्मेदारी से मुंह छिपाती रही. लेकिन, भला हो सुशांत सिंह के चाहने वालों का और विपक्षी पार्टी का जिन्होंने सवाल उठाए, होहल्ला मचाया, सरकार और मुंबई पुलिस को घेरा, सुशांत के परिवार पर दबाव बना कर एफआईआर दर्ज करवाई, तब जा कर मामला सीबीआई जांच के लिए गया और मनी लौड्रिंग एंगल से प्रवर्तन निदेशालय भी इस की जांच में जुटा.

कहना गलत न होगा कि सीबीआई और प्रवर्तन निदेशालय दोनों ही संस्थाएं केंद्र सरकार के अधीन काम करती हैं और दोनों की छवि कोई बहुत निष्पक्ष काम करने की नहीं है. दोनों ही संस्थाओं को केंद्र का हथियार माना जाता है. सुशांत केस सीबीआई को सौंपने के पीछे बड़ी वजह यह है कि इस में आदित्य ठाकरे का नाम उछला है और इस से महाराष्ट्र सरकार को घेरने का बढ़िया मौका भाजपा के हाथ लगा है. अब भले भाजपा मौके पर चौका लगाने को लालायित हो, लेकिन मुंबई पुलिस ने जिस तरह दिशा सल्यान और सुशांत सिंह राजपूत की मौत के मामले में लीपापोती करने की कोशिश की है, उस को देखते हुए मामले की जांच सीबीआई और प्रवर्तन निदेशालय को देना ठीक ही मालूम पड़ता है. कम से कम अब जांच होगी और मामला अगर सुसाइड का भी पाया गया तो वह कारण तो पता चलेगा कि मौत से चंद दिनों पहले कई बड़े प्रोजैक्ट साइन करने वाला, भविष्य की बढ़िया प्लानिंग करने वाला, पार्टियों में हंसता, खिलखिलाता, ऊर्जा और उम्मीदों से सराबोर दिखने वाला सुशांत अचानक फांसी के फंदे पर क्यों झूल गया.

## महाराष्ट्र सरकार में हड़कंप

सुशांत सिंह राजपूत की मौत का मामला सीबीआई के हाथ जाते ही मुंबई अशांत दिखने लगी है. खासतौर पर महाराष्ट्र सरकार में हड़कंप मचा है और शिवसेना के मुखपत्र 'सामना' के माध्यम से शिवसेना सांसद संजय राउत केंद्र सरकार पर आरोप लगा रहे हैं कि "सुशांत की मौत मामले से महाराष्ट्र के मंत्री और युवा नेता आदित्य ठाकरे के तार जोड़ने की साजिश की जा रही है." दरअसल, सोशल मीडिया पर भाजपा नेताओं के हवाले से जो बातें वायरल हो रही हैं, उन में दिशा साल्यान और सुशांत सिंह की मौत के पीछे उद्धव ठाकरे के बेटे और महाराष्ट्र सरकार में मंत्री आदित्य ठाकरे की संलिप्तता की बात कही जा रही है.

महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा नेता नारायण राणे ने बाकायदा प्रैस कौन्फ्रैंस कर के कहा है कि "दिशा साल्यान और सुशांत सिंह राजपूत ने आत्महत्या नहीं की, बल्कि उन की हत्याएं हुई हैं." उन्होंने कहा कि 8 तारीख को हुई पार्टी में दिशा साल्यान के साथ बलात्कार हुआ और फिर उन की हत्या कर दी गई. उन्हें यह जानकारी दिशा की पोस्टमौर्टम रिपोर्ट से पता चली है. रिपोर्ट में यह उल्लेख है कि दिशा के प्राइवेट पार्ट में चोट के निशान हैं. राणे का आरोप है कि उस रात पार्टी में आदित्य ठाकरे और

बदनाम अदाकार सूरज पंचोली के अलावा सुशांत की गर्लफ्रैंड रिया चक्रवर्ती का भाई शौविक चक्रवर्ती भी मौजूद था.

नारायण राणे ने सुशांत सिंह राजपूत मामले में पुलिस जांच पर भी सवाल उठाया है कि महाराष्ट्र सरकार क्या छिपाना चाहती है और किस को बचाने के लिए मुंबई पुलिस की छवि को बरबाद किया जा रहा है. जिस मुंबई पुलिस की तुलना स्कोटलैंड यार्ड से की जाती रही है, आज उस की यह दुर्गति सरकार की वजह से हो रही है. सरकार जिस तरह से सुशांत मामले की जांच करवा रही है उस से यह साफ लगता है कि किसी को बचाने का

सुशांत सिंह राजपूत की मौत से उठते सवालों से महाराष्ट्र सरकार के मुख्यमंत्री के बेटे आदित्य ठाकरे घिरते नजर आ रहे हैं.

प्रयास किया जा रहा है. राणे कहते हैं कि अभिनेता डिनो मोरिया के घर रोज मंत्री क्यों आते हैं और 3-3, 4-4 घंटे रुक कर क्या करते हैं? राणे का इशारा आदित्य ठाकरे की ओर है. उन का आरोप है कि 13 जुलाई को डिनो मोरिया के बंगले पर हुई पार्टी में भी कई लोग इकट्ठा हुए और बाद में वे सुशांत के घर गए. राणे कहते हैं कि सुशांत की हत्या 13 और 14 तारीख की रात को हुई, न कि उन्होंने 14 तारीख की सुबह आत्महत्या की.

सुशांत सिंह राजपूत की मौत की जांच अब सीबीआई के हाथ में है. प्रवर्तन निदेशालय ने रिया चक्रवर्ती पर भी शिकंजा कस लिया है. 2 राउंड्स में रिया से कई घंटे लंबी पूछताछ हो चुकी है और उस के भाई शौविक चक्रवर्ती से भी पूछताछ जारी है.

ईडी ने फिलहाल उन दोनों से उन की कमाई और प्रौपर्टी का रिकौर्ड मांगा है. सुशांत और दिशा से ताल्लुक रखने वाले लोगों की लंबी फेहरिस्त सीबीआई के पास है, जिन से आने वाले समय में पूछताछ होगी. इन लोगों में घर के नौकर, ड्राइवर, दोस्त, एम्बुलैंस वाले, डाक्टर्स और भी दूसरे लोग शामिल हैं. कोशिश होगी कि जांच की आंच आदित्य ठाकरे तक पहुंचे क्योंकि सीबीआई जांच करवाने के पीछे भाजपा का मुख्य मकसद ही यही है.

**सुशांत सिंह मौत मामले में भाजपा एक तीर से दो निशाने साधना चाहती है. एक तरफ वह महाराष्ट्र सरकार को घेर रही है तो दूसरी तरफ बिहार में होने वाले चुनाव में अपना वोटबैंक मजबूत कर रही है. सुशांत को ले कर बिहार इस वक्त काफी भावुक है. वह सच जानना चाहता है और सच तक पहुंचने का रास्ता भाजपा ने तैयार किया है. अब सच किस करवट बैठता है, यह अभी समय के गर्भ में है.**

सुशांत की कथित खुदकुशी को ले कर जांच काफी तेजी से आगे बढ़ रही है. एक तरफ पैसों के लेनदेन को ले कर प्रवर्तन निदेशालय सुशांत से जुड़े लोगों से पूछताछ कर रहा है तो वहीं दूसरी तरफ सीबीआई ने भी केस से जुड़े लोगों के

बयान दर्ज करना शुरू कर दिया है. हर दिन इस केस से जुड़ी नईनई बातें सामने आ रही हैं. इस बीच सुशांत की डैडबौडी ले जाने वाले एम्बुलैंस के अटैंडैंट ने भी चौंकाने वाला खुलासा किया है. उस ने कहा कि जब वह सुशांत सिंह राजपूत के कमरे में पहुंचा तो उस ने देखा कि बैड पर अभिनेता की डैडबौडी पड़ी हुई है. वह पीली पड़ चुकी थी. अटैंडैंट कहता है कि "उस ने पहले भी आत्महत्या करने वाले

भाजपा नेता नारायण राणे की पांचों उंगलियां महाराष्ट्र सरकार और ठाकरे परिवार की तरफ उठ रही हैं.

लोगों की डैडबौडीज देखी हैं लेकिन वे पीली नहीं पड़ी थीं."

इस के साथ ही अटैंडैंट ने खुलासा किया कि सुशांत के पैर पर निशान थे और दोनों पैर टखने के पास से मुड़े हुए थे, जैसे कि वो टूटे हुए हों. उस ने कहा, "सुशांत के मुंह से झाग निकलते हुए मैं ने नहीं देखा जो आमतौर पर आत्महत्या करने वाले लोगों में दिखता है." गले पर बने निशान पर भी उस ने सवाल उठाए, मगर साथ ही, यह भी कहा कि उस के ऊपर पुलिस का दबाव है, इसलिए वह इस मामले में ज्यादा बातें नहीं बता सकता.

**हमें मुंबई का ही शीना बोरा मर्डर केस नहीं भूलना चाहिए, जिस में रसूखदार हत्यारों ने 3 वर्षों तक एक मरी हुई लड़की को इंटरनैट पर जीवित रखा. 24 अप्रैल, 2012 से लापता शीना की गुमशुदगी की रिपोर्ट तक पुलिस ने दर्ज नहीं की. हत्यारों ने पुलिस को ऐसा अपनी उंगलियों पर नचाया कि जंगल में मिले कंकाल की फोरैंसिक जांच तक पुलिस ने नहीं करवाई. जब मामला सीबीआई को गया तब हत्यारे सलाखों के पीछे पहुंचे.**

हमें नोएडा का आरुषि-हेमराज मर्डर केस भी नहीं भूलना चाहिए जिस में रसूखदार हत्यारों ने पोस्टमौर्टम रिपोर्ट तक बदलवा दी थी. यह केस भी तब हल हुआ और असली अपराधी तब सलाखों के पीछे पहुंचे जब राज्य पुलिस से जांच छीन कर सीबीआई के हवाले की गई.

## दिशा और सुशांत की मिस्ट्री

दिशा साल्यान और सुशांत सिंह राजपूत के बीच हुए कुछ व्हाट्सऐप चैट्स सोशल मीडिया पर वायरल हुई हैं, जिन से पता चलता है कि दिशा सुशांत के लिए बेहतर औफर्स, जिन में फिल्में और बड़ी कंपनियों के विज्ञापन वगैरह शामिल होते थे, अरेंज करती थी. मुंबई फिल्म इंडस्ट्री में जहां खेमेबाजी और माफियावाद का बोलबाला है, वहां सुशांत के लिए अच्छेअच्छे औफर्स लाने वाली दिशा साल्यान की मौत उन की हत्या की आशंका को प्रबल करती है. शंका उस वक्त और पुख्ता होती है जब दिशा की मौत को ऐक्सिडैंट बता कर मुंबई पुलिस न सिर्फ उस की फाइल बंद कर देती है बल्कि वह फाइल अब थाने से गुम भी हो चुकी है. बिहार पुलिस ने जब मुंबई

पुलिस से दिशा केस की फाइल मांगी तो कहा गया कि फाइल खो गई है. ये तमाम बातें हत्या की ओर इशारा करती हैं वरना फाइल छिपाने का कोई कारण नहीं है. दरअसल, मुंबई पुलिस जानती है कि अगर दिशा केस की फाइल खुल गई तो सुशांत सिंह राजपूत की मौत का रहस्य भी सामने आ जाएगा. मुंबई पुलिस का फाइलें दबा कर बैठ जाना यह साबित करता है कि दोनों ही मौतों के पीछे बहुत बड़ी साजिश रची गई है और इस में बड़ी फिल्मी हस्तियों से ले कर राजनीति में बैठे कद्दावरों की संलिप्तता है.

क्या रिया चक्रवर्ती और उन के करीबियों के चेहरों से नकाब उठ पाएगा?

**राजकपूर के वक्त की हीरोइन, बौलीवुड को करीब से जाननेपहचानने और समझने वाली अनुभवी अभिनेत्री और एक टौक शो की होस्ट सिमी ग्रेवाल ने सुशांत की आत्महत्या की खबर आने के बाद इस को हत्या करार दे कर तुरंत दिशा और सुशांत दोनों की मौतों की सीबीआई जांच की मांग करते हुए ट्वीट किया था, ''दिशा साल्यान की मौत की सीबीआई जांच होनी चाहिए. इस की अनदेखी क्यों की गई? यह सुशांत सिंह राजपूत की हत्या से जुड़ी साजिश की सचाई को उजागर करेगी. सीबीआई जांच हो. हम सचाई की मांग करते हैं. अब हमें रोका नहीं जा सकता है.''**

भाजपा नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने भी ट्वीट कर के कहा कि उन्हें लगता है कि सुशांत का मर्डर हुआ है. स्वामी 26 पौइंट्स गिनाते हैं, जिन में 2 पौइंट्स खुदकुशी और 24 पौइंट्स मर्डर की तरफ इशारा करते हैं. सुब्रमण्यम स्वामी के मुताबिक, सुशांत की गरदन पर सुसाइड जैसे निशान नहीं मिले. सुसाइड केस में अमूमन आंखें बाहर निकल जाती हैं, मुंह से झाग आता है, जीभ बाहर आ जाती है और फंदे के खिंचाव के कारण गरदन पर 'यू' या 'वी' शेप का चिह्न बनता है, जबकि सुशांत के शव पर ऐसा कोई निशान नहीं था.

सुब्रमण्यम स्वामी के अनुसार, सुशांत के रूम में जो एंटी डिप्रैशन ड्रग्स मिले हैं, हो सकता है उसे किसी ने वहां पर प्लांट किया हो. वहीं, उन के गले पर जो फंदे का निशान है वह बैल्ट जैसी चीज का लग रहा है. साथ ही, उन के कमरे में कोई सुसाइड नोट का न मिलना भी सुब्रमण्यम स्वामी को खटक रहा है.

एक जमाने के मशहूर सिने कलाकार और 'पोल खोल' जैसे मशहूर टीवी शो में बड़ेबड़ों की पोल खोलने वाले शेखर सुमन ने भी दिशा और सुशांत दोनों की मौतों को हत्या बताते हुए कहा है, "बौलीवुड में माफियावाद, गिरोहबाजी और विशेष सिंडिकेट सक्रिय है. वह नहीं चाहता कि कोई बाहरी वहां एकाधिकार

हासिल करे. बाहरी अगर रहे तो उन की शर्तों पर रहे. इन संदर्भों में सुशांत सिंह राजपूत की मौत की जांच सीबीआई से करानी चाहिए ताकि सचाई सामने आ सके."

**शेखर सुमन साफ कहते हैं कि सुशांत की मौत रहस्मयी परिस्थितियों में हुई है और इस के कई प्रमाण सामने हैं. सुशांत बहादुर और प्रतिभाशाली थे. आने वाले समय में उन के पास कई अच्छे औफर्स थे. वे ऐसे कैसे जा सकते हैं? फिर बिना सुसाइड नोट छोड़े कोई आत्महत्या नहीं करता है.**

शेखर सुमन बौलीवुड में गिरोहबाजी और सिंडिकेट की तसवीर साफ करते हुए यह भी कहते हैं कि शानदार सफलता के बाद भी सुशांत को कभी किसी ने प्रोत्साहित नहीं किया. अवार्ड तक नहीं दिया कभी. उलटे, सुनियोजित तरीके से उन की कई फिल्में छीन ली गईं. शेखर सुमन ने खुल कर कहा कि सुशांत नैपोटिज्म यानी भाईभतीजावाद नहीं, बल्कि गैंगेइज्म की साजिश का शिकार हुए हैं. यह सामने आना बहुत जरूरी है कि वे कौन लोग हैं जो बौलीवुड में बाहर से आए कलाकारों को स्थापित नहीं होने देना चाहते हैं.

## रिया का महेश भट्ट कनैक्शन

बौलीवुड में खेमेबाजी और सिंडिकेट चलाने वालों की लंबी फेहरिस्त है. मगर सुशांत मामले में जो नाम सब से ज्यादा उछल रहा है वह है महेश भट्ट का. रिया चक्रवर्ती जिस के साथ सुशांत सिंह राजपूत रिलेशनशिप में थे और जो उन के घर में उन के साथ लिवइन में रह रही थी, उस का महेश भट्ट से भी करीबी रिश्ता बताया जा रहा है. कहा तो यह भी जा रहा है कि सुशांत को डर था कि रिया से रिलेशन के कारण भट्ट उन को मरवा देंगे. 8 जून, यानी जिस दिन दिशा साल्यान की मौत हुई, को रिया चक्रवर्ती का सुशांत से झगड़ा हुआ और वह उन का अपार्टमैंट छोड़ कर चली गई. कहा जा रहा है कि रिया ने ऐसा महेश भट्ट की सलाह पर किया.

कहा यह भी जा रहा है कि 8 जून की जिस पार्टी में दिशा की मौत हुई उस पार्टी में रिया का भाई शैविक भी मौजूद था. दिशा के साथ क्या हुआ, इस की पूरी जानकारी रिया को है. दिशा के साथ पार्टी

क्या रिया चक्रवर्ती भी महेश भट्ट के उतनी ही करीब हैं जितनी करीब कभी परवीन बौबी थीं?

में कुछ गलत हुआ और इस की जानकारी उस ने सुशांत को फोन पर तो दी, मगर उस रात दिशा वहां से जीवित नहीं लौट सकी. 14वीं मंजिल से उस को नीचे फेंक दिया गया. रिया नहीं चाहती थी कि सुशांत इस चक्कर में पड़े, इसीलिए उस का सुशांत से झगड़ा हुआ और उस ने सुशांत का घर छोड़ दिया.

दिशा साल्यान की मौत की जांच में मुंबई पुलिस ने कोई दिलचस्पी नहीं

दिखाई. अगर पुलिस थोड़ी सी गंभीरता दिखाती तो दिशा की कौल डिटेल से ही यह बात पुख्ता हो जाती कि उस ने अपनी मौत से पहले सुशांत से बात की थी या नहीं, और की थी तो क्या? अगर मुंबई पुलिस उसी वक्त कौल डिटेल्स निकाल कर सुशांत से पूछताछ कर लेती तो शायद आज सुशांत भी जीवित होते. लेकिन, जब पूरे मामले में सफेदपोश रसूखदारों की संलिप्तता हो तो पुलिस भी केस की तफ्तीश उसी तरह करती है, जैसा उस से करने को कहा जाता है. वह हत्या को आत्महत्या बता सकती है. पोस्टमौर्टम रिपोर्ट अपने तरीके से बनवा सकती है. मौत का समय तक बदल सकती है. जैसा कि सुशांत के मामले में सामने आ रहा है. मुंबई पुलिस जहां मौत का दिन 14 जून की सुबह बता रही है वहीं सुशांत के जानने वाले कहते हैं कि सुशांत को 13 तारीख की रात ही खत्म कर फंदे पर लटका दिया गया था.

## सवाल अनेक, जवाब नदारद

सुशांत की मौत पर कई सवाल खड़े हो रहे हैं. पहला सवाल यह कि अगर उन्होंने आत्महत्या की तो कोई सुसाइड नोट क्यों नहीं छोड़ा? सुसाइड की पहली वाली रात से ही उस बिल्डिंग के सारे सीसीटीवी कैमरे बंद क्यों थे? आखिर ये बंद कैसे हुए? किस ने बंद करवाए?

सुशांत के बारे में कहा गया कि वे मानसिक रूप से बीमार थे और अवसाद की दवाएं ले रहे थे. लेकिन 13 जून की रात उन के फ्लैट में कुछ दोस्त आए थे और वहां हूटिंग हो रही थी. सवाल यह है कि डिप्रैशन वाला बंदा हूटिंग क्यों करेगा, यह तो खुशी की निशानी है न?

जिस फ्लैट में सुशांत रह रहे थे उस की डुप्लीकेट चाबी गायब है. चाबी किस के पास है?

कहा जा रहा है कि सुशांत ने छत पर लगे पंखे से फांसी लगाई, लेकिन पुलिस को बैड पर या कमरे में वह स्टूल नहीं मिला जिस पर चढ़ कर फांसी लगाई गई.

**सुशांत के नौकर नीरज का बयान है, ''जब सुशांत ने दरवाजा नहीं खोला तो हम ने चाबी वाले को बुलाया. उस ने बोला कि नई चाबी बनवाओगे तो आधा घंटा लगेगा. अगर लौक तोड़ने को कहोगे तो 10 मिनट लगेगा. हम ने उस से दरवाजे का लौक तोड़ने को कहा. चाबी वाले ने जैसे ही दरवाजे का लौक तोड़ा, हम ने उस से कहा कि आप पैसे लो और जाओ. हम अंदर देखते हैं.''**

क्या ऐसा मुमकिन है कि कोई चाबी वाला दरवाजे का लौक तोड़े और उसे दरवाजा खोलने न दिया जाए? उस को पैसे दे कर बोला जाए कि तुम जाओ, हम देखते हैं? क्या मुंबई पुलिस ने चाबी वाले से पूछताछ की?

## शक के घेरे में आत्महत्या

सुशांत ने आत्महत्या की, इस बात पर शक तब पैदा होता है जब 3 अलगअलग व्यक्ति कहते हैं कि सुशांत को उन्होंने फंदे से उतार कर बैड पर लिटाया. सुशांत का दोस्त जो वहां था उस ने बयान दिया है कि सुशांत के गले में कसे फंदे को उस ने चाकू से काटा और उन के शव को बैड पर लिटाया, एम्बुलैंस ड्राइवर कहता है कि उस ने सुशांत का फंदा काटा था, तो दूसरा एम्बुलैंस ड्राइवर कहता है कि पुलिस ने सुशांत का फंदा काटा और उस को बैड पर लिटाया.

## अवसाद या साजिश का शिकार

साल 2020 फिल्म इंडस्ट्री के लिए किसी बुरे सपने से कम नहीं है. एक तरफ जहां पूरी दुनिया कोरोना वायरस से जंग लड़ रही है वहीं हमारे सितारे जिंदगी से जंग हार रहे हैं. इंडस्ट्री लगातार कई काबिल और बेहतरीन कलाकारों को खो रही है. इस साल कई सितारों ने दुनिया को अलविदा कह दिया, लेकिन कई ऐसे भी रहे जिन्होंने खुदकुशी जैसा कठोर कदम उठा लिया.

➢ **समीर शर्मा :** 'कहानी घर घर की' सीरियल के ऐक्टर समीर शर्मा को मुंबई स्थित उन के घर में फांसी के फंदे पर झूलता पाया गया. कहते हैं कि उन्होंने 2 दिनों पहले ही सुसाइड किया था लेकिन इस का पता 2 दिनों बाद चला. समीर शर्मा टीवी का एक मशहूर चेहरा थे. उन्होंने अपनी शानदार अदाकारी से लोगों के दिल में खास जगह बनाई थी. उन्होंने लीड रोल से ले कर विलेन तक हर तरह की भूमिका निभाई. उन के कोस्टार्स और फैंस इस बात का भरोसा ही नहीं कर पा रहे हैं कि समीर अब उन के बीच नहीं हैं.

➢ **प्रेक्षा मेहता :** 'क्राइम पेट्रोल' सहित कई शोज का हिस्सा रहीं अभिनेत्री प्रेक्षा मेहता ने मई में इंदौर में अपने घर पर फांसी लगा कर खुदकुशी कर ली. लौकडाउन की वजह से वे इंदौर में रह रही थीं. उन के पिता रविंद्र चौधरी की मानें तो वे काफी परेशान चल रही थीं. उन्हें लग रहा था कि कोरोना की वजह से अब मुंबई में उन्हें काम मिलना मुश्किल हो जाएगा. वे अपने कैरियर को ले कर बहुत परेशान थीं.

➢ **मनमीत ग्रेवाल :** काम नहीं मिलने और कर्ज से परेशान अभिनेता मनमीत ग्रेवाल ने 16 मई को आत्महत्या कर ली. ऐक्टर ने नवी मुंबई के पास मौजूद खारघर स्थित अपने घर में सुसाइड कर लिया. मनमीत सिंह की पत्नी ने उन्हें फंदे से लटकता देख कर शोर मचाया लेकिन शायद कोरोना वायरस महामारी के डर से मदद के लिए कोई नहीं आया और मनमीत के प्राण पखेरू उड़ गए.

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि फांसी लगा कर आत्महत्या करने पर आंखें बड़ीबड़ी हो कर बाहर निकलने जैसी हो जाती हैं. जीभ बाहर आती है, गले पर यू शेप बनता है, पर सुशांत के मामले में डैडबौडी की जो तसवीरें सामने आई हैं उन में ऐसा कुछ नहीं था. ऐसा क्यों ?

**सुशांत के पूर्व सहायक अंकित अचार्य कहते हैं कि सुशांत का मर्डर किया गया है. एक टीवी चैनल से बात करते हुए अंकित ने साफ कहा, ''सुशांत को मैं जितना जानता हूं, वे कभी अपनी जान खुद नहीं ले सकते. मैं ने उन की डैडबौडी की तसवीर कई बार देखी और मैं इसे आत्महत्या मानने से इनकार करता हूं. उन के गले के निशान कुछ और ही कहते हैं. उन के गले पर 'ओ' शेप का निशान है**

➢ **सेजल शर्मा :** सीरियल 'दिल तो हैप्पी है जी' से चर्चा में आईं अभिनेत्री सेजल शर्मा ने साल की शुरुआत में खुदकुशी कर ली थी. 24 जनवरी को सेजल का शव मुंबई में मीरा रोड स्थित उन के आवास पर मिला था. पुलिस को शव के पास एक सुसाइड नोट भी मिला था. सेजल शर्मा के घर से मिले सुसाइड नोट में सुसाइड करने की वजह निजी कारणों को बताया गया था. कहा गया कि वे डिप्रैशन में थीं.

➢ **अनुपमा पाठक :** कई भोजपुरी फिल्मों में काम कर चुकी भोजपुरी अभिनेत्री और टीवी ऐक्ट्रैस अनुपमा पाठक ने मुंबई स्थित किराए के मकान में फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली. कहा जा रहा है कि वे पैसों की समस्या से बहुत परेशान थीं और कैंसर जैसी बीमारी से भी पीड़ित थीं. उन्होंने 2 अगस्त को खुदकुशी कर ली. अनुपमा ने खुदखुशी करने से पहले फेसबुक लाइव पर खुदकुशी करने के पीछे की वजह और लोगों द्वारा उन को परेशान करने के बारे में विस्तार से बात की थी.

➢ **आशुतोष भाकरे :** मराठी ऐक्टर आशुतोष भाकरे ने भी 30 जुलाई को अपने घर में फांसी लगा ली. वे एक महीने पहले ही महाराष्ट्र के नांदेड़ स्थित अपने घर लौटे थे. पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, आशुतोष का शव नांदेड़ स्थित उन के बंगले में लटका हुआ पाया गया. आशुतोष मराठी फिल्म इंडस्ट्री का जानामाना नाम थे. उन की मौत की खबर से मराठी फिल्म इंडस्ट्री के लोग सकते में हैं. 32 साल के आशुतोश भाकरे टीवी और फिल्म इंडस्ट्री की जानीमानी ऐक्ट्रैस मयूरी देशमुख के पति थे.

फिल्म इंडस्ट्री में लगातार बढ़ रहे डिप्रैशन और खुदकुशी के मामलों ने पूरे देश को सकते में डाल दिया है. साथ ही, इंडस्ट्री के डार्क साइड को ले कर भी अब सवाल उठने लगे हैं.

**जबकि खुदकुशी करने वाले के गले पर 'यू' आकार का चिह्न होता है.''**

अंकित आचार्य ने आगे कहा, "मैं आप को यह भी बता सकता हूं कि उन के गले पर किस चीज का निशान है. यह उन के पालतू कुत्ते फज की बैल्ट का निशान है और वह जो गोल गहरा निशान है वह भी फज की उसी बैल्ट का निशान है. मेरे पास अभी भी सुशांत भैया के शव की तसवीरें हैं और मैं अभी भी उन तसवीरों को देख कर जांच कर रहा हूं. यकीनन, दोषियों ने सुशांत के पालतू कुत्ते फज की बैल्ट का इस्तेमाल किया जिस से उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया."

सुशांत के नौकर के पास 22 लाख रुपए मिले थे, वे कहां से आए, इस की कोई जांच नहीं की गई, बल्कि उसे मुंबई पुलिस द्वारा दबा दिया गया. ●

धर्म और
राजनीति

# राममंदिर
# सभी के लिए मंगलकारी नहीं

• भारत भूषण श्रीवास्तव

अयोध्या राममंदिर निर्माण में शिलान्यास के साथ ही दूसरे फसाद भी शुरू हो गए हैं, जो कल गुल खिलाएंगे. लेकिन आज, देश जिस हालत में है वह भी कम चिंताजनक नहीं है. दिक्कत यह है कि देश के कर्णधार ही अपनी प्राथमिकताएं निर्धारित नहीं कर पा रहे जिस से आम और खास दोनों वर्ग के लोग भ्रमित हैं. देश की धर्मभीरु सरकार भी, शायद, यही चाहती है कि लोग धर्मकर्म में उलझे रहें.

5 अगस्त, 2020 का दिन इन मानो में वाकई ऐतिहासिक था कि इस दिन लोकतंत्र धर्म के आगे नतमस्तक और साष्टांग हो गया था. अयोध्या में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का राम की मूर्ति के सामने दंडवत होने के बाद मंदिर निर्माण के लिए भूमिपूजन करने, कहने को लगभग 500 साल के इंतजार का अंत था, के तुरंत बाद देश के दूसरे धर्मस्थलों को ले कर जो फसाद खड़े हो रहे हैं उन्हें देख साफ लग रहा है कि जानबूझ कर माहौल फिर बिगाड़ा जा रहा है जिस से धर्म के दुकानदारों, संस्कृति के ठेकेदारों, ब्राह्मणों को रोजगार और इन के हाथों का मोहरा बनी भाजपा की राजनीति चलती रहे.

पीला सुनहरा कुरता और सफेद झकाक धोती पहने नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री या मुख्य अतिथि कम यजमान ज्यादा लग रहे थे क्योंकि वे सब से बड़े और अहम धार्मिक आयोजन में पधारे थे, जिस में उन्हें सिर्फ वैदिक रीतिरिवाजों से पूजापाठ करना था, किसी कारखाने या फैक्ट्री का उद्घाटन नहीं करना था. उन का भाषण भी धर्मकर्म के इर्दगिर्द घूमता रहा जिस के चलते वे यह बताने से बच गए कि इस कारखाने में इतने मीट्रिक टन उत्पादन होगा जिस से देश को येये फायदे होंगे, इतने हजार या इतने लाख लोगों को रोजगार मिलेगा और देश में समृद्धि आएगी वगैरहवगैरह.

लेकिन, आगे हम बता रहे हैं कि कैसे राममंदिर की आड़ में देशभर के कोई 3 लाख ब्राह्मणों के लिए घर बैठे रोजगार योजना शुरू की जा रही है और कैसे कोई भी मंदिर धर्म के धंधे की फैक्ट्री साबित होता है.

## भाषण में जोश भी, होश भी

धर्मसंसदनुमा इस समारोह, जिस पर करोड़ों रुपए फूंके गए, में देशभर से आए कोई 200 नंगधड़ंग साधुसंतों के अलावा आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राज्यपाल आनंदी बेन और राममंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास मौजूद थे. सभी की उत्सुकता इस बात में ज्यादा

थी कि नरेंद्र मोदी अपने भाषण में क्याक्या बोलते हैं. अपनी पत्नी को बेवजह त्याग देने वाले नरेंद्र मोदी ने राम के पहले सीता का नाम जोड़ते हुए कहा, 'जय सियाराम', तो मौजूद साधुसंतों के साथ टीवी देख रहे करोड़ों आम लोगों को भी समझ आ गया कि आइंदा इसी को दोहराना है क्योंकि मोदीजी कह रहे हैं तो इस के अपने अलग माने भी होने चाहिए.

उन्होंने अपनी मंशा भाषण के पूर्वार्ध में ही उजागर कर दी कि राममंदिर हमारी संस्कृति का आधुनिक प्रतीक बनेगा, हमारी शाश्वत आस्था का, राष्ट्रीय भावना का और करोड़ोंकरोड़ लोगों की सामूहिक संकल्पशक्ति का भी प्रतीक बनेगा. यह मंदिर आने वाली पीढ़ियों को आस्था, श्रद्धा और संकल्प की प्रेरणा देता रहेगा. इस के बनने के बाद यहां हर क्षेत्र में नए अवसर बनेंगे.

इस के बाद वे सीधे एससीबीसी तबके की बात करते नजर आए जिस का इस मंदिर से न तो कोई लेनादेना है और न ही उस का कोई भला होने वाला है. सामाजिक समरसता का बासी राग अलापते उन्होंने गुरु वशिष्ठ, केवट, शबरी, हनुमान और वनवासी बंधुओं के अलावा गिलहरी तक का जिक्र करते रामचरित मानस का एक प्रचलित दोहा, 'दीन दयाल बिरिदु संभारी...' दोहरा दिया. सरल भाषा में कहें तो मोदी के मुताबिक राम अपनी प्रजा में कोई भेद नहीं करते और गरीबों व दीनदुखियों पर उन की विशेष कृपा रहती है. (पर यह आज तक कोई नहीं बता पाया कि ब्राह्मणों के कहने पर एक शूद्र शम्बूक को मार कर उन्होंने उस पर कौन सी कृपा की थी जिस का अपराध इतनाभर था कि वह तपस्या कर रहा था) आज भी देशभर के वैष्णव मंदिरों में शूद्रों यानी एससीबीसी तबके के प्रवेश करने पर उन पर जो कहर ढाए जाते हैं वे किसी सुबूत के मुहताज नहीं हैं. नरेंद्र मोदी या किसी और के कहने से समाज का मौजूदा सच बदल नहीं जाएगा.

असल में मोदी की मंशा जो समझने वालों ने ही समझी वह यह थी कि बनिया कही जाने वाली जातियां, जो व्यापारी हैं

जनता की उम्मीदों पर पूरी तरह खरे न उतरने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी क्या जनता का ध्यान असल मुद्दों से भटका रहे हैं?

और कृष्ण भक्ति में लीन रहती हैं, अयोध्या आ कर व्यापार जमाएं और घोषिततौर पर रामभक्तों की टोली में शामिल हो जाएं. इस बाबत उन्होंने इशारा भी भाषण के शुरू में ही कर दिया था कि अब इस क्षेत्र का अर्थतंत्र भी बदल जाएगा. मोदी का इशारा यह था कि इस भव्य समारोह के बाद करोड़ों भक्त अयोध्या आएंगे जिन से व्यापारी खासा पैसा कमा सकते हैं. यह आमंत्रण कुछकुछ वैसा ही था जिस में सरकारें देशीविदेशी निवेशकों को समिट के जरिए देती हैं कि आइए, हमारे यहां उद्योगधंधे लगाइए और जम कर मुनाफा काटिए.

वैश्य समुदाय के लोग अयोध्या का रुख करेंगे या नहीं, यह देखना दिलचस्पी की बात होगी क्योंकि वे कृष्ण के इतने कट्टर भक्त होते हैं कि राम को चढ़ाया प्रसाद भी ग्रहण नहीं करते और लेते भी हैं तो हिचकते हुए. लेकिन यह तय है कि धार्मिक स्थलों को व्यापार के जरिए चमकाने वाले इस वर्ग की व्यावसायिक बुद्धि, व्यापार शैली और विशेषज्ञता से नरेंद्र मोदी अच्छी तरह वाकिफ हैं क्योंकि इन की पंडेपुजारियों से भी अच्छी ट्यूनिंग होती है. जय श्रीकृष्ण, राधेराधे और लड्डू गोपाल का जयकारा करते रहने वाला यह वर्ग सियाराम कहेगा, हालफिलहाल इस में शक है.

वैदिक इतिहास और धर्मग्रंथों के मुताबिक, देवअसुर झगड़े के चलते लोग 2 भागों में बंट गए थे. पहले बृहस्पति और शुक्राचार्य की लड़ाई चली, फिर वशिष्ठ और विश्वामित्र में, जो बाद में चल कर वैष्णव और शैव संप्रदाय में बदल गई. इस के अवशेष आज भी हैं, बस, सभ्य हो जाने के चलते पहले की तरह हिंसक लड़ाइयां अब इन के बीच नहीं होतीं. फिर बहुत सी और तरहतरह की शाखाएं व विचारधाराएं फूटीं और अधिकतर वैश्य कृष्णभक्ति शाखा के प्रणेता बल्लभाचार्य के अनुयायी हो गए.

क्या इन्हीं और दूसरे लोगों को भयभीत करने के लिए नरेंद्र मोदी ने 'भय बिन होत न प्रीति...' वाला दोहा पढ़ा था? सोचा जाना लाजिमी है और यह भी कि क्यों राम को राष्ट्र बताया जा रहा है और कब तक यह डर दिखाया जाता रहेगा? अजीब और अव्यावहारिक बात तो मोदी का कोरोना के मद्देनजर यह कहना भी था कि वर्तमान की मर्यादा 'दो गज की दूरी, मास्क है जरूरी' है. सभी देशवासियों को राम स्वस्थ रख सकते होते तो दूरी और मास्क की सलाह क्यों और कोरोना का कहर क्यों दिनोंदिन बढ़ रहा है. और तो और, अयोध्या को भी क्यों सैनिटाइज किया गया जैसे सवाल पूछे जाना पत्थर पर सिर मारने जैसी बात है. इसलिए यही मान लेना बेहतर है कि आज नहीं तो कल, कोई चमत्कार होगा जो जिन्हें न दिखे उन्हें अपनी आंखों और दिमाग का इलाज करा लेना चाहिए.

## सब के नहीं राम

नरेंद्र मोदी का यह कहना सिवा आत्ममुग्धता के कुछ और नहीं है कि राम सब के हैं और सब में राम हैं. हकीकत हर कोई जानता है कि राम न तो जैनियों के आराध्य हैं, न सिखों के और न ही बौद्धों के. ये तीनों धर्म खुद को हिंदू कहलाने से भी सरासर इनकार करते हैं, फिर मुसलमानों और ईसाइयों की तो बात करना ही बेमानी है. इस के अलावा आर्यसमाजी, आदिवासी और अधिकतर एससीबीसी के लोग भी राम को नहीं मानते हैं. यानी, कुछ नास्तिकों सहित लगभग 80 फीसदी आबादी राम को अपना भगवान मानने को राजी नहीं. ऐसे में राम सब के कैसे हो गए? हकीकत में राम विष्णु का अवतार होने के नाते केवल वैष्णवों के हैं.

बचे सभी 20 फीसदी भी राम को मोदी, योगी या आरएसएस के नजरिए से देखने में सहमत हैं, यह तो किसी निष्पक्ष और गोपनीय जनमत संग्रह से ही तय हो पाएगा पर उस से ज्यादा जरूरत इस बात पर जनमत संग्रह की है कि क्या कोई मंदिर विकास का प्रतीक है? क्या उस से कोई उत्पादन होता है? और अहम बात, क्या रोजगार मिलता है? अभी देश

20-50 हजार लोगों के हाथों में है जो खुद से जुड़े मुद्दों को ले कर इतना शोरशराबा मचाते हैं कि उन के सिवा कुछ और दिखता ही नहीं.

चिंताजनक बात मंदिर मानसिकता में जकड़े मीडिया का भी इसी रंग में रंगा होना और इन के साथ हो लेना है. 5 अगस्त के तमाशे को जिस तरह दिखाया गया वह जरूर वाकई अनूठा था. इस बार दीये जलाने को ले कर आम लोगों में उत्साह न के बराबर था, लेकिन कैमरे और कलम रोशनी पर ही फोकस रहे. दलित और आदिवासियों की बस्तियों व अंधेरे में डूबे दूसरे इलाकों का रुख किसी ने नहीं किया. तमाम तामझाम आरएसएस और भाजपा कार्यकर्ताओं ने किए. हालांकि कुछ सवर्ण भी इस में शामिल थे लेकिन इन्हीं को पूरा देश कहना पूर्वाग्रह नहीं, तो और क्या होगा.

भारत राममय है, यह कहना भी अतिशयोक्ति वाली बात है जो धर्मनिरपेक्षता को निगल रही है, पिछले 6 वर्षों में यह शब्द यदाकदा ही सुनने में आया है. बात संविधान की की जाए तो रविशंकर प्रसाद जैसे मंत्री न्यूज चैनल्स के सामने उस की मूलप्रति ले कर बैठ जाते हैं कि देखिए, इस में भगवान राम प्रमुखता से संविधान निर्माताओं ने रखे हैं. अब शायद ही वे बता पाएं कि मूलप्रति में तो दूसरे धर्मों के भी देवीदेवता हैं, फिर दुहाई अकेले राम की ही क्यों. ये लोग दिनरात राम देखें, यह कतई एतराज की बात नहीं, लेकिन दूसरों पर राम को थोपने से इन्हें बाज आना चाहिए. न तो राम राष्ट्रवाद हो सकता और न ही रामचरित मानस को राष्ट्रचरित मानस माना जा सकता है जैसा कि प्रचार किया जाता रहता है.

पूरे भाषण में नरेंद्र मोदी उस वक्त दयनीय लगे जब उन्होंने गांधी के राम का जिक्र किया और राममंदिर आंदोलन की तुलना स्वतंत्रता आंदोलन से ही कर डाली. इस में कोई शक नहीं कि सभी वर्गों के लोगों ने आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया था, मसलन दलित, पिछड़े और आदिवासी, जिन का उल्लेख भाषण में किया गया लेकिन मुसलमानों ने भी इस में भागीदारी की थी जिन की बात नहीं की गई. यह सरासर पूर्वाग्रह, भेदभाव और फरेब नहीं तो क्या है? अंगरेजों से आजादी हर किसी की इच्छा थी, लेकिन राममंदिर भी सब चाहते हैं, यह सब से बड़ा झूठ है. और यह लड़ाई किस ने किस के खिलाफ कैसे लड़ी, यह भी भुला दिया गया. यह लड़ाई मुट्ठीभर सनातनियों और कट्टर मुसलमानों के बीच थी, यह सच छिपाए नहीं छिपने वाला.

## हवा होते मुद्दे

कुछ सच जरूर मंदिर के शोरशराबे में दबते जा रहे हैं, जिन में पहला बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी का है, दूसरा सीमाओं पर चीन और पाकिस्तान के बढ़ते खतरे का है, तीसरा और चौथा गिरती अर्थव्यवस्था व जीडीपी का है, 5वां हताश होते युवाओं का है. ऐसे कई खतरों में सब से बड़ा कोरोना का खतरा है जिसे भगाने के लिए जम कर धार्मिक पाखंड करवाए गए जो अभी तक जारी हैं. संक्रमित लोग अस्पताल बाद में जाते हैं, पहले नजदीकी धर्मस्थल पर जा कर ऊपर वाले से दुआ करते हैं कि हमें यह वायरस गिरफ्त में न ले, तो हम इतने या उतने रुपए का प्रसाद चढ़ाएंगे.

यह कौन सी आधुनिकता और किस सदी की मानसिकता है जिसे राममंदिर

निर्माण से हवा मिल रही है, इस का जवाब देने को कोई तैयार नहीं. जवाब है तो, बस, इतना कि ऊपर वाले पर भरोसा रखो, वह सब की सुनता है और सुनता रहे, इस के लिए दानदक्षिणा चढ़ाते रहो, यही परम सत्य है. बाकी डाक्टर, अस्पताल, दवाइयां और वैक्सीन की खोज वगैरह सब मिथ्या हैं. जब देश के सर्वोच्च पद पर बैठा व्यक्ति यह कहे कि यही यानी मंदिर ही कल्याण का इकलौता मार्ग है, इसी से बिगड़ी

धर्मभीरु सरकारें धर्म के नाम पर जनता का पैसा पानी की तरह बहा रही हैं.

सुधरेगी तो आम और खास लोगों से किसी बुद्धिमानी की, तर्कों की और समझदारी की उम्मीद करना उतनी ही बेमानी बात है जितनी यह कि किसी मंदिर से देश की तरक्की होती है.

## कहां है बौद्धिक वर्ग

इस होहल्ले में देश का बुद्धिजीवी और बौद्धिक वर्ग कहां गुम हो गया, इस का पता ही नहीं चल रहा. यह वह वर्ग है जो उत्पादकता पर जोर देता है, समस्याओं के समाधान के प्रति एक वैज्ञानिक नजरिया रखता है और धार्मिक पाखंडों से परे तार्किक व व्यावहारिक सुझाव देता है. राममंदिर भूमिपूजन पर यह बेचारगी का शिकार दिखा तो इसे एक बड़े खतरे के रूप में देखा जाना चाहिए. धर्मांधता से घबराए बुद्धिजीवी और बौद्धिक लोग इतने हताश हो चले हैं कि कुछ बोलने से भी डरने लगे हैं.

अब नया डर तो इस बात का सिर पर मंडराने लगा है कि यह वर्ग भी भजनकीर्तन न करने लगे जोकि भगवा गैंग की बड़ी मंशा और कोशिश है. अगर ऐसा हुआ तो फिर वाकई में देश को कोई नहीं बचा पाएगा. जब यह वर्ग खामोश हो जाता है या कर दिया जाता है तो चांदी महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे और मध्य प्रदेश विधानसभा के प्रोटेम स्पीकर रामेश्वर शर्मा जैसे नेताओं की हो आती है जो यह भ्रम फैलाने से बाज नहीं आते कि राममंदिर शिलान्यास के साथ ही कोरोना खत्म होने लगेगा. हंसी और तरस उस वक्त आता है जब आंकड़े यह बयां करते हैं कि सब से ज्यादा मरीज 5 अगस्त के बाद ही बढ़े.

फिर बौद्धिक अर्जुन मेघवाल जैसे पाखंडी मंत्री भी माने जाने लगते हैं जो पापड़ों को कोरोना की दवाई बताने लगते हैं. लेकिन, कुछ दिनों बाद खुद ही कोरोना पीड़ित हो जाते हैं. ये लोग एक साजिश और मुहिम के तहत अंधविश्वास जानबूझ कर फैलाते हैं जिस से लोग रामराम, श्यामश्याम में उलझे रहते हुए पंडेपुजारियों की जेबें भरते रहें. वास्तविक बौद्धिक वर्ग निराशा का शिकार होते इन तमाशों के डर व सम्मोहन में आ कर खुद पर ही शक करते सोचने लगता है कि चलने दो धर्म की दुकान, हमारा क्या जा रहा है.

इस का असर घोषिततौर पर दिखा भी, जब उर्दू की विवादित बंगलादेशी

साहित्यकार तसलीमा नसरीन ने 10 अगस्त को यह कहा कि हिंदुओं को भी धार्मिक और कट्टरपंथी होने का अधिकार है. उन के मुताबिक, अगर आप एक हिंदू हैं तो आप का धर्मनिरपेक्ष होना जरूरी नहीं. यकीन नहीं होता कि ये वही तसलीमा हैं जिन्होंने इसलामिक कट्टरवाद के खिलाफ अपनी रचनाओं के जरिए जम कर जहर उगला है और मुसलमानों में पसरी रूढ़िवादिता व अंधविश्वासों का सच भी उजागर करते

धर्म की आलोचना करने वाली तसलीमा नसरीन स्वार्थ के लिए अब एक धर्म की तरफदारी कर रही हैं.

खूब दौलत व शोहरत हासिल की है. भारत में निर्वासित जिंदगी गुजार रहीं तसलीमा जानती हैं कि वे अब शाह और मोदी के रहमोकरम पर हैं, लिहाजा, उन की खुशामद से ही बाकी के दिन सुकून से काट पाएंगी. लेकिन, इस के लिए वे इतना गलत रास्ता चुनेंगी, इस की उम्मीद किसी को नहीं थी.

तसलीमा, दरअसल, वह सब कह गईं जो पिछले 6 वर्षों में हिंदू बुद्धिजीवियों के दिलोदिमाग में हिंदू कट्टरपंथियों ने ठूंसठूंस कर भर दिया है कि तुम्हारी उदारता और धर्मनिरपेक्षता ही तुम्हारी सब से बड़ी दुश्मन है जिस के चलते अंगरेजों, खासतौर से मुगलों, ने तुम्हें खूब लूटा, तुम्हारे मंदिर लूटे और उन्हें तोड़ कर वहां मसजिदें बनाईं, तुम्हारी धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान मिटाई. अब सालों बाद कोई हिंदूवादी सरकार आई है और खोई हुई अस्मिता वापस हासिल कर रही है, तो उस का समर्थन करो. और ऐसा हो भी रहा है.

लेकिन, इस के खतरे को कोई नहीं देख रहा कि पूरा देश सवर्ण समुदाय और बौद्धिक वर्ग बहकावे में आ कर धार्मिक मकड़जाल में फंस रहा है, ठीक वैसे ही जैसे मुसलमान इस जाल में फंसे छटपटा रहे हैं, जो दिमागीतौर पर पंगु हो चुके हैं. कोई दूसरा कातिल है, तो क्या हमें भी खंजर उठा लेना चाहिए? यह उस गांधी का रास्ता या दर्शन तो कतई नहीं है जिस का हवाला अयोध्या में दिया गया. रही बात तसलीमा नसरीन की, तो वे भी हिंदुओं को कट्टरपंथ के रास्ते पर चलने को उकसा ही रही हैं, उन से भी सावधान रहना बेहद जरूरी है.

## और भी हैं साइड इफैक्ट्स

धर्म की दुकान चलाने की साजिश, जैसा कि ऊपर जिक्र किया गया है, यह है कि विश्व हिंदू परिषद और भाजपा ने अयोध्या में बीती 8 अगस्त को यह फैसला लिया कि देशभर के 2 लाख 75 हजार गांवों में राम की मूर्तियां स्थापित की जाएंगी. इस के लिए जाहिर है छोटेबड़े मंदिर बनाए जाएंगे जिन का पुजारी ब्राह्मण ही होगा. इस तरह बिना किसी आरक्षण के इन ब्राह्मण परिवारों को मुफ्त की मलाई जीमने को मिलेगी. इतना ही नहीं, भक्ति और श्रद्धा की अलख जगाए रखने के लिए

कोई 10 करोड़ परिवारों से 5 हजार करोड़ रुपए की अपार धनराशि इकट्ठा करने का भी लक्ष्य रखा गया है.

ये परिवार, जाहिर है, सवर्ण समुदाय के ही होंगे जिन की गाढ़ी कमाई पहले चंदे में और फिर चढ़ावे में बरबाद होगी. गांवगांव में मंदिर बनाने से एससीबीसी के लोग और मुसलमान भी ऊंची जाति वालों से दबे रहेंगे. शायद ही नहीं, बल्कि तय है कि सही मानो में रामराज की स्थापना की जा रही है जिस में समाज पर दबदबा ऊंची जाति वालों का रहता है, बाकी तो उस की पालकी ढोते हैं.

अयोध्या शो की अपार सफलता के बाद अब हिंदूवादी काशी विश्वनाथ और कृष्ण जन्मभूमि की मुक्ति की मांग भी जोरशोर से उठाने लगे हैं. कई भाजपा नेताओं ने तो यह मुद्दा उठाया ही, 11 अगस्त को बाकायदा इस का बिगुल धर्माचार्यों ने मथुरा से फूंका. बकौल महंत सुतीक्ष्ण दास, उम्मीद है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जिस तरह से राममंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया है उसी तरह काशी और मथुरा का विवाद भी सुलझेगा.

एक और महामंडलेश्वर चित्तप्रकाश के अलावा स्वामी नवलागिरी ने नए फसाद की नींव रखते उद्घोष किया कि हम सभी सनातन धर्मप्रेमियों को अभी नहीं तो कभी नहीं की भावना को जागृत करते हुए काशी व मथुरा के लिए जनमानस को जागरूक करना पड़ेगा. इस बैठक में यह नारा भी बुलंद किया गया कि 'अयोध्या तो झांकी है मथुरा और काशी अभी बाकी है'. कहा यह भी गया कि यह अब बाबर और औरंगजेब का जमाना नहीं है, बल्कि मोदी और योगी युग है.

भाजपा ने फिर साधुसंतों के जरिए नया शिगूफा छेड़ दिया है जिस से हिंदू वोटबैंक उस से बिदके नहीं बल्कि और नजदीक आए. इस बाबत 6 अगस्त को हैरतअंगेज तरीके से कृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट भी वजूद में आ गया है. इस ट्रस्ट में शुरुआती दौर में 14 राज्यों के 80 साधुसंत जुड़ चुके हैं जो देशभर में कृष्ण जन्मभूमि मुक्ति के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाएंगे और फिर एक नया राष्ट्रव्यापी आंदोलन छेड़ेंगे. ये लोग चाहते

देश का सवर्ण समुदाय और बौद्धिक वर्ग बहकावे में आ कर धार्मिक मकड़जाल में फंस रहा है.

हैं कि मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि के नजदीक जो शाही ईदगाह है वह हिंदुओं को सौंप दी जाए.

यानी, फिल्म अभी बाकी है और हर मोरचे पर असफल साबित हो रही भाजपा सरकार अपनी नाकामियां ढकने के लिए फिर अयोध्या कांड का रीप्ले करने जा रही है. ऐसे में देश की समस्याओं की बात बकवास लगती है. जो होने जा रहा है वह आईने की तरह साफ दिख रहा है और जो हो चुका है उस का संदेश यह है कि सबकुछ बिसार दो और देश के कल्याण के लिए भगवान के सामने साष्टांग हो जाओ. ●

# अमेरिका में उपराष्ट्रपति पद की उम्मीदवार भारतीय मूल की कमला हैरिस

• नसीम अंसारी कोचर

भारतीय मूल की कमला हैरिस की अमेरिकी उपराष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी से दुनिया के सब से सशक्त लोकतांत्रिक देश का चुनाव और रोमांचकारी हो गया है. उदारवादी डैमोक्रैटिक पार्टी ने ट्रंप चाल चल दी है जिस की काट रिपब्लिकन पार्टी और डोनाल्ड ट्रंप नहीं ढूंढ़ पा रहे हैं. पढ़िए, इस विशेष रिपोर्ट में.

भारतीय मूल की कैलिफोर्निया की सीनेटर कमला हैरिस कुछ समय पहले तक राष्ट्रपति पद के लिए डोनाल्ड ट्रंप को चुनौती दे रही थीं. डैमोक्रेटिक पार्टी द्वारा जो बाइडेन को उम्मीदवार घोषित किए जाने के बाद वे इस रेस से अलग हो गई थीं. लेकिन कमला हैरिस को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित कर जो बाइडेन ने साफ कर दिया है कि उन की क्षमताओं और कार्यकुशलता के वे कायल हैं और अमेरिका को कमला के नेतृत्व की भी जरूरत है. बाइडेन ने कमला हैरिस को एक बहादुर योद्धा और अमेरिका के बेहतरीन नौकरशाहों में से एक बताते हुए उन्हें उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित किया है. उपराष्ट्रपति पद का टिकट पाने वालीं कमला हैरिस भारतीय और एशियाई मूल की पहली अमेरिकी हैं.

**जो बाइडेन ने ट्वीट के जरिए इस बात की जानकारी दी और लिखा, ''यह बताते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि कमला हैरिस को मैं ने उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार चुना है. वे एक बहादुर योद्धा और अमेरिका के सब से बेहतरीन नौकरशाहों में से एक हैं.''**

बाइडेन आगे लिखते हैं, "जब कमला हैरिस कैलिफोर्निया की अटौर्नी जनरल थीं, तब से मैं ने उन को काम करते हुए देखा है. मैं ने खुद देखा है कि उन्होंने कैसे बड़ेबड़े बैंकों को चुनौती दी, काम करने वाले लोगों की मदद की और महिलाओं व बच्चों को शोषण से बचाया. मैं उस

कल के प्रतिद्वंदी जो बाइडेन और कमला हैरिस चुनावी वैतरणी पार करने के लिए अब नाव पर सवार हैं.

समय भी गर्व महसूस करता था और आज भी गर्व महसूस कर रहा हूं जब वे इस अभियान में मेरी सहयोगी होंगी."

राष्ट्रपति पद की रेस से कमला के बाहर होने के बाद से ही इस बात की चर्चा लगातार हो रही थी कि जो बाइडेन उन्हें उपराष्ट्रपति पद के लिए अपना साथी उम्मीदवार चुनेंगे. अब जो बाइडेन ने इस बात का ऐलान कर दिया है. उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार चुने जाने के बाद कमला हैरिस ने ट्वीट कर के बाइडेन को धन्यवाद कहा है.

कमला हैरिस ने अपने ट्वीट में कहा, "जो बाइडेन अमेरिकी लोगों को एक कर सकते हैं क्योंकि उन्होंने हम लोगों के लिए लड़ते हुए अपनी पूरी जिंदगी लगा दी. राष्ट्रपति के तौर पर वे एक ऐसा अमेरिका बनाएंगे जो कि हमारे आदर्शों पर खरा उतरेगा. मैं अपनी पार्टी की तरफ से उपराष्ट्रपति के उम्मीदवार की हैसियत से उन के साथ शामिल होने पर गर्व महसूस करती हूं और उन को अपना कमांडर इन चीफ बनाने के लिए जो भी करना पड़ेगा, वह सब करूंगी."

## फीमेल ओबामा के नाम से मशहूर

कैलिफोर्निया से डैमोक्रेटिक पार्टी की सीनेटर कमला हैरिस को, अमेरिकी मीडिया ग्रुप पोलिटिको की रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले साल नवंबर में कराए गए डैमोक्रटिक वोटर्स पोल में राष्ट्रपति चुनाव के लिए ट्रंप के खिलाफ 5वीं पसंदीदा नौमिनी माना जा रहा था. मगर डैमोक्रटिक पार्टी की तरफ से जो बाइडेन को उम्मीदवार घोषित किए जाने के बाद कमला रेस से अलग हो गईं. गौरतलब है कि 'फीमेल ओबामा' के नाम से प्रसिद्ध 54 साल की कमला हैरिस 2016 में अमेरिकी संसद के उच्च सदन (सीनेट) के लिए निर्वाचित हुई थीं. इस जीत के साथ ही वे सीनेट में पहुंचने वाली भारतीय मूल की पहली और इकलौती महिला सांसद बन गई थीं. उन्हें ओबामा का करीबी माना जाता है. 2016 में सीनेट के चुनाव अभियान में ओबामा ने कमला को सपोर्ट किया था.

कमला 2011 से 2017 तक कैलिफोर्निया की अटौर्नी जनरल भी रह चुकी हैं. उन का जन्म कैलिफोर्निया के ही औकलैंड में हुआ. उन की मां श्यामला गोपालन 1960 में 19 साल की उम्र में चेन्नई छोड़ कर अमेरिका में बस गई थीं. वे कैंसर रिसर्चर थीं. कमला के पिता डोनाल्ड हैरिस मूलरूप से जमैका के थे. वे अर्थशास्त्र पढ़ने के लिए अमेरिका आए थे. श्यामला और डोनाल्ड हैरिस एक मुलाकात के बाद अच्छे दोस्त हो गए और वर्ष 1963 में दोनों ने विवाह कर लिया.

कमला अपनी सफलताओं के लिए अपनी मां को सब से बड़ी प्रेरणा मानती

बराक ओबामा की लोकप्रियता और पहुंच की उत्तराधिकारी बनीं कमला हैरिस क्या इतिहास बना पाएंगी?

हैं. वे अपने राजनीतिक कैरियर का श्रेय अपनी सुपरहीरो मां को देती हैं. कमला हैरिस के मुताबिक उन की भारतीय मूल की अमेरिकी मां ने ही उन के अंदर जिम्मेदारी की भावना जगाई, जो उन के राजनीतिक कैरियर को प्रेरित करती है.

कमला हैरिस ने अपनी किताब 'द ट्रुथ्स वी होल्ड : ऐन अमेरिकन जर्नी' में लिखा, "असल में वे मेरी मां थीं, जिन्होंने हमारी परवरिश की जिम्मेदारी ली. हम एक महिला के तौर पर कैसे रहेंगी, इसे आकार देने की सब से अधिक जिम्मेदार वही थीं और वे बहुत असाधारण थीं."

हैरिस कहती हैं कि उन की दिवंगत मां ने ही उन्हें अपने सामने आने वाली समस्याओं को हल करने के लिए व्यक्तिगत तौर पर कदम उठाने के लिए सशक्त बनाया. वे एक ऐसी थीम थीं, जो उन के राजनीतिक कैरियर को प्रभावित करती हैं. वहीं, बच्चों के लिए लिखी अपनी दूसरी किताब 'सुपरहीरोज आर एवरीव्हेयर' में उन्होंने अपनी मां को सुपरहीरो की सूची में सब से ऊपर रखा है.

## संकीर्णता पर भारी उदारता

कमला हैरिस औकलैंड में पलीबढ़ी हैं. उन्होंने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से स्नातक की डिग्री ली है. इस के बाद कमला ने कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से कानून की पढ़ाई की है. हैरिस सैन फ्रांसिस्को में जिला अटौर्नी के रूप में भी काम कर चुकी हैं. वे 2003 में सैन फ्रांसिस्को की जिला वकील बनी थीं. हैरिस ने साल 2017 में कैलिफोर्निया से संयुक्त राज्य सीनेटर के रूप में शपथ ली थी. वे ऐसा करने वाली दूसरी अश्वेत महिला थीं. उन्होंने होमलैंड सिक्योरिटी एंड गवर्नमैंट अफेयर्स कमेटी, इंटैलिजैंस पर सेलैक्ट कमेटी, ज्यूडीशियरी कमेटी और बजट कमेटी में भी काम किया.

भारतीय मूल की 55 वर्षीया कमला हैरिस को ले कर अमेरिकी राजनीति में विदेशी मूल या हिंदू धर्म संस्कृति का कोई मुद्दा कभी नहीं उठा. इसलिए नहीं उठा क्योंकि अमेरिकी लोग शायद हम हिंदुस्तानियों से ज्यादा बड़े और खुले दिल वाले हैं. उन की सोच संकीर्ण नहीं

है. वे व्यक्ति की कार्यक्षमता और ज्ञान को सर्वोपरि समझते हैं. यही वजह है कि कमला जैसी महिला अपनी क्षमता और काबिलीयत के बल पर अमेरिका के उपराष्ट्रपति पद पर अपनी दावेदारी पेश करेंगी. कोई भी भारतीय अमेरिका में चुनाव लड़ सकता है बशर्ते उसे अमेरिकी नागरिकता प्राप्त हो और वह कम से कम 7 वर्षों से वहां रह रहा हो.

**याद होगा, भारत में मई 2004 में लोकसभा चुनाव के बाद जब कांग्रेस भारी बहुमत से जीती थी तो उस की ओर से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के तौर पर इटली मूल की भारतीय बहू सोनिया गांधी के नाम की चर्चा चल रही थी. इंदिरा गांधी के सुपुत्र राजीव गांधी से शादी के बाद भारत की नागरिकता ले चुकीं सोनिया गांधी के नाम पर तब कैसे भाजपाई नेताओं ने हंगामा बरपा दिया था. सोनिया को विदेशी मूल का बताते हुए भारत के प्रति उन की ईमानदारी व निष्ठा पर बड़ा सवाल खड़ा किया गया था.**

भाजपा नेता सुषमा स्वराज ने तो बाकायदा कसम उठा ली थी कि अगर सोनिया गांधी प्रधानमंत्री बन गईं तो वे अपना सिर मुंड़वा लेंगी, सादे कपड़े पहनेंगी और जिंदगीभर जमीन पर सोएंगी. इस हठ के साथ वे धरने पर भी बैठ गई थीं. सुषमा का तर्क था कि 60 साल की आजादी के बाद भी अगर कोई विदेशी मूल का शख्स देश के शीर्ष पद पर बैठता है तो इस का मतलब होगा कि देश के 100 करोड़ लोग अक्षम हैं. सुषमा ने साल 1999 में भी सोनिया गांधी को चुनौती देते हुए बेल्लारी से उन के खिलाफ चुनाव लड़ा था, लेकिन वे चुनाव हार गई थीं.

## चुनाव अमेरिका में टैंशन भारत में

अमेरिका या अमेरिकन फर्स्ट नहीं, बल्कि अमेरिका सब का. कुछ इसी आधार पर अमेरिका में 3 नवंबर को चुनाव होने जा रहे हैं. रिपब्लिकन पार्टी के नेता व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ डैमोक्रेट पार्टी के जो बाइडेन मैदान में हैं. कैलिफोर्निया की सीनेटर, कमला हैरिस अमेरिका के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार जो बाइडेन की रनिंग मेट हैं, यानी यदि बाइडेन राष्ट्रपति बने तो कमला हैरिस उपराष्ट्रपति बनेंगी.

अमेरिकी संविधान के मुताबिक, चुनाव राष्ट्रपति का होता है, उपराष्ट्रपति का नहीं. मतदाता उपराष्ट्रपति उम्मीदवार को वोट नहीं देते, वे राष्ट्रपति उम्मीदवार को वोट देते हैं. जो राष्ट्रपति उम्मीदवार चुनाव जीत जाता है, उस का रनिंग मेट उपराष्ट्रपति बनता है.

भारतीय मूल की 55 वर्षीया कमला हैरिस की अमेरिका के उपराष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवारी तय किया जाना भारत व भारतीयों के लिए गर्व की बात है. लेकिन, क्या भारत की मौजूदा नरेंद्र मोदी सरकार के लिए भी यह ऐसा ही है? इस सवाल का जवाब है, हकीकत में तो ऐसा होना ही चाहिए, लेकिन लगता नहीं.

संविधान के मानने वाले 'हम भारत के लोग...' के लिए भविष्य में गर्व करने के लिए एक बात यह है कि 55 वर्षीया कमला हैरिस 2024 में होने वाले चुनाव में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ सकती हैं. दरअसल, 78 वर्षीय जो बाइडेन ने अगला चुनाव न लड़ने की घोषणा कर दी है. इस तरह, तब वे राष्ट्रपति भी बन सकती हैं.

देशों के संविधानों का सम्मान करने, सब को साथ ले कर चलने,

धर्मनिरपेक्षता को मान्यता देने, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने, दुनिया पर नजर रखने वाली कमला हैरिस अमेरिका की उपराष्ट्रपति बनती हैं तो इस से भारत की चिंता बढ़ सकती है. बता दें कि कश्मीर पर उन का रुख भारत की मान्यताओं के उलट है. कमला हैरिस ने कश्मीर से अनुच्छेद 370 को तकरीबन खत्म सा करने के बाद वहां के हालात को काबू में करने के लिए मोदी सरकार द्वारा पाबंदियां लगाए जाने का विरोध किया था. उन्होंने सीधेतौर पर भारत सरकार से कश्मीर में लगाई गई पाबंदियों को हटाने की मांग की थी.

वहीं, कमला हैरिस जिस पार्टी से जुड़ी हैं यानी डैमोक्रेटिक पार्टी की सोच बहुलतावाद, उदारवाद, धर्मनिरपेक्षता को स्वीकार करती है. जबकि, भारत में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी कट्टरवाद, हिंदूवाद व संकीर्ण सोच की पुजारिन है. इस वजह से नरेंद्र मोदी सरकार को कुछ टैंशन हो सकती है.

जो बाइडेन, जिन्हें सभी सर्वे जीतता हुआ बता रहे हैं, एक सशक्त उदारवादी हैं. उन्होंने अपने चुनाव से जुड़े पौलिसी डौक्यूमैंट में मोदी सरकार के बनाए सीएए कानून और एनआरसी नियम की तीखी आलोचना की है. दिलचस्प यह है कि उन की डिप्टी बनने जा रहीं कमला हैरिस उन से भी ज्यादा उदारवादी हैं.

मालूम हो कि कमला हैरिस का डैमोक्रेटिक पार्टी में बहुत ही सम्मान है. पार्टी पर उन की पकड़ है और पार्टी के नेता उन की इज्जत करते हैं. वे बहुत ही लचीले विचार रखती हैं और हर मुद्दे पर सभी को ले कर चलने में विश्वास रखती हैं.

राजनीतिक जानकारों का कहना है कि कमला हैरिस वामपंथी रुझान की हैं और डैमोक्रेटिक पार्टी में समाजवादी धड़े की अगुआई करती हैं. दूसरी ओर, बाइडेन केंद्रवादी यानी सैंटरिस्ट हैं, यानी न वामपंथी और न दक्षिणपंथी.

ध्यान देने की बात है कि कमला हैरिस को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार ऐसे समय बनाया गया है जब कुछ दिनों पहले ही अमेरिका में नस्लवाद को ले कर बहुत बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ था और लगभग हर राज्य में बड़े पैमाने पर 'ब्लैक लाइव्स मैटर' आंदोलन के तहत विरोध प्रदर्शन हुए थे. इन प्रदर्शनों में अश्वेत ही नहीं, श्वेत और लैटिन अमेरिकी मूल के लोगों ने भी बड़े पैमाने पर शिरकत की.

एक अश्वेत के ऐसे समय देश के उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनना कई मानो में अहम है. कमला हैरिस स्वयं तो अश्वेत हैं ही, देश के एक मात्र अश्वेत राष्ट्रपति रह चुके बराक ओबामा ने उन का समर्थन किया है.

कमला हैरिस लोकतांत्रिक मूल्यों और धार्मिक एकता को ले कर काफी मुखर रही हैं. इस संबंध में विपरीत नीति अपनाने वाले देशों की वे आलोचना करती रही हैं. कुल मिला कर, कमला हैरिस का रुख मोदी सरकार के लिए शुभ समाचार नहीं है, बल्कि उन के अमेरिका के उपराष्ट्रपति बनने से मोदी सरकार की टैंशन बढ़ेगी.

**–एस ए जैदी**

## विदेशी मूल का मुद्दा

आज देश के प्रधानमंत्री और उस वक्त गुजरात के मुख्यमंत्री रहे नरेंद्र मोदी ने भी सोनिया गांधी के संभावित प्रधानमंत्री बनने पर एतराज जताते हुए विदेशी मूल का मुद्दा बड़े जोरशोर से उठाया था. अकेले अटल बिहारी वाजपेयी एकमात्र भाजपाई थे जिन्होंने सोनिया के विदेशी मूल के होने को चुनावी मुद्दा न बनाने की अपील की थी.

भाजपा नेताओं की संकीर्ण मानसिकता की शिकार सोनिया गांधी खुश तो बहुत होंगी क्योंकि कमला हैरिस भगवा खेमे की घोर विरोधी हैं.

कहना गलत न होगा कि हम भारतीय इतने छोटे दिल के हैं कि विदेशी मूल के लोगों को अपनी बहू या दामाद तो बना लेते हैं, मगर उन्हें दिल में जगह नहीं दे पाते. उन्हें पूरी तरह स्वीकार नहीं पाते. उन की क्षमता, उन की निष्ठा, उन की ईमानदारी, उन के समर्पण, उन की प्रीत पर हमेशा शक करते रहते हैं. वहीं अमेरिका को देखिए, जहां भारतीय मूल के वैज्ञानिकों को, सांसदों को, डाक्टरों, इंजीनियरों को कितना मानसम्मान दिया जाता है. ऊंचे ओहदों पर वे अपनी काबिलीयत के बल पर विराजते हैं.

सोनिया गांधी को नकारते और गरियाते वक्त नरेंद्र मोदी भूल जाते हैं गुजरात से संबंध रखने वाली अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स को. भारतीय मूल की सुनीता विलियम्स को 1987 में अमेरिकी सेना में कमीशन प्राप्त हुआ था. 6 महीने की अस्थायी नियुक्ति के बाद उन्हें 'बेसिक डाइविंग औफिसर' का पद मिला. वर्ष 1989 में उन्हें 'नेवल एयर ट्रेनिंग कमांड' पर भेजा गया, जहां उन्हें 'नेवल एविएटर' नियुक्त किया गया. इस के बाद उन्होंने 'हैलिकौप्टर कौम्बैट सपोर्ट स्क्वाड्रन' में ट्रेनिंग ली और कई विदेशी स्थानों पर तैनात हुईं. भूमध्यसागर, रैड सी और पर्शियन गल्फ में उन्होंने 'औपरेशन डेजर्ट शील्ड' और 'औपरेशन प्रोवाइड कम्फर्ट' के दौरान कार्य किया. सितंबर 1992 में उन्हें एच-46 टुकड़ी का औफिसर-इंचार्ज बना कर मियामी (फ्लोरिडा) भेजा गया. इस टुकड़ी को 'हरिकेन एंड्रू' से संबंधित राहत कार्य के लिए भेजा गया था. दिसंबर 1995 में उन्हें यूएस नेवल टैस्ट पायलट स्कूल में रोटरी विंग डिपार्टमैंट में प्रशिक्षक और स्कूल के सुरक्षा अधिकारी के तौर पर भेजा गया. वहां उन्होंने यूएच-60, ओएच-6 और ओएच-58 जैसे हैलिकौप्टर्स को उड़ाया. इस के बाद उन्हें यूएसएस सैपान पर वायुयान संचालक और असिस्टैंट एयर बौस के तौर पर नियुक्त किया गया. वर्ष 1998 में जब सुनीता का चयन नासा के लिए हुआ तब वे यूएसएस सैपान पर कार्यरत थीं.

अमेरिका में सुनीता विलियम्स की असाधारण कार्यक्षमता के आगे भारतीय मूल की बात कभी नहीं उठी. उन की

अमेरिका में भारतीय प्रतिभा की नींव रखने वाली सुनीता विलियम्स ने प्रशस्त की कमला हैरिस की राह.

क्षमता और ज्ञान को सर्वोपरि माना गया. आज सुनीता सदृश्य कितनी ही भारतीय मूल की हस्तियां अमेरिका में उच्च पदों पर सुशोभित हैं. यहां तक कि अमेरिकी संसद तक में भारतीय मूल की महिलाओं का वर्चस्व लगातार बढ़ता जा रहा है.

अमेरिका के मध्यावधि चुनावों में 12 भारतीय मूल के लोगों ने किस्मत आजमाई थी. ऐसा नहीं है कि किसी भारतीय को अमेरिका में चुनाव लड़ने के लिए वहां बहुत लंबे समय तक रहने की जरूरत है. अमेरिकी कांग्रेस के हाउस औफ रिप्रैजेंटेटिव्स के लिए अगर किसी भारतीय को चुनाव लड़ना है तो उस को अमेरिका का नागरिक होने के साथ यह बताना होगा कि वह 7 वर्षों से अमेरिका में रह रहा है.

अमेरिका में हाउस औफ रिप्रैजेंटेटिव्स में 435 सीटें हैं. भारतीय मूल के राजा कृष्णामूर्ति हाउस औफ रिप्रैजेंटेटिव्स के लिए चुने गए. कैलिफोर्निया से लगातार चौथी बार डा. एमी बेरा ने जीत हासिल की. बेरा ने रिपब्लिकन पार्टी के एंड्रयू ग्रांट को 5 फीसदी मार्जिन से हराया. सिलिकौन वैली में भारतीय अमेरिकी रोहित खन्ना ने जीत हासिल की. जीतने वाली चौथी भारतीय महिला सांसद प्रमिला जयपाल हैं. प्रमिला जयपाल पहली महिला हैं, जो हाउस औफ रिप्रैजेंटेटिव्स तक पहुंची हैं. ●

# विदेश नीति
# अलगथलग पड़ता भारत

हमारी विदेश नीति की कलई अब खुलने लगी है कि इस में आत्ममुग्धता ज्यादा है व्यावहारिकता और कूटनीति कम है. आखिर कहां खड़े हैं हम और क्या होंगे इस के नतीजे, पढ़िए इस विशेष रिपोर्ट में.

भारत की विदेश नीति, स्वदेशी नीति की तरह डांवांडोल और आम आदमी की भाषा में रामलला के भरोसे है. चीन से वर्षों तक मजे में काम करते रहने के साथ शी जिनपिंग को अध्यात्मवाद में झूला झुलाने और फिर इसी साल महाबलीपुरम में गाइड की तरह उन्हें घुमाने के बाद भी चीनी राष्ट्रपति ने देश की पीठ में छुरा घोंप दिया और हमारी जमीन पर कब्जा कर लिया.

यही नहीं, चीन के इशारे पर नेपाल भी आंखें दिखाने लगा. श्रीलंका ने सुनना बंद कर दिया, ईरान ने मुंह फेर लिया, म्यांमार तो कभी इस तरह साथ था ही नहीं जबकि उस की वर्तमान नेता आंग सान सू की की पढ़ाई दिल्ली के लेडी श्रीराम कालेज में ही हुई और वर्षों वे भारत में ही रहीं.

बंगलादेश, जिस का निर्माण ही भारत की सेना के बल पर 1971 में हुआ था, अब भारत के मुकाबले चीन को प्राथमिकता दे रहा है.

कहने को भारत के साथ अमेरिका है पर असलियत यह है कि अमेरिका नहीं डोनाल्ड ट्रंप भारत के साथ हैं जिन का मार्च में कोरोना की महामारी के बीच अहमदाबाद में नएनवेले स्टेडियम में बड़ा स्वागत हुआ था. ट्रंप कोरोना वायरस से निबट न पाने का गुस्सा चीन पर उतार रहे हैं. उन के समर्थकों को यह गुस्सा भी है कि चीनी एकएक कर के अमेरिकी बड़ी कंपनियां खरीद रहे हैं और चमगादड़ व कुत्ते तक खाने वाले चीनी अब मालिक बन रहे हैं. कल के कुली आज शहंशाह बन जाएं, यह बात गोरों को मंजूर नहीं है.

यह लचर विदेश नीति का ही नतीजा है कि जिस का सम्मान करते रहे वही आज आंखें तरेर रहे हैं.

भारत की समस्याएं विदेश नीति की असफलताओं के कारण बढ़ सकती हैं,

नेपाल और बंगलादेश जैसे छोटे देश भी अब भारत के खिलाफ चीन के साथ हो लिए हैं.

क्योंकि अब भारत की स्थिति एक महान लोकतांत्रिक देश होने की नहीं रह गई है. भारत अब धीरेधीरे एक आम अफ्रीकी देश की तरह सा बनता जा रहा है. अब भारत में सरकार से व्यापार करने वालों की गिनती घट रही है.

## विदेश नीति की असफलता

चीन के साथ मुठभेड़ में उस के साथ बहुत देश नहीं हैं क्योंकि वह हर तरफ पैर फैला रहा है. लेकिन चीन की विशाल फैक्ट्रियों को नजरअंदाज करना संभव नहीं है. चीन के शहर चमचमा रहे हैं.

भारत के साथ अमेरिका नहीं, बल्कि डोनाल्ड ट्रंप हैं.

वहां स्लम हैं ही नहीं. वहां स्वतंत्रताएं नहीं हैं पर पैसा बचाने के भरपूर अवसर हैं और आज का युवा पैसा कमाने के पीछे है, सिद्धांतों के नहीं. आधुनिक क्रोनी कैपिटलिज्म ने वैसे ही सिद्धांतवादी युवाओं को मेन रोड से भगा दिया है.

भारत की बंजर होती औद्योगिकता को पहले ही मार पड़ रही थी और अब कोविड लौकडाउनों ने मार डाला है. ऐसे में कोई देश भारत के भरोसे नहीं रहना चाहता. कट्टरपंथी सरकारें चलती रहती हैं, पर उन के मित्र नहीं होते. जिसे सामान बेचना है, वह अवश्य भारत से संबंध बनाए रखेगा. पर हर देश भारत का गुणगान सिर्फ इसलिए करे कि उस के देश में कुछ भारतीय मूल के लोग भगवावाद बेच कर सफल हो रहे हैं, विदेश नीति की सफलता को पाना नहीं हो सकता.

भारत अब जैसा चल रहा है, वैसा ही चलेगा. अब सरकार या मंत्री किसी की सुनेंगे, ऐसा नहीं लगता. यह एक बहुत खतरनाक बात होती है जब कमजोर व्यक्ति देश को सुनाने को लग जाए और मित्र विचारों को सुनने में तैयार न हो. भारत वह सीमा कब की पार कर चुका है. **-प्रतिनिधि** ●

# महेंद्र सिंह धौनी

## शायराना अंदाज में कहा क्रिकेट को अलविदा

• उग्रसेन मिश्रा

कोरोना कहर के बीच महेंद्र सिंह धौनी और सुरेश रैना के संन्यास की खबरें बेचैनी को और बढ़ाने वाली हैं. इन दोनों ही खिलाड़ियों ने भारतीय क्रिकेट को ऊंचे मुकाम तक पहुंचाने में अहम योगदान दिया है. इन दोनों को नजरंदाज करना किसी के लिए भी आसान नहीं होगा क्योंकि इन की उपलब्धियों के पीछे जीत के जज्बे का सबक भी है.

'मैं पल दो पल का शायर हूं, पल दो पल मेरी कहानी है...' गीत की इस पंक्ति के साथ पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धौनी ने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया. धौनी ने इंस्टाग्राम पर क्रिकेट के सफर की अपनी यादोंभरी झलकियों के साथ लिखा, "आज तक के लिए आप के प्यार और साथ के लिए धन्यवाद. शाम के 7 बज कर 29 मिनट से ही मुझे रिटायर्ड समझिए." 15 अगस्त को धौनी की इस घोषणा के साथ ही हर तरफ प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आ गई. हर फैन अपने कैप्टन कूल के लिए उदास है, तो हर शख्स क्रिकेट जगत में माही के समर्पण को याद कर रहा है.

बीसीसीआई के अध्यक्ष सौरव गांगुली कहते हैं, "यह एक युग का अंत है. वैश्विक क्रिकेट और देश के लिए खिलाड़ी रहे हैं वे. उन के नेतृत्व गुणों की बराबरी करना किसी के लिए बहुत मुश्किल होगा, खासकर क्रिकेट के छोटे फौर्मेट में."

**39 वर्षीय एम एस धौनी भारतीय क्रिकेट के इतिहास में एकलौते ऐसे कप्तान हैं जिन की कप्तानी में आईसीसी वर्ल्ड कप के सभी खिताब भारत ने जीते हैं. धौनी की कप्तानी में भारत ने 2007 में आईसीसी ट्वैंटी20 वर्ल्ड कप, 2011 में आईसीसी वर्ल्ड कप और 2013 में आईसीसी चैंपियंस ट्रौफी जीती. धौनी ने 350 ओडीआई, 90 टैस्ट व 95 टी20 इंटरनैशनल क्रिकेट में भारत का नेतृत्व किया है. वे ओडीआई के महारथी हैं जिन्होंने ज्यादातर 5वें व 6वें स्थान पर खेलते हुए एक दिवसीय मैच में 50.58 औसत की दर से रन बनाए. साथ ही, इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता कि धौनी भारत के सब से सफल विकेटकीपर हैं. अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में कुल 195 स्टंपिंग तथा 634 कैच अपने नाम लिखने वाले धौनी की बराबरी शायद ही कोई और कर पाए.**

दरअसल, उन्होंने कभी सैयद किरमानी की कमी महसूस नहीं होने दी जो अच्छे विकेटकीपर होने के साथसाथ बेहतरीन बल्लेबाज भी थे. आजकल के व्यावसायिक क्रिकेट में वही टीम ज्यादा सफल होती है जिस का विकेटकीपर भरोसेमंद बल्लेबाज भी हो और मध्यक्रम में अच्छा स्कोर कर सके. महेंद्र सिंह धौनी की इसी खूबी के चलते उन का नाम विस्फोटक बल्लेबाजों में शुमार होता है जिस की शैली की दुनिया मुरीद है खासतौर से उन का हैलिकौप्टर शौट जो तकनीकी रूप से मान्य किया जा चुका है, ठीक वैसे ही जैसे 70 के दशक में गुंडप्पा विश्वनाथ का स्क्यावर कट मान्य किया गया था.

## शुरुआती जिंदगी कुछ यों थी

एम एस धौनी, जिन का पूरा नाम महेंद्र सिंह पानसिंह धौनी है, रांची, तब बिहार अब झारखंड के एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुए थे. उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा डीएवी जवाहर विद्या मंदिर, रांची, झारखंड से पूरी की. वे बैडमिंटन, फुटबौल व क्रिकेट में पारंगत हैं. धौनी एक लोकल क्लब के लिए फुटबौल खेलते थे जिस में वे गोलकीपर थे. परंतु यह क्रिकेट था जिस में धौनी की अद्भुत विकेटकीपिंग स्किल्स को देखते हुए उन्हें क्रिकेट की तरफ जाने की सलाह दी गई. उन्होंने 1995-98 में कमांडो क्रिकेट क्लब के लिए विकेटकीपिंग की और वीनू मांकड़ ट्रौफी अंडर-16 के लिए 1997-98 सैशन के लिए चुने गए. इस

के बाद हाईस्कूल से ही धौनी ने सिर्फ क्रिकेट पर फोकस किया.

वे न तो तो बहुत साधनसंपन्न थे और न ही उन्हें यह मालूम था कि भारतीय टीम में जगह बनाने के लिए कैसेकैसे पापड़ बेलने पड़ते हैं लेकिन धुन के पक्के धौनी की लगन उन्हें उस मुकाम तक ले ही गई जहां पहुंचना हरेक भारतीय युवा क्रिकेटर का सपना होता है. क्रिकेट में उन का कोई गौडफादर नहीं था लेकिन अपने प्रदर्शन के दम पर उन्होंने हमेशा चयनकर्ताओं का ध्यान अपनी तरफ खींचा और टीम में न केवल जगह बनाई बल्कि हर बार खुद को साबित भी किया. धौनी ने साबित यह भी किया कि क्रिकेट मुंबई, दिल्ली या दक्षिणी राज्यों के खेमेबाजी से परे बिहार व झारखंड जैसे पिछड़े राज्यों में भी शिद्दत से खेला जाता है और हिंदीभाषी राज्यों से भी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभाएं निकलती हैं.

फिल्म 'एम एस धौनी : द अनटोल्ड स्टोरी' धौनी के जीवन पर बनी सुपरहिट बौलीवुड फिल्म है जिसे देख सभी इतना तो जान गए थे कि धौनी का शुरुआती जीवन कितना कशमकश और उतारचढ़ाव भरा रहा. फिल्म के धौनी की तरह ही असल जिंदगी के धौनी ने 2001–2003 तक रेलवे में ट्रैवलिंग टिकट एग्जामिनर का काम किया लेकिन उन का दिल क्रिकेट की ओर जाने के लिए तड़प रहा था. धौनी ने अपने दिल की सुनी और जिंदगी का सब से बड़ा जोखिम उठाते नौकरी छोड़ अपने क्रिकेटर बनने के सपने को पूरा करने निकल गए.

अपने कैरियर के शुरुआती दौर में जब धौनी भारतीय क्रिकेट टीम में पैर जमाने की कोशिश में लगे थे तभी उन की मुलाकात प्रियंका झा से हुई.

फिल्म में दिखाया गया है कि साल 2002 में प्रियंका की एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई, ये उन की जिंदगी के टूटन के दिन थे लेकिन शायद क्रिकेट के जनून के साथसाथ प्रियंका की यादों ने उन्हें बिखरने नहीं दिया और इस में उन के साथ रहीं उन की पत्नी साक्षी जो अभी तक उन का साथ निभाते हर तरह से उन का खयाल रखती हैं. 4 जुलाई, 2010 में धौनी ने साक्षी रावत से शादी कर ली. यह धौनी के जीवन का वह समय था जब वे टीम इंडिया के कप्तान बन चुके थे और अपने कैरियर के शिखर पर थे.

इसी दौर में उन के प्रशंसकों की तादाद बढ़ी जिन्होंने जाना कि शर्मीले स्वभाव के धौनी तरहतरह की बाइकों के शौकीन हैं और कंधे तक झूलते उन के बाल उन्हें बेहद आकर्षक बनाते हैं. अब तक वे युवाओं के रोलमौडल बन चुके थे और उन के मैदान पर आते ही सनाका खिंच जाता था. स्लौगओवर्स के रोमांच में उन की तूफानी बैटिंग दर्शकों की सांसें रोक देती थीं और दिलचस्प बात यह है कि आखिरी ओवरों में जब भी वे बल्लेबाजी के लिए आए तो 80 फीसदी मैचों में देश को जीत दिलाई. संन्यास की उन की घोषणा सुन कर लोगों के उन्हें याद करने की यह बड़ी वजह है.

2015 में धौनी की बेटी जीवा का जन्म हुआ जिस समय धौनी विश्वकप खेलने के लिए जा चुके थे. धौनी ने कहा, "मैं नैशनल ड्यूटी पर हूं, अन्य चीजें इंतजार कर सकती हैं." यह कह कर माही ने एक बार फिर देश का दिल जीत लिया था.

धौनी पर कप्तान होने के नाते कई बार खिलाड़ियों को निजी कारणों से टीम से निकालने या टीम में शामिल न करने के इलजाम भी लगे हैं. इन में से कितने सच

## रैना का भी यही है कहना

महेंद्र सिंह धौनी के साथ ही औलराउंडर सुरेश रैना ने भी अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह दिया. धौनी जहां विश्वकप 2019 के सैमीफाइनल मुकाबले के बाद से मैदान में नहीं दिखे तो वहीं सुरेश रैना ने भी टीम इंडिया में वापसी के लिए कोशिश की, पर जगह नहीं बना पाए.

चेन्नई सुपरकिंग्स के फैंस के बीच 'चिन्ना थाला' नाम से मशहूर रैना ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक फोटो शेयर की और फोटो का कैप्शन दिया, 'माही आप के साथ खेलना अच्छा था. पूरे दिल से गर्व के साथ मैं आप की इस यात्रा में शामिल होना चाहता हूं. थैंक यू इंडिया. जय हिंद.'

अपने कैरियर में 18 टैस्ट, 226 एकदिवसीय मैच और 78 टी-20 इंटरनैशनल खेलने वाले रैना का कैरियर शानदार रहा. टैस्ट में जहां उन्होंने एक शतक के साथ 768 रन बनाए तो वनडे में 5 शतकों के साथ 5,615 रन जोड़े. सुरेश रैना पहले ऐसे बल्लेबाज हैं जिन्होंने तीनों फौर्मेटों यानी टैस्ट, वनडे और टी-20 में शतक लगाया है. दूसरी पारी के लिए बधाई 'मिस्टर धाकड़.'

हैं कितने झूठ, यह नापने का कोई पैमाना नहीं, लेकिन, भारतीय क्रिकेट के इस कड़वे सच का शिकार वे खुद भी हो चुके थे. यह और बात है कि हर बार वे अपनी प्रतिभा और टीम में उपयोगिता के चलते वापस लिए गए.

धौनी ने ऐसे वक्त में संन्यास लिया है जब कोरोना के कहर के चलते तमाम अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं पर अनिश्चितता का साया है और सुशांत सिंह राजपूत की मौत का बवंडर देशभर में मचा हुआ है. गौरतलब है कि सुशांत ने 'एम एस धौनी – द अनटोल्ड स्टोरी' फिल्म में धौनी का किरदार बड़े सधे ढंग से निभाया था और इसी फिल्म से उन्हें पहचान भी मिली थी. सुशांत की मौत से वे भी कम आहत नहीं हैं.

धौनी के संन्यास के फैसले का स्वागत किया जाना चाहिए क्योंकि वे लंबा क्रिकेट खेल चुके हैं और उम्रजनित थकान का भी शिकार होने लगे हैं. देखना दिलचस्प होगा कि क्या कोई नया खिलाड़ी धौनी की जगह भर पाएगा जो विकेट कीपिंग के साथसाथ बल्लेबाजी में भी माहिर हो.

निश्चितरूप से धौनी की कमी मैदान और टीम दोनों में खलेगी लेकिन यह भी सच है कि कोई भी खिलाड़ी हमेशा नहीं खेल सकता. पुराने का जाना और नए का आना भी खेल का हिस्सा है. पर, महेंद्र सिंह धौनी की बात और है जो पल दो पल के नहीं, बल्कि दशकों के क्रिकेटर हैं जिन के बारे में दिलचस्पी की नई बात उन के राजनीति में आने की अटकलें हैं. भाजपा भी उन पर डोरे डाल रही है और हेमंत सोरेन के जरिए कांग्रेस भी उन्हें घेरने की कोशिश कर रही है. देखना दिलचस्प होगा कि खुद को वे राजनीति के आकर्षण से मुक्त रख पाते हैं या नहीं. ●

# रक्षा उत्पादों पर विदेशी निर्भरता क्यों

आत्मनिर्भरता के माने अगर केवल मंदिर बनाना है तो हम आत्मनिर्भर हो गए हैं लेकिन रक्षा उत्पादों के मामले में विदेशों की मुहताजी हमें महंगी पड़ रही है.

केंद्र सरकार का फैसला कि अब डिफैंस इक्विपमैंट का आयात प्रतिबंधित कर दिया गया है, अगस्त के दूसरे सप्ताह में सुर्खियां बना. कोई समाचार सुर्खियां तब बनता है जब उस की घोषणा किसी प्रैस सम्मेलन में की गई हो और उस का व्यापक असर होता हो, जैसा चीनी टिकटौक जैसे ऐपों पर प्रतिबंध लगाने के समय हुआ.

यह समझ से परे है कि जब केंद्र सरकार ही हथियार खरीदती है तो इस की घोषणा से क्या लाभ? यह संदेश किस दिशा जा रहा है? कहीं ऐसा तो नहीं कि सेना में खरीद बिना केंद्र सरकार की अनुमति से दिए गए फंड से कोई भी अधिकारी कर सकता है और देशी उत्पादकों से ही नहीं, विदेशी उत्पादकों से भी रक्षा सामान मंगा सकता है.

दुनिया के कई देश ऐसे हैं जहां सैनिक अधिकारी नागरिक नियमों को मानते ही नहीं हैं और एक बार उन्हें फंड मिला नहीं कि वे उसे मनमाने ढंग से व्यय करने लगते हैं. ज्यादातर देशों में रक्षा सौदों में कोई जांच कमेटी नहीं बैठती और न ही बाहरी और्डर होता है. अगर इक्कादुक्का पत्रकार कुछ पोल खोल दें, तो उन्हें धमका दिया जाता है. सेना की ताकत अदालतों और पुलिस से भी ज्यादा ही है सारे देशों में, यहां तक कि अमेरिका में भी.

## देश में बने रक्षा सामान

भारत में ही रक्षा सामान बने, यह सपना भारत सरकार 70 सालों से देख रही है पर जो भी कारखाने लगे उन्होंने, वैसे तो, बहुत पैसे खर्च कराए पर नतीजा कुछ नहीं निकला. भारत राइफलें तक

खुद नहीं बनाता. जो थोड़ाबहुत सामान बनता है वह भी विदेशी कंपनियों के लाइसैंस पर बनता है और उस की विदेशों में बिक्री मूल कंपनी पर निर्भर करती है.

भारतीय कंपनियां सेना का सामान तो क्या बनाएंगी जब साइकिल तक हम अपनेआप नहीं बना पाते. साइकिल उत्पादन करने वाली कंपनियां कितनी ही मशीनें विदेशों से मंगाने को मजबूर हैं क्योंकि जो तकनीक हमारे पास है वह जुगाड़ू किस्म की है.

---

एक पूरी साइकिल तो हम बना नहीं सकते, फिर ऊंची तकनीक वाले हथियार बनाना सपना ही है.

अगर भारत सरकार का फैसला देश में ऐसा ही माहौल पैदा कर दे जैसे राममंदिर निर्माण के लिए पैदा हुआ है तो बात दूसरी. वैसे, राममंदिर के लिए भी जिन मशीनों की जरूरत खुदाई के लिए होगी वे मुख्यतया जेसीबी कंपनी की हैं जो कि ब्रिटिश उत्पादक जोसेफ सायरिल बमफोर्ड ने शुरू की थी और भारत में बड़ी कंपनी की मालिक है.

रक्षा उत्पाद आज बेहद नई तकनीक वाले हो गए हैं और कंप्यूटरों, सैटेलाइटों, सिमकार्डों, सौफ्टवेयरों पर चलते हैं. इन का निर्माण आसान नहीं है. यह थाली बजाने जैसा काम नहीं है कि हल्ला किया और हो गया. बाबरी मसजिद तोड़ी जा सकती है पर रक्षा के लिए टैंक, हवाई जहाज, रडार, मिसाइल, रौकेट लौंचर, सर्विलांस इक्विपमैंट बनाना आसान नहीं है. उम्मीद करें कि आयात न होने से हमें चेतना आएगी और हम जाग कर खुद बनाना शुरू करेंगे पर यह डर भी है कि कहीं 1962 की तरह हम पिछड़े न रह जाएं जब अमेरिका से आननफानन हथियार खरीदे गए थे. **-प्रतिनिधि** ●

# भारत भूमि युगे युगे

## ...जुलाहों में लट्ठमलट्ठा

सपा प्रमुख अखिलेश यादव एक पौराणिक पात्र विष्णु के छठे अवतार, घोर शूद्रविरोधी परशुराम के बारे में उतना ही जानते होंगे जितना कि आम लोग जानते हैं. मसलन, वे ब्राह्मणों के आराध्य हैं जिन्होंने अपने ब्राह्मण पिता जमदग्नि की आज्ञा का पालन करते हुए कथित व्यभिचारिणी क्षत्रिय मां रेणुका को मार डाला था और

मुद्दे की बात, 21 बार पृथ्वी क्षत्रियविहीन कर दी थी. इधर उत्तर प्रदेश के नामी गुंडे विकास दुबे के एनकाउंटर के बाद बसपा और सपा का नाराज ब्राह्मणों के प्रति प्रेम उमड़उमड़ पड़ रहा है. अखिलेश यादव ने तो बाकायदा ऐलान कर दिया है कि अगर वे सत्ता में आए तो लखनऊ में 108 फुट ऊंची और प्रदेश के हर जिले में परशुराम की मूर्तियां लगाई जाएंगी.

इस मूर्ति से प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के क्षत्रिय होने से इस महान और 'विकास' शील घोषणा का गहरा संबंध उजागर हो पाता, इस के पहले ही मायावती भी यह कहते कूद पड़ीं कि बसपा सत्ता में आई तो न केवल परशुराम, बल्कि सभी जातियों के आराध्यों के नाम पर अस्पताल वगैरह बनवाए जाएंगे. न सपा के और न ही बसपा के सरकार में आने के कोई आसार हैं और अगर वे आईं भी, तो ब्राह्मणों का तो विरोध ही होगा. इसे ही कहते हैं, सूत न कपास और...

## मामा का ड्रैसकोड

हुआ यों कि वीडियो कौन्फ्रैंसिंग के जरिए एक समीक्षा बैठक कर रहे मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान मंदसौर के एक फौरेस्ट अधिकारी को टीशर्ट पहने देख भड़क गए और सभी

अधिकारियों को शालीन, औपचारिक व गरिमापूर्ण परिधान पहनने का फरमान सुना डाला. उक्त तीनों गुणों से युक्त परिधान का विवरण संविधान में तो कहीं है नहीं, इसलिए बेचारे अधिकारी हैरानपरेशान हैं कि क्या पहनें जिस से शासन और प्रशासन दोनों खुश रहें.

अधिकारियों को चाहिए कि वे धोती और कुरता पहनें जो भगवा या पीला हो

तो पदोन्नति जल्द मिलेगी और तबादले के कहर से भी बचे रहेंगे. ज्यादा स्मार्ट दिखने के लिए वे माथे पर तिलक भी लगा सकते हैं व कलाई पर कलावा भी बांध सकते हैं. कान पर जनेऊ लटकाए रखने और जूतों की जगह खड़ाऊ पहनने से उन्हें बिना किसी टोनेटोटके के मलाईदार महकमा भी मिल सकता है.

## मिसाल बने जगरनाथ

झारखंड के शिक्षामंत्री जगरनाथ महतो ने बोकारो के इंटर कालेज में 11वीं कक्षा में नियमित दाखिला ले कर उन नेताओं को एक दिलचस्प चुनौती पेश कर दी है जो कम पढ़ेलिखे हो कर खुद को ग्रेजुएट और पोस्टग्रेजुएट बताते हैं. डुमरी सीट से चुने गए 52 वर्षीय जगरनाथ परिस्थितियों के चलते 10वीं के बाद पढ़ाई जारी नहीं रख पाए थे. जब हेमंत सोरेन ने उन्हें शिक्षामंत्री

बनाया था तो कइयों ने यह तंज कसा था कि ये शिक्षा के लिए क्या कर पाएंगे.

आहत जगरनाथ इन तानों से हताश नहीं हुए और आगे पढ़ने का फैसला ले कर बकने वालों के मुंह सिल रहे हैं. इस हिम्मत के बाबत वे एक जोरदार सैल्यूट के हकदार तो हैं जो यह साबित कर रहे हैं कि ड्रौपआउट्स को पढ़ाई के लिए झिझकना नहीं चाहिए.

## राजस्थान का राजीनामा

जिस तूफानी अंदाज में राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और सचिन पायलट में कलह शुरू हुई थी, उस का सहजता से सुलझना वाकई हैरत की बात है क्योंकि कांग्रेस कुटुंब न्यायालय का यह स्थगन आदेश टैंपररी है, परमानैंट नहीं. सुकून की बात यह है कि बालीसुग्रीव में सुलह हो गई है और मध्य प्रदेश की तरह कांग्रेस कुनबा बिखरने से बच गया है. हालांकि, यह कहना मुश्किल है कि यह सुलह कितने दिन कायम रह पाएगी. बकौल रहीम, प्रेम के धागे में गठन तो पड़ ही गई है, इसलिए आने वाले दिन और दुश्वारियों भरे होंगे.

गहलोत और पायलट दोनों के अपने स्वार्थ भी हैं. एक को मुख्यमंत्री बने रहना है तो दूसरे को भी पावर की दरकार

है, इसलिए दोनों अपनी खिसियाहट मिटाने के लिए भाजपा को दोष दे रहे हैं कि वह फूट डाल रही थी और ये मासूम गऊ बने फूट का चारा निगलते सासबहू की तरह झगड़ रहे थे. मध्य प्रदेश की बात और थी जहां मामला इसलिए नहीं सुलझ पाया था कि बहू एक थी और खुर्राट सास 2-2 थीं.

**-भारत भूषण श्रीवास्तव ●**

# डौलर पर लगी लाल आंख अमेरिका बेबस

• एस ए जैदी

अमेरिका से सुपरपावर का ताज छीनने की मुहिम में जुटे चीन ने डौलर पर अपनी लाल आंखें गड़ा ली हैं. दुनिया की अर्थव्यवस्था में उस की शक्ति व प्रभुत्व को कम करने के लिए ड्रैगन को अपनी मुहिम में सफलता मिलती भी दिख रही है.

दुनिया का 85 फीसदी व्यापार अमेरिकी डौलर की मदद से होता है. दुनियाभर के 39 फीसदी कर्ज अमेरिकी डौलर में दिए जाते हैं और कुल डौलरों की संख्या के 65 फीसदी का इस्तेमाल अमेरिका के बाहर होता है. इसलिए विदेशी बैंकों और देशों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में डौलर की जरूरत होती है. हालात ऐसे हैं कि यदि कोई डौलर का नाम लेता है तो लोगों के दिमाग में सिर्फ अमेरिकी डौलर ही आता है, जबकि विश्व के कई देशों की करैंसी का नाम भी 'डौलर' है. अर्थात, अमेरिकी डौलर ही 'वैश्विक डौलर' का पर्यायवाची बन गया है.

डौलर की मजबूती के घमंड में चूर अमेरिका की इस करैंसी की चूलें अब हिलने लगी हैं. खुद अमेरिकी कह रहे हैं कि डौलर का भविष्य अंधकारमय नजर आ रहा है. वजहें कई हैं. एक वजह खुद अमेरिका के मौजूदा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप हैं जिन की नीतियां नुकसानदायक साबित हुई हैं. वहीं, रूस और चीन अमेरिकी डौलर को चुनौती देने में जुटे हैं.

## डौलर का पतन निकट

मौर्गन स्टेनली के पूर्व मुख्य अर्थशास्त्री स्टीफन रोच का कहना है कि अमेरिका के कई बड़े बैंकों की संस्थाओं ने यह संभावना व्यक्त की है कि जारी वर्ष के अंत तक या नए साल के आरंभ में अमेरिकी डौलर का पतन हो जाएगा.

अमेरिकी अर्थशास्त्री स्टीफन रोच ने सीएनबीसी के ट्रेडिंग नेशन चैनल से बातचीत में कहा, "इस बात की बहुत संभावना है कि डौलर के मूल्य में वर्ष 2021 में 35 प्रतिशत तक कमी आ जाएगी." रोच इस बात पर जोर देते हैं कि अमेरिकी समाज में राजनीतिक दुर्भावना और स्थानीय विभाजन के मामलों में आई तीव्रता 60 के दशक के बाद से सब से ज्यादा खतरनाक मोड़ पर है. साथ ही, कोरोना वायरस महामारी से निबटने में मिली असफलता ने अमेरिकी समाज के आत्मविश्वास को ठेस पहुंचाई है जिस का सीधा असर अमेरिका की अर्थव्यवस्था और डौलर पर हुआ है.

## चीनी और रूसी चुनौती

चीन और रूस ने एक नई वैश्विक मुद्रा की मांग की है. वे चाहते हैं कि दुनिया के लिए एक रिजर्व मुद्रा बनाई जाए जो किसी एकलौते देश से अलग हो और लंबे समय तक स्थिर रहने में सक्षम हो.

चीन चाहता है कि उस की मुद्रा 'युआन' वैश्विक विदेशी मुद्रा बाजार में व्यापार के लिए व्यापक तरीके से इस्तेमाल हो. अर्थात, चीन वैश्विक मुद्रा के रूप में अमेरिकी डौलर के स्थान पर युआन को इस्तेमाल होते देखना चाहता है.

रूस व चीन ने डौलर में आपसी व्यापार 50 फीसदी कम कर अमेरिका को लाल आंख दिखाते हुए अमेरिकी डौलर की भागीदारी 50 फीसदी तक कम कर दी है. रशा टूडे की रिपोर्ट के अनुसार, जारी वर्ष की पहली तिमाही में रूस और चीन के बीच व्यापार में पहली बार डौलर का हिस्सा 50 फीसदी से कम रहा है. रूस और चीन ने आपसी व्यापार से डौलर को खत्म करने के लिए कई चरण की वार्त्ता की थी और उस के बाद अब दोनों देश क्रमबद्ध तरीके से अपने व्यापार से डौलर को खत्म करते जा रहे हैं.

## डौलर पर ड्रैगन की लाल आंख

वैश्विक अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करने में संयुक्त राज्य अमेरिका का सब से बड़ा प्रतिद्वंद्वी चीन डौलर के प्रभुत्व को खत्म करने और दुनियाभर की करैंसियों को एक तानाशाह करैंसी यानी डौलर से आजादी दिलाने का लगातार प्रयास कर रहा है. चीन की राष्ट्रीय करैंसी 'युआन' को मजबूत बनाना, उसे विश्वमुद्रा में बदलना और अमेरिकी डौलर के प्रतिद्वंद्वी के रूप में 'पेट्रोयुआन' का निर्यात करना आदि उस के इस संबंध में उठाए गए कदम हैं.

दिलचस्प बात यह है कि चीन नहीं चाहता है कि डौलर का प्रभाव पूरी तरह से खत्म हो जाए, क्योंकि चीन के पास 3 ट्रिलियन डौलर का अमेरिकी मुद्रा के

## एक रुपया जब 13 डौलर के बराबर

भौतिकवादी युग में सभी पैसे के पीछे दौड़ रहे हैं. यह दौड़ स्वाभाविक है क्योंकि पैसों के बिना कोई काम नहीं होता. भारत की करैंसी यानी रुपया आज काफी कमजोर है, कभी यही रुपया बहुत मजबूत था.

आज जो भी हो, लेकिन रुपए की कीमत का इतिहास गौरवशाली जरूर है. मौजूदा दौर में भारतीयों के मन में सवाल है कि एक डौलर के लिए हमें 74-75 रुपए क्यों चुकाने पड़ते हैं, जबकि हमारा एक रुपया कभी 13 डौलर के बराबर हुआ करता था. जान लें कि यह सच है कि भारत की आजादी के समय एक रुपया अमेरिका के एक डौलर के बराबर था.

भारत में करैंसी का इतिहास तकरीबन 2,500 साल पुराना है. वर्ष 1917 में एक रुपया, 13 डौलर के बराबर हुआ करता था. लेकिन 1947 में भारत जब आजाद हुआ, एक रुपया, एक डौलर के बराबर कर दिया गया.

आजादी के वक्त देश पर कोई कर्ज नहीं था. वर्ष 1951 में पहली बार पंचवर्षीय योजना के लिए देश की सरकार ने कर्ज लिया. तब 1948 से 1966 के बीच एक डौलर की कीमत 4.66 रुपए के आसपास रही थी. फिर धीरेधीरे रुपए की कीमत और कम होने लगी. 1975 में एक डौलर की कीमत 8.39 रुपए हो गई. इस के बाद 1985 में एक डौलर, 12 रुपए के बराबर हो गया.

लेकिन, रुपए की कीमत में गिरावट यहीं रुकी नहीं. वर्ष 1991 में बेतहाशा महंगाई, विकास दर कम होना और विदेशी रिजर्व कम होने से एक डौलर, 17.90 रुपए पर पहुंच गया. वहीं, 1993 में एक डौलर की कीमत 31.37 रुपए हो गई.

वर्ष 2000 से 2010 के दौरान एक डौलर की कीमत 50 रुपए तक पहुंच गई. वर्ष 2013 में डा. मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्रित्व काल में एक डौलर की कीमत 65.50 रुपए थी. वर्ष 2014 में भाजपाई नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्रित्व में बनी नई सरकार के दौर में रुपए में ऐतिहासिक गिरावट जारी है, आज एक डौलर 75 रुपए के करीब पहुंच गया है.

रूप में बहुत बड़ा भंडार और निवेश है जिस का अधिकतर हिस्सा अमेरिकी बौंड में निवेश किया गया है. इसलिए चीन की इस चरण में रणनीति केवल अमेरिकी डौलर के मूल्यों को सीमित करना है और वैश्विक अर्थव्यवस्था में उस की शक्ति व प्रभुत्व को कम करना है.

बहरहाल, रूस और चीन द्वारा डौलर के खिलाफ उठाए जा रहे कदम इसलिए भी सही हैं क्योंकि अमेरिका ने हमेशा से इस का इस्तेमाल अपने विरोधियों के खिलाफ एक हथियार के रूप में किया है. सीरिया, लेबनान, ईरान, तुर्की और वेनेजुएला जैसे देशों की जनता अमेरिका के आर्थिक आतंकवाद का सब से ज्यादा शिकार हुई है. यही कारण है कि आज अमेरिका का दुनिया पर से राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य वर्चस्व तेजी से कम होता जा रहा है और नई वित्तीय व सुरक्षा प्रणाली तेजी से आगे बढ़ती जा रही है. ●

मेरी बेटी की 5 वर्षीय बेटी प्राची बहुत ही तेज और हाजिरजवाब है. एक दिन जब दोनों मांबेटी हमारे घर आई हुई थीं तो मैं ने कहा कि प्राची तो बहुत ही मोटी है. इस से कौन शादी करेगा. तभी वह फटाक से बोली, "जब मामी की शादी मामा से हो सकती है तो मेरी भी शादी हो जाएगी."

मेरी बहू भी मोटी है. उस की इस बात पर सब खूब हंसे. **रमा गुप्ता**

मेरा छोटा बेटा आशु बचपन में बड़ा ही शरारती व हाजिरजवाब था. गरमी की शाम थी. मैं अपनी कुछ पड़ोसिनों के साथ बाहर आंगन में बैठी गपें मार रही थी. हमारे आंगन में एक बड़ा सा इमली का पेड़ था. मेरे मना करने के बावजूद आशु पेड़ की सब से ऊंची एवं पतली डाल पर चढ़ कर उसे हिला रहा था.

उसे देख कर मेरी पड़ोसिन बोलीं, "सचमुच, आप का बेटा बड़ा निडर व शरारती है." मैं बोली, "हां, आप नहीं जानतीं, यह इतना शरारती क्यों है? इस ने बचपन में लाल गाय का दूध पिया है जो बड़ी ऊधमी थी."

आशु ने मेरी यह बात सुन ली. वह वहीं से चिल्ला कर बोला, "गाय को क्यों दोष देती हो, दूध तो मैं ने आप का भी पिया है, मां."

मेरी हालत देखने लायक थी.

**अंजलि वडोला** (सर्वश्रेष्ठ)

बात रक्षाबंधन की है. हमारे घर बहुत सारे मेहमान आए थे.

मेरा बेटा अथर्व सिर्फ 19 महीने का था. हम सभी बातें करने में व्यस्त थे. मेरा बेटा हमारी शादी की तसवीरों की और उस की खुद की तसवीरों का अलबम देख रहा था. हम बातें करतेकरते फोटो भी देख रहे थे. अचानक फोटो देखतेदेखते अथर्व उठ कर खड़ा हुआ और कुछ ढूंढ़ने लगा कि हम भी परेशान हो गए कि वह अचानक क्या ढूंढ़ रहा है.

कुछ ही क्षणों में वह अपनी चड्डी (निकर) ले कर आया और नीचे फोटो पर डाल कर इशारे से हम से कहने लगा, इस फोटो को चड्डी पहनाओ.

हम ने जब फोटो देखा तो वह फोटो उस का ही था जो बगैर कपड़े का यानी कि फोटो में वह नंगा था.

हम सभी यह बात देखसुन कर खूब हंसे. **सुनील बोदड़े** ●

**आप भी भेजें**

इस स्तंभ में बच्चों के मुख से कही गई बातें भेज सकते हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.** *अपना अनुभव* ***नाम*** *व* ***पते सहित*** *आप नीचे लिखे नंबर पर* ***एसएमएस*** *या* ***व्हाट्सऐप*** *के जरिए* ***मैसेज/ औडियो*** *भी कर सकते हैं.*

**08527666772**

# रोग निरोधक क्षमता कैसे बढ़ाएं

• डा. मधुकर एस भट्ट

रोग निरोधक क्षमता अथवा इम्यूनिटी हमारे शरीर को विभिन्न रोगों से मुक्त रखती है. कोरोनाकाल में खुद को कोरोना संक्रमण की चपेट में आने से बचाने के लिए यह बेहद आवश्यक है कि हम रोग निरोधक क्षमता को बढ़ाएं और संक्रमण से बचे रहें.

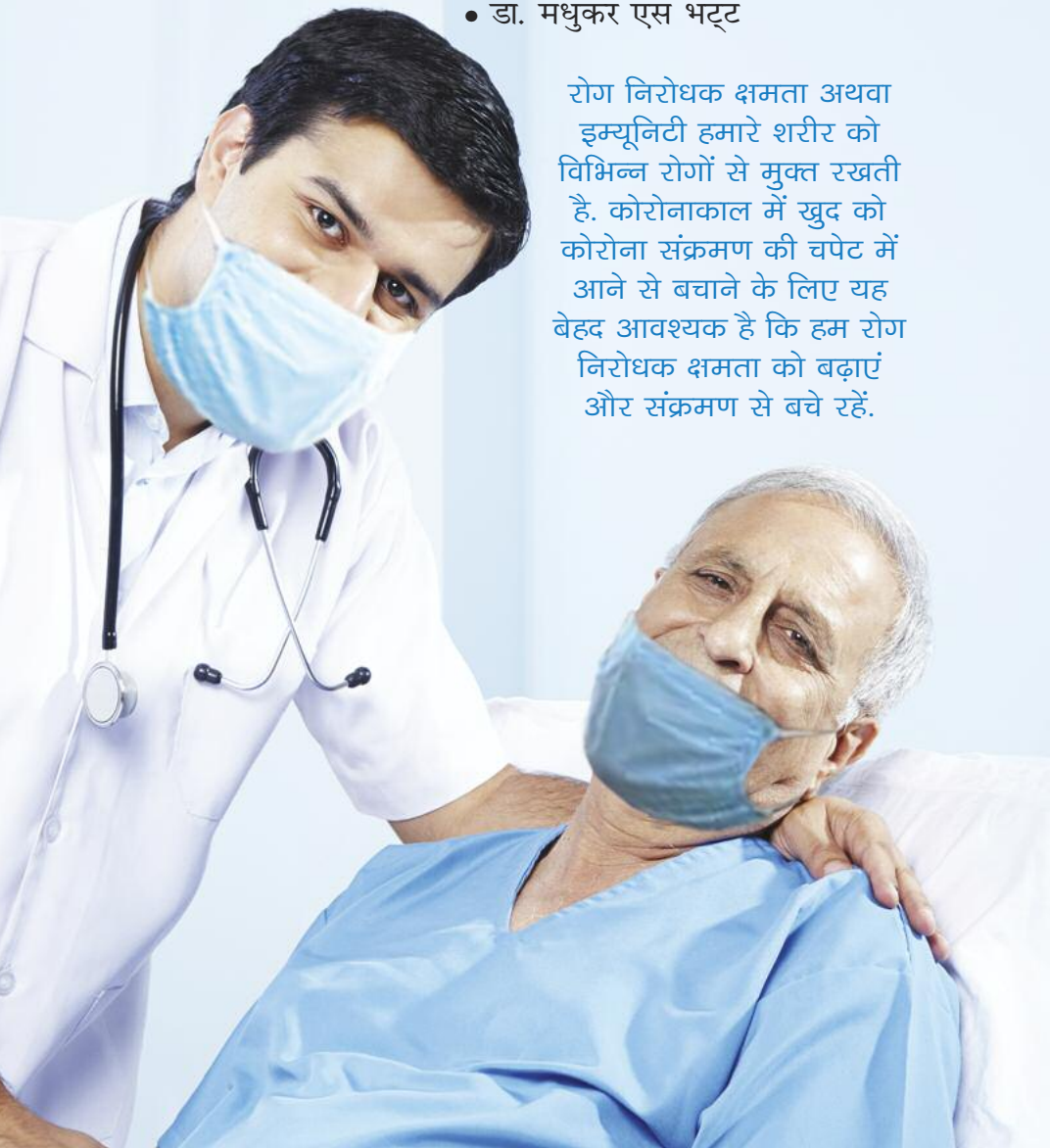

निसंदेह हमारी रोग निरोधक क्षमता ने ही एक कोशकीय प्राणी से मानव के रूप में हमारी अब तक की विकास यात्रा को सफल बनाया है. अरबों वर्षों की इस यात्रा में प्राकृतिक प्रकोपों के अलावा मानव जाति को एक से बढ़ कर एक बाह्य एवं आंतरिक दुश्मनों से निबटना पड़ा होगा. बाहरी दुश्मनों से सुरक्षा के चक्कर में ही हमारी बुद्धि के विकास ने हमें पाषाण युग से परमाणु युग तक ला खड़ा किया है. आंतरिक दुश्मनों से मेरा तात्पर्य उन सूक्ष्मजीवियों से है जो मानव शरीर को नष्ट करने वाले रोगों के कारक होते हैं. ये कई प्रकार के हो सकते हैं.

**ये सूक्ष्मजीवी असंख्य संख्या में वातावरण, जल, वनस्पति, पशु एवं मानव शरीर में विद्यमान रहते हैं और संक्रमित वायु, जल, भोजन, दूसरे पशु, मनुष्य या वनस्पति के संपर्क द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करते रहते हैं. हमारे शरीर की सुरक्षा प्रणाली इन में से ज्यादातर को मार देती है. यह युद्ध निरंतर चलता रहता है. यदि सूक्ष्मजीवियों की संख्या ज्यादा हो या व्यक्ति की सुरक्षा प्रणाली कमजोर हो, तो वे उस व्यक्ति को एक विशिष्ट संक्रामक रोग से ग्रस्त कर देते हैं.**

कई प्रकार के सूक्ष्मजीवी पशु या मानव शरीर को अपना मेजबान बना कर अड्डा जमा लेते हैं. वहां वे मेजबान को लाभ भी पहुंचा सकते हैं. लेकिन आवश्यक नहीं कि वे दूसरों के शरीर में पहुंच कर वैसा ही व्यवहार करें. वहां वे किसी गंभीर संक्रामक रोग का कारण बन सकते हैं. इतना ही नहीं, परिस्थितियां बदलने पर वे अपने मेजबान को भी नहीं छोड़ते और उन में भी संक्रामक रोगों को जन्म दे सकते हैं. ये रोग एक से दूसरे में फैल कर पूरे समुदाय को संक्रमित कर महामारी का रूप ले सकते हैं. प्रतिकूल परिस्थितियों में नष्ट होने से बचने के लिए ये अपनी संरचना बदलने में भी माहिर होते हैं. दवाओं के विरुद्ध प्रतिरोधी क्षमता भी इसी गुण के कारण इन में होती है. इन से मुकाबला करना, युद्ध के लिए ललकारते हुए बाह्य शत्रुओं से भी ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो सकता है.

अच्छी बात यह है कि इन से लड़ने के लिए हमारे विकास क्रम में शरीर के अंदर एक सुरक्षा प्रणाली यानी इम्यून सिस्टम का भी विकास हुआ है. यह सुरक्षा प्रणाली पूरे शरीर में मल व्याप्त है. रक्त की श्वेत एवं अन्य कोशिकाएं एवं प्रत्येक ऊतक या टिशू में अवस्थित स्थानीय विशिष्ट कोशिकाएं पुलिस की तरह कार्य करती हैं. शरीर के किसी भी अंग में अवांछित पदार्थ या सूक्ष्मजीवी के प्रवेश करते ही स्थानीय पुलिस कोशिकाएं उस पर आक्रमण कर देती हैं, साथ ही विशिष्ट रसायनों के स्राव द्वारा शरीर की पूरी सुरक्षा प्रणाली को खतरे की सूचना भी भेज देती हैं, और तब शरीर का पूरा सुरक्षा तंत्र उस आक्रामक को नष्ट करने में जुट जाता है.

ये पुलिस कोशिकाएं या तो स्वयं आक्रामक को खा, पचा जाती हैं या संहार के लिए विभिन्न प्रकार के अस्त्रों का निर्माण कर लेती हैं. इन अस्त्रों के कई नाम हैं, संयुक्त रूप से उन्हें इम्यूनोग्लोबिन कहा जा सकता है. इन में एंटीबौडी नामक तत्त्व बहुत महत्त्वपूर्ण है जो प्रत्येक आक्रामक के लिए अलगअलग प्रकार के होते हैं. सुरक्षा प्रणाली यदि मजबूत पड़ी तो संक्रामक तत्त्व या सूक्ष्मजीवी, शरीर को बिना हानि पहुंचाए नष्ट हो जाते हैं, अन्यथा वह व्यक्ति रोगग्रस्त या संक्रमित हो जाता है. रोग की उग्रता उस सूक्ष्मजीवी

की ताकत और रोगी की प्रतिरोधक क्षमता के अनुपात पर निर्भर करती है. इस युद्ध में निर्मित एंटीबौडी विजयी रोगी को भविष्य में एक निश्चित अवधि तक उस संक्रमण से प्राकृतिक प्रतिरक्षण क्षमता यानी नैचुरल इम्यूनिटी प्रदान करता है.

रक्त के नमूने में इन्हीं इम्यूनोग्लोबिन की पहचान द्वारा कई संक्रामक रोगों के लिए निदान विधि विकसित की गई है. संक्रामक रोगों के टीके उसी सूक्ष्मजीवी से ही वैज्ञानिक विधि द्वारा बनाए जाते हैं. टीकाकरण के कुछ वर्षों बाद वह व्यक्ति उस सूक्ष्मजीवी के विरुद्ध, एक तय अवधि के लिए प्रतिरक्षण क्षमता अर्जित कर लेता है. नए सूक्ष्मजीवी के संक्रमण के विरुद्ध रोगी के शरीर में पहले से कोई प्रतिरोधी क्षमता नहीं रहती है. उदाहरण के लिए कोविड-19 वायरस एक नए प्रकार का सूक्ष्मजीवी है. सो, हमारे शरीर की सुरक्षा प्रणाली को अभी तक इस के विरुद्ध प्राकृतिक रोग प्रतिरोधक क्षमता के विकास का अवसर नहीं मिल पाया है और न ही किसी टीके का आविष्कार हो पाया है.

## रोग निरोधक क्षमता बढ़ाना

किसी भी संक्रमण से अपने को बचाने के लिए शरीर की सुरक्षा प्रणाली को सक्षम और सुदृढ़ बना कर रखना होगा ताकि ऐसा कुअवसर आने पर उस से लड़ने की क्षमता हमारे शरीर में विद्यमान हो. रोग प्रतिरोधक क्षमता को सुदृढ़ बनाने के लिए स्वास्थ्य संबंधी कुछ नियमों का पालन आवाश्यक है, जैसे-

## अच्छी नींद

रोग निरोधक क्षमता के लिए अच्छी नींद बहुत आवश्यक है. बच्चों को उम्र के अनुसार 9 से 12 घंटे एवं वयस्कों को कम से कम 7 घंटे की नींद आवश्यक है. निद्रावस्था में शरीर की थकी हुई कोशिकाओं, अंगों एवं मस्तिष्क को विश्राम मिलता है. नींद पूरी होने के बाद वे तरोताजा हो कर फिर नई ऊर्जा के साथ सक्रिय हो जाती हैं. रात की अच्छी नींद के लिए दिन में न सोएं, विश्राम या झपकी तक ही सीमित रहें. सोने एवं जागने का समय तय रखें. सोने का कमरा, संभव हो तो, अलग रखें, जिस में टीवी कदापि न हो.

**सोने के समय प्रकाश कम होना चाहिए. हलकी ब्लू रोशनी नींद में सहायक होती है. कमरे का तापमान ज्यादा नहीं होना चाहिए. शुद्ध हवा का आवागमन आवश्यक है. सोने से कम से कम 2 घंटे पूर्व टीवी या कंप्यूटर से दूर रहें. मोबाइल फोन को सिरहाने कदापि न रखें. सोने के पूर्व हाथपैर धो कर दिन के पहने कपड़ों को बदल लें. रात्रि का भोजन हलका रखें और सोने से कम से कम एक घंटा पूर्व लें.**

जिस करवट आराम मिले, उस अवस्था में लेटने के बाद आंखें बंद कर अपना ध्यान सांस के आवागमन पर केंद्रित कर लें. बहुत ही अच्छी नींद आएगी. सूर्योदय से पूर्व जागने का समय स्वास्थ्य के लिए उत्तम माना जाता है.

## कब्ज रोग

हमारी रोग निरोधक क्षमता को कब्ज कम करता है. कब्ज की स्थिति में आंतों के अंदर तरहतरह के जीवाणु पनपते हैं और हमारी यह क्षमता उन्हीं से लड़ने में खप जाती है. शरीर क्रिया विज्ञान के अनुसार, आदत के मुताबिक दिनभर में 3 बार तक, मुलायम और बिना ताकत

लगाए शौच को सामान्य माना जाता है. शौच का समय भी निर्धारित रखें और शौच रोक कर गप या किसी दूसरे काम में न लगें. शौच टालना कब्ज को निमंत्रण देना होता है.

सवेरे आधा से एक लिटर सादा पानी कब्ज दूर करने में लाभदायक होता है. भोजन में हरी सब्जी, फल, रेशेदार खाद्य पदार्थ का सेवन कब्ज नहीं होने देता है. प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार, 200 ग्राम फल और 400 ग्राम हरी सब्जी का

नित्य सेवन सामान्य शौचक्रिया के लिए उपयोगी माना जाता है. यदि आवश्यक हो तो ईसबगोल की भूसी या चिकित्सकीय परामर्श के अनुसार अन्य दवा ले सकते हैं. ध्यान दें कि यदि शौचक्रिया में या उस के रंगरूप में किसी प्रकार का परिवर्तन लगातार बना रहे, विशेषकर वयस्क व्यक्ति में, तो चिकित्सक की सलाह अवश्य लें.

## व्यायाम

शरीर को चुस्तदुरुस्त रखने के साथ ही रोग निरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए व्यायाम अत्यंत आवश्यक है. अपनी उम्र और शक्ति के अनुसार व्यायाम नियमानुसार करें. भोजन के तुरंत बाद नहीं करना चाहिए. वयस्क व्यक्ति सुरक्षित स्थान पर, जैसे छत, आंगन या परिसर में सवेरे या शाम या दोनों समय कम से कम आधा घंटा अवश्य टहलें. सड़क पर कभी न टहलें. मोटर वाहन के धुएं से प्रदूषित हवा में सांस लेनी पड़ती है, साथ ही साथ दुर्घटना होने की भी संभावना रहती है.

## पोषाहार

हमारी सुरक्षा प्रणाली की मजबूती हमारे पोषण स्तर पर निर्भर करती है. पुलिस कोशिकाओं की मारक क्षमता बढ़ाने के लिए और इम्यूनोग्लोबिन के निर्माण के लिए हमारे शरीर में सभी पोषक तत्त्वों से युक्त पोषाहार आवश्यक है. भोजन में विटामिन सी विशेषकर और अन्य सभी विटामिनों एवं खनिजों के लिए हरी सब्जियों, स्थानीय फल जैसे पपीता, अमरूद, तरबूज, नीबू, अंकुरित अनाज इत्यादि आवश्यक हैं. इम्यूनोग्लोबिन के निर्माण के लिए प्रोटीन अत्यंत आवश्यक है, जो सभी प्रकार की दाल, बीन्स और दूधदही या पनीर, उबले अंडे में भरपूर होता है. आंतों के अंदर दूषित भोजन और पानी के माध्यम से पहुंचने वाले सूक्ष्मजीवियों से सुरक्षा के लिए दही अत्यंत लाभदायक माना जाता है. कारण, दही के जीवाणु लैक्टोबेसिलस इन्हे मारने में सक्षम होते हैं. सवेरे एक घंटा धूप के सेवन से विटामिन डी की आवश्यकता पूरी हो जाती है. 4-5 बादाम और अखरोट का सेवन बहुत उपयोगी माना जाता है. अम्लीय भोजन से परहेज करना चाहिए. वृद्धावस्था में चिकित्सकों की सलाह से कुछ विटामिन और खनिजयुक्त दवाओं का प्रयोग करना लाभप्रद हो सकता है.

## जल ही जीवन है

हमारे शरीर का 60 फीसदी भाग जल से निर्मित है. बहुत से खनिज और लवण, विशेषकर सोडियम और पोटैशियम, शरीर को जल के माध्यम से ही मिलते हैं. जल की मात्रा समुचित रहने से रक्त का संचार सही रहता है और केवल रोग प्रतिरोधक प्रणाली ही नहीं, बल्कि प्रत्येक अंग ठीक से कार्य करता है. एक बात ध्यान देने की है कि आजकल आरओ के पानी का चलन हो गया है. इस पानी में खनिज एवं लवण भी छन जाते हैं. डीप

ट्यूबवैल या सुरक्षित गहरे कुएं का मीठा पानी स्वास्थ्य के लिए ज्यादा उपयोगी माना जाता है.

गरमी के दिनों में 24 घंटे में कम से कम 3 लिटर पानी अवश्य पीना चाहिए. अन्य पेय पदार्थों को इस में जोड़ा जा सकता है. पसीना ज्यादा होने पर मात्रा ज्यादा कर देनी चाहिए. सादा पानी या कमरे के तापमान का पानी ज्यादा लाभदायक माना जाता है. वरिष्ठ नागरिकों को शाम 7 बजे के बाद ज्यादा पानी न पीने की सलाह दी जाती है, कारण, उन्हें रात में बारबार उठना पड़ सकता है. ऐसी स्थिति में उन्हें चिकित्सक की सलाह अवश्य लेनी चाहिए.

## चीनी

चीनी को स्वास्थ्य के लिए सदा से नुकसानदायक माना जाता रहा है. संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि ज्यादा चीनी या मिठाई का सेवन शरीर को अन्य नुकसान पहुंचाने के अलावा रोग निरोधक क्षमता भी कम करता है. गुड़ एक सीमा तक, विशेषकर बच्चों और महिलाओं में लाभप्रद हो सकता है, लेकिन मोटापा, मधुमेह, ब्लडप्रैशर, दिल की बीमारी आदि से ग्रस्त रोगियों को परहेज करना चाहिए. ज्यादा चीनी का सेवन रक्त को अम्लीय बना कर रोग निरोधक क्षमता कम करता है. चाय या कौफी बिना चीनी की लें. ध्यान रहे कि ज्यादा शुगरफ्री टेबलेट भी गुरदे के लिए नुकसानदेह होती हैं.

## नशा निषेध

धूम्रपान बिलकुल नहीं, कारण, यह फेफड़े को कमजोर बनाता है, साथ ही, रोग निरोधक क्षमता पर भी कुप्रभाव डालता है. श्वसन तंत्र पर आक्रमण करने वाले सूक्ष्मजीवियों से ऐसे व्यक्ति आसानी से शिकार होते हैं. कोरोना के प्राप्त आंकड़ों में पुरुष रोगियों का अनुपात ज्यादा होने का कारण इसे ही माना जाता है. इस के अलावा तंबाकू, शराब एवं अन्य नशीले पदार्थों का सेवन रोग निरोधक क्षमता को कम करता है.

## मोटापा

मोटापा कई रोगों को निमंत्रण देता ही है, साथ ही, रोग निरोधक क्षमता को कम भी करता है. मोटापे का निदान बौडी मास

इंडैक्स यानी बीएमआई की गणना द्वारा आप स्वयं कर सकते हैं. बीएमआई अर्थात वजन किलोग्राम में, कद मीटर में, यानी 70 किलो वजन और 1.50 मीटर कद वाले व्यक्ति के लिए बीएमआई – 50/1.502=26.66. यह मूल्यांक 18.5 से 24.9 तक सामान्य, 18.5 से कम दुबलापन, 25 से 29.9 तक मोटापन और 30 से ज्यादा मोटापा रोग यानी ओबेसिटी माना जाता है. मोटापा आवश्यकता से ज्यादा या गरिष्ठ भोजन से या थायराइड हार्मोन की कमी से भी हो सकता है.

**वजन को नियंत्रण में रखने के लिए भोजन की मात्रा एवं गरिष्ठता, दोनों पर ध्यान रखना आवश्यक है. वे व्यक्ति जिन की सक्रियता आयु के कारण कम हो गई है, मुख्य भोजन की मात्रा भी कम करें. साथ ही, 2 बार लें. वे तैलीय पदार्थों एवं मिठाई पर भी नियंत्रण अवश्य रखें. बीच में फल या हलकी चीजें, जैसे परमल आदि ले सकते हैं. मोटापा रोग के लिए चिकित्सक की सलाह लें.**

दुबलापन भी रोग निरोधक क्षमता को कम कर सकता है. यह अनावश्यक आहार नियंत्रण यानी डाइटिंग या पोषाहार की कमी से हो सकता है. वजन का अचानक घटना किसी गंभीर रोग, जैसे टीबी, कैंसर, मधुमेह, एड्स, थायराइड की अति क्रियाशीलता आदि के कारण हो सकता है. इन परिस्थितियों में चिकित्सक की सलाह लें.

## पुराने रोग

पुराने रोग से ग्रस्त व्यक्ति, जैसे मधुमेह, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, गुरदे या लिवर की बीमारी, रक्त अल्पता, टीबी, एचआईवी, कैंसर आदि से संक्रमित या कोर्टिसोन या एंटी कैंसर दवा लेने वाले व्यक्तियों की रोग निरोधक क्षमता कम रहती है. सो, उन्हें निरंतर अपने चिकित्सक के संपर्क में रह कर इन रोगों को नियंत्रण में रखना आवश्यक है.

## मानसिक शांति

मानसिक शांति या संतुलन का अभाव रोग निरोधक क्षमता को कम करता है. तनाव से कोर्टिसोन हार्मोन का स्राव बढ़ जाता है जो रोग निरोधक क्षमता को कम करता है. काम, क्रोध, मद, लोभ एवं भय या आशंका को सदा नियंत्रण में रखना ही चाहिए. टीवी के कुछ सनसनीखेज या अनावश्यक भय फैलाने वाले समाचार चैनल, अफवाहयुक्त व्हाट्सऐप नोटिफिकेशन या मैसेज तनाव बढ़ा देते हैं, कृपया इन से बच कर रहें. मानसिक शांति के लिए नियमित व्यायाम आवश्यक है. अवकाशप्राप्त व्यक्ति निष्क्रियता से बचने के लिए अपनी हौबी को जागृत कर समय का सदुपयोग करें, जैसे किताब पढ़ना, चित्रकारी, संगीत, वाद्य यंत्र बजाना, कविता या कहानी लिखना आदि.

अपनी दिनचर्या में ऋतुचर्या का पालन करें और घरेलू सामग्रियों द्वारा बनाए काढ़े का प्रयोग लाभप्रद हो सकता है.

इन सुझावों पर अमल करने से हमारी रोग निरोधक क्षमता निश्चय ही सुदृढ़ होगी. जिस प्रकार हम ने अपनी इस क्षमता के बल पर अन्य संक्रामक रोगों, जैसे स्वाइन फ्लू, डेंगू, चिकनगुनिया, एड्स आदि के साथ जीना सीख लिया है उसी प्रकार वर्तमान कोरोना संक्रमण के कारगर उपचार निकलने तक उस के साथ जीना सीखना होगा. ●

# औनलाइन क्लासेज
## शिक्षा का मजाक

• सौमित्र कानूनगो

शिक्षा का व्यापारीकरण होते तो हम सभी ने बीते कई सालों में देखा है लेकिन अब जो हो रहा है वह केवल व्यापारीकरण भर नहीं है. महामारी में बच्चों को औनलाइन शिक्षा देना अच्छा सुनाई पड़ता है, परंतु असमृद्ध परिवारों के लिए यह एक नई महामारी के जन्म जैसा है.

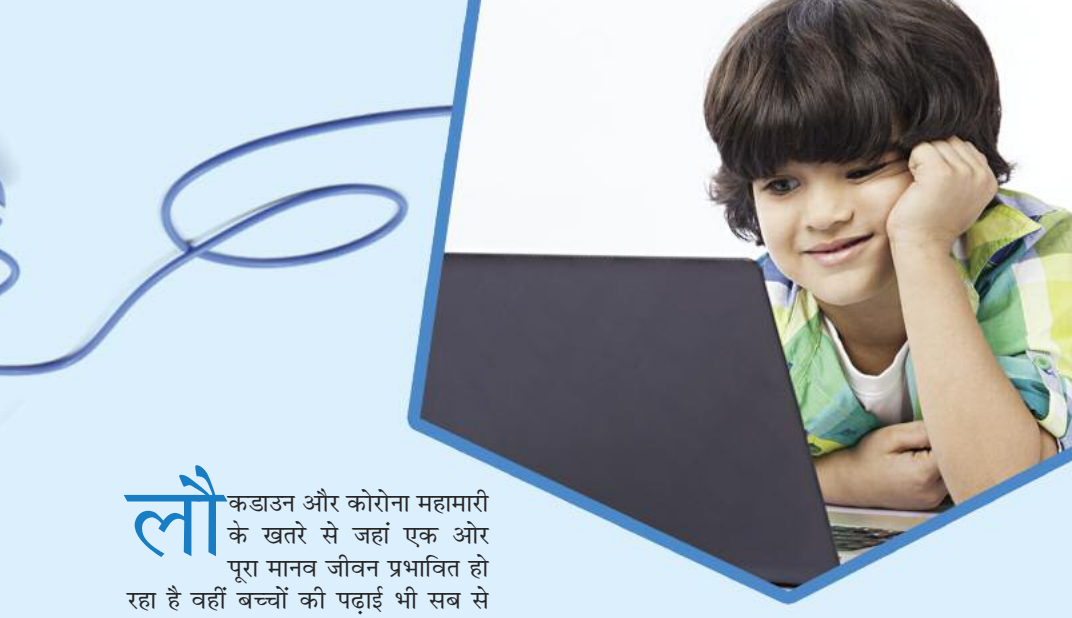

लौकडाउन और कोरोना महामारी के खतरे से जहां एक ओर पूरा मानव जीवन प्रभावित हो रहा है वहीं बच्चों की पढ़ाई भी सब से ज्यादा प्रभावित होती नजर आ रही है. मार्च में लौकडाउन लागू किए जाने के बाद से ही देश के शिक्षण संस्थान बंद हैं और पढ़ाई के लिए बच्चे अब औनलाइन एजुकेशन पर निर्भर हैं.

**महामारी के खतरे को देखते हुए हमारे देश के विद्यार्थियों के लिए औनलाइन एजुकेशन एक अच्छा रास्ता है. लेकिन जहां हमारे देश में लगभग 70 प्रतिशत लोग ग्रामीण क्षेत्र में रहते हैं और उन के पास लैपटौप या मोबाइल जैसी सुविधा भी नहीं होती है, वहां रहने वाले विद्यार्थी औनलाइन शिक्षा कैसे ले पाएंगे?**

उत्तर प्रदेश के नोएडा शहर के सरकारी विद्यालय में पढ़ाने वाली शिक्षिका शुभ्रा बनर्जी बताती हैं, "हमारे यहां 99 प्रतिशत बच्चे इतने समर्थ नहीं हैं कि उन के पास लैपटौप या उन के घर पर वाईफाई की सुविधा हो. कई बच्चों के घरों में फोन भी एक ही है, उस में भी कुछ ही बच्चों के पास स्मार्टफोन है, बाकी बच्चों के पास स्मार्टफोन भी नहीं है."

स्क्रौल की वैबसाइट पर प्रकाशित एक आर्टिकल के मुताबिक, सिर्फ 24 प्रतिशत भारतीयों के पास स्मार्टफोन हैं और सिर्फ 11 प्रतिशत घर ऐसे हैं जहां किसी प्रकार का कंप्यूटर है, मतलब डैस्कटौप, लैपटौप, टेबलेट आदि है.

**2017-2018 की शिक्षा पर नैशनल सैंपल सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक, सिर्फ 24 प्रतिशत भारतीय घरों में ही इंटरनैट की सुविधा है.**

ये आंकड़े हमें यह दिखाते हैं कि हमारे देश के कुछ विद्यार्थी तो सुविधा पा कर अपनी पढ़ाई कर पा रहे हैं पर एक बड़ी संख्या में विद्यार्थी सुविधा के अभाव में शिक्षा से दूर हैं.

स्मार्टफोन, लैपटौप, इंटरनैट के खर्चे ने अभिभावकों को भी परेशान कर दिया है. औनलाइन शिक्षा से वे अभिभावक ज्यादा परेशान हैं जिन के बच्चे निजी स्कूलों में निशुल्क शिक्षा अधिनियम के तहत पढ़ते हैं. सोचिए, जिन के पास फीस देने के पैसे नहीं, आखिर वे स्मार्टफोन और लैपटौप का खर्चा कैसे उठाएंगे?

कुछ महीने पहले तक बच्चों को मोबाइल फोन पर गेम खेलने के लिए मांबाप की डांट पड़ती थी. जब से कोरोना का कहर टूटा है, वही मातापिता अपने बच्चों के लिए लौकडाउन में भी बाजारबाजार घूम कर स्मार्टफोन, मोबाइल, टैबलेट खरीदते दिखे. वे अच्छी से अच्छी कंपनी का मोबाइल फोन ढूंढ़ रहे हैं जिस में पिक्चर भी क्लीयर आए, स्क्रीन भी बड़ी हो और जिस पर इंटरनैट भी धांसू चले.

घर की कमजोर आर्थिक स्थिति में बच्चों की पढ़ाई को ले कर मातापिता की बड़ी हुई चिंताओं की बानगी देखिए कि कोरोना महामारी ने एक गरीब पिता को अपनी बेटी के लिए स्मार्टफोन खरीदने और स्कूल की फीस भरने के लिए अपनी गाय बेचने पर मजबूर कर दिया.

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के एक पिता ने ऐसा इसलिए किया ताकि कोरोना के चलते उन की बेटी की पढ़ाई में कोई रुकावट न आए. लखनऊ में सैफ अयान के पिता आरिफ, जो खुद भी एक टीचर हैं, 7वीं कक्षा में पढ़ने वाले अपने बेटे सैफ की पढ़ाई को ले कर बहुत चिंतित हैं. सैफ आजकल औनलाइन पढ़ाई कर रहा है. खुद उन्हें भी अपने स्टूडैंट्स को औनलाइन पढ़ाना पड़ रहा है. बेटे की औनलाइन पढ़ाई के लिए उन को अलग से 12 हजार रुपए का नया स्मार्टफोन खरीदना पड़ा. इस के अलावा ट्राइपौड, ब्लैकबोर्ड, अच्छा इंटरनैट प्लान और पढ़ाई से संबंधित दूसरी जरूरी चीजों की खरीदारी में करीब 20 हजार रुपए खर्च हो गए.

लेकिन इतने तामझाम के साथ चल रही औनलाइन पढ़ाई का हाल यह है कि ढाई घंटे की औनलाइन पढ़ाई के बाद आरिफ जब खुद सैफ को ले कर पढ़ाने बैठते हैं तब जा कर उस की समझ में कुछ आता है. शाम को उस को घर के पास ही चलने वाली ट्यूशन क्लास में भी भेजते हैं.

**आरिफ कहते हैं, ''मोबाइल फोन पर टीचर जो लैक्चर दे रही हैं उस का 5 फीसदी भी बच्चे को समझ में आ जाए तो बहुत है. मोबाइल फोन पर लगातार आंखें गड़ाए रखने के बाद जब मेरा बेटा ढाई घंटे बाद उठता है तो उस की आंखों से पानी गिरता है, रातभर बच्चा सिरदर्द से परेशान रहता है. इस तरह और कुछ महीने पढ़ाई चली, तो बच्चा बीमार पड़ जाएगा.''**

## औनलाइन शिक्षा की परेशानी

आरिफ कहते हैं, ''औनलाइन क्लासेज शिक्षा का मजाक भर है. गाइडलाइन है कि 8वीं तक के छात्रों की औनलाइन क्लास डेढ़ घंटे से ज्यादा नहीं होनी चाहिए. लेकिन स्कूल वाले 3 से 4 घंटे तक बच्चों को पीस रहे हैं. सैकंडथर्ड क्लास का बच्चा भी 4-4 घंटे मोबाइल फोन में आंखें गड़ाए बैठा है. उधर, टीचर को पता ही नहीं चलता है कि 40-50 बच्चों में कौन गंभीरता से पढ़ रहा है और कौन खेल कर रहा है, किस का ध्यान पढ़ाई पर है और किस का नहीं.

ऐसे छोटे बच्चों के साथ भी औनलाइन एजुकेशन का विकल्प काम नहीं कर रहा है, जो स्वभाव से शरारती हैं और एक जगह बैठ कर ध्यान लगा कर अपना काम नहीं करना चाहते हैं. ऐसे बच्चों के लिए बहुत देर तक स्क्रीन के सामने बैठना समस्या ही है.''

मातापिता का भी यह कहना है कि

हमारे खुद के पास इतना समय नहीं है कि हम बच्चे को पढ़ा सकें क्योंकि हमें भी घर से अपना काम करना पड़ रहा है. कुछ बच्चों के मातापिता पढ़ेलिखे न होने के कारण इस स्थिति में असहाय महसूस कर रहे हैं.

**औनलाइन कक्षाओं के तहत संसाधनों की कमी का सब से अधिक सामना 10वीं और 12वीं के छात्रों को करना पड़ रहा है. मध्य प्रदेश राज्य के नरसिंगपुर शहर के प्राइवेट स्कूल में 12वीं कक्षा में पढ़ने वाला विद्यार्थी संचित बताता है, ''हमारी औनलाइन क्लास में पढ़ाई ठीक से नहीं चल रही है. हमें व्हाट्सऐप ग्रुप पर अलगअलग विषय की, बस, पीडीएफ भेज देते हैं. हफ्ते में एक दिन भी कोई औनलाइन क्लास नहीं हो रही है, टैस्ट वगैरह कुछ नहीं हो रहा है, पूरा साल खराब जा रहा है. 12वीं है, पता नहीं कैसे क्या होगा.''**

दिल्ली के नजफगढ़ शहर के सरकारी स्कूल में 12वीं में पढ़ने वाली राधा कहती है, "औनलाइन पढ़ाई में हमारे सवाल, जो हमें टीचर से पूछने हैं, वे रह जाते हैं क्योंकि टीचर सभी बच्चों को रिप्लाई नहीं कर पाते हैं और हमारे सवालों के जवाब नहीं दे पाते हैं. क्लासरूम में यह आसान था क्योंकि टीचर से आप सामने खड़े हो कर सवाल पूछ सकते थे. हम क्लासरूम में दोस्तों से भी किसी विषय पर जो समझ न आ रहा हो, आसानी से उस पर चर्चा कर सकते थे. पर औनलाइन में वह नहीं हो पाता है."

इस के अलावा कुछ बड़ी कक्षाओं और छोटी कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चों ने बताया कि वे संयुक्त परिवारों में रहते हैं तो उन के लिए पढ़ाई का माहौल ही नहीं बन पाता है. मध्य प्रदेश का संचित, जो 12वीं कक्षा में पढ़ता है, का कहना है, "पहले स्कूल जा कर मैं आराम से पढ़ सकता था. वह समय सिर्फ मेरे स्कूल का

---

औनलाइन शिक्षा के तहत टीचर मोबाइल पर जो लैक्चर देती है, वह ज्यादातर बच्चों के समझ में नहीं आता.

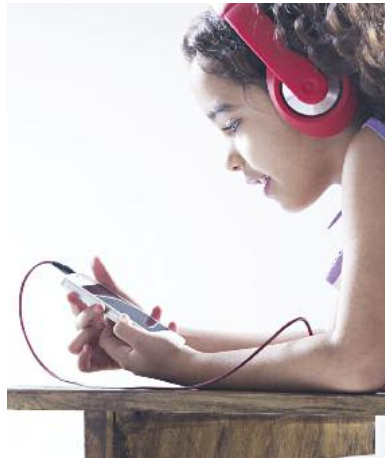

था. पर घर में इतनी चहलपहल के बीच मुझे वह माहौल नहीं मिल पाता है." कई बच्चों के घर छोटे हैं, उन में उन के लिए अलग कमरा या जगह नहीं है जिस वजह से भी उन्हें पढ़ने में मुश्किल हो रही है.

## शिक्षा का बेड़ा गर्क

औनलाइन क्लासेस ने शिक्षा और छात्र दोनों का बेड़ा गर्क कर दिया है. छोटेछोटे बच्चों की 4-4 घंटे तक औनलाइन क्लास चल रही है. बच्चे पस्त हो रहे हैं, गार्जियन के सामने नएनए बहाने बना रहे हैं. बच्चे अवसाद के शिकार भी हो रहे हैं. सोचिए कि केजी क्लास का नन्हा सा बच्चा औनलाइन क्या सीख और पढ़ रहा होगा? क्या औनलाइन क्लासेज पैरेंट्स को बेवकूफ बना कर पैसे ऐंठने का जरिया नहीं हैं?

लखनऊ के क्राइस्ट चर्च स्कूल में पढ़ने वाले 5वीं कक्षा के विद्यार्थी आलिंद नारायण अस्थाना की मां शिफाली अस्थाना कहती हैं, "हम स्कूल की इतनी लंबीचौड़ी फीस क्यों भरें जब बच्चा औनलाइन कुछ सीख ही नहीं पा रहा है? इस औनलाइन क्लास ने हमारी तो कमर ही तोड़ दी है. बिजली हमारी, इंटरनैट का खर्चा हमारा, अलग से ट्यूशन टीचर हमें रखनी पड़ रही है, स्मार्टफोन, लैपटौप हमें खरीदने पड़ रहे हैं, तो स्कूल वाले किस बात की फीस और किस बात का मेंटेनैंस चार्ज मांग रहे हैं? न तो उन की बिल्डिंग इस्तेमाल हो रही है, न बिजलीपानी और न ही बच्चे को लाने व ले जाने के लिए बस, तो स्कूल ट्यूशन फीस में ये तमाम चार्जेस क्यों जोड़ रहे हैं? हम ने तो 4 महीने से फीस नहीं दी है और आगे भी अगर इसी तरह औनलाइन क्लास चलेगी, तो कोई फीस नहीं देंगे."

**उन अभिभावकों की हालत तो और भी ज्यादा खराब है जो प्राइवेट नौकरी में रहते हुए छंटनी के शिकार हो गए या फिर बिजनैस में थे और कोरोनाकाल के लौकडाउन में उन के बिजनैस की रीढ़ ही टूट गई. जिंदगी में दो जून की रोटी के लाले पड़ गए तो बच्चों की फीस का इंतजाम कहां से करें? जिन के 3 या 4 बच्चे हैं, भला वे कहां से इतना पैसा लाएं कि हर बच्चे के हाथ में एक नया स्मार्टफोन और इंटरनैट कनैक्शन दे सकें?**

घर में पहले एक स्मार्टफोन था, तो अब जरूरत उस से ज्यादा की है. स्मार्टफोन पर औनलाइन क्लास तो सजा ही है, सही माने में तो लैपटौप चाहिए. लेकिन 3-4 बच्चों के लिए 3-4 लैपटौप का इंतजाम अभिभावक कैसे करें? गाजियाबाद में रहने वाले अशोक मिश्रा के 3 बच्चे हैं, तीनों की क्लास एक ही वक्त शुरू हो जाती है. वे बेचारे अड़ोसपड़ोस से मोबाइल फोन मांग कर लाते हैं. घर में एक लैपटौप है, उस को ले कर झगड़ा मचता है.

## फाइवस्टार स्कूलों की चांदी

हालांकि बड़े शहरों के फाइव स्टार स्कूलकालेज, जिन में बड़ेबड़े नेताओं और व्यापारियों का पैसा लगा है, को कोरोना महामारी से कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ा है. कई मैडिकल, इंजीनियरिंग कालेज लौकडाउन के बावजूद पैरेंट्स से पूरी फीस वसूल रहे हैं. ऐसे स्कूलों में फीस न देने का कोई रास्ता नहीं है. कोई मुरव्वत नहीं, फीस नहीं तो नाम कट. अब जहांतहां से इंतजाम कर के लोग फीस भर रहे हैं. यही नहीं, कुछ नामी स्कूल तो तय सीमा से ज्यादा फीस ले रहे हैं. सैमेस्टर

## आर्थिक तंगी से जूझ रहे स्कूल

स्कूल, कालेज प्रशासन का भी हाल खस्ता है. कोरोनाकाल में कई छोटे स्कूल आर्थिक तंगी का शिकार हो कर बंद होने की कगार पर हैं. एक कसबाई स्कूल के प्रिंसिपल साहब कहते हैं, ''छात्रों ने स्कूल में आना बंद कर दिया तो अभिभावकों ने फीस भी बंद कर दी. अध्यापक से ले कर चपरासी तक पैदल हो गए और सरकार बिजली का बिल, पानी का बिल भेजने में शर्म नहीं कर रही है. आखिर कुछ तो रियायत सरकार भी दिखाए.''

तमाम प्राइवेट स्कूलकालेजों की हालत खस्ता है. प्राइवेट कालेज के कई अध्यापक अब सब्जी और फल बेच रहे हैं, ऐसी खबरें रोज आ रही हैं.

की फीस जमा करने के लिए फाइव स्टार प्राइवेट यूनिवर्सिटी सिर्फ 2 दिन का वक्त देती हैं, वह भी बिना पूर्व सूचना के. फीस में एक दिन की भी देरी हुई, तो लेट पेमैंट के नाम पर करीब हजार रुपए का चूना लग जाता है. ज्यादा देर हो गई, तो दोगुनी फीस भी देनी पड़ सकती है.

इन यूनिवर्सिटीज में अपने बच्चों को पढ़ाने वाले उन तमाम मध्यवर्गीय, निम्नमध्यवर्गीय परिवारों की परेशानियों का कोई अंत नहीं है, जिन के 2 या उस से ज्यादा बच्चे हैं. सब की औनलाइन क्लास एक ही वक्त चलनी है, इसलिए सभी को लैपटौप और स्मार्टफोन इंटरनैट कनैक्शन के साथ चाहिए. अब स्कूल प्रशासन के सामने छात्रों के बीच अनुशासन मैंटेन करने का कोई झंझट नहीं है. स्कूल के रखरखाव की परेशानी भी कम हो गई है. खेल एक्टिविटीज बंद हैं. वाहन चल नहीं रहे हैं. लेकिन उन सब की फीस ली जा रही है. पढ़ाई की क्वालिटी के बारे में कोई सवाल नहीं उठ रहे. स्कूल प्रशासन को अच्छी तरह पता है कि कोरोनाकाल में अभिभावक संगठित नहीं हो सकते. सो, इन की पहले भी चांदी थी, अब भी चांदी है.

## शिक्षा एक महंगा प्रोडक्ट

हम सारे आंकड़ों को, शिक्षकों और विद्यार्थियों के अनुभव को देखें तो लगता है कि औनलाइन एजुकेशन शिक्षा को एक बाजार से खरीदी जाने वाली चीज की तरह बना रही है जिस के पास पैसा और संसाधन हैं वे तो इसे आसानी से खरीद कर इस का लाभ उठा पा रहे हैं पर गरीब तबका और ऐसे लोग, जो गांव या कसबे में रहते हैं, सुविधा के अभाव के चलते अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दे पा रहे.

इस का मतलब यह नहीं है कि औनलाइन एजुकेशन नहीं होनी चाहिए. लेकिन प्रशासन को यह सोचना होगा कि अगर औनलाइन एजुकेशन के अलावा और कोई भी कदम उठाए जाएं तो उस का लाभ सिर्फ समृद्ध लोगों को ही न मिले, हमारे देश का वह तबका जो समृद्ध नहीं है वह छूट न जाए. संसाधनों के अभाव से ग्रस्त हमारे देश के शिक्षक और विद्यार्थी महामारी के दौर में अगली पूरी पीढ़ी की शिक्षा को दांव पर लगा देख इन सवालों के साथ प्रशासन की तरफ उम्मीद से देख रहे हैं.

–साथ में **नसीम अंसारी कोचर** ●

# पीरियड के 2 दिनों पहले क्यों होता है दर्द

• डा. गौरी अग्रवाल

अकसर लड़कियों को पीरियड से पहले या पीरियड के दौरान असहनीय दर्द होता है, जिस के पीछे कई कारण हो सकते हैं. इस से निबटने के लिए जरूरी है कि पहले जान लिया जाए कि दर्द की वजह क्या है.

पीरियड के दौरान दर्द होने से कोई भी लड़की बहुत ज्यादा अनकंफर्टेबल फील कर सकती है या वह बहुत कमजोर भी हो सकती है. पीएमएस यानी प्रीमैंस्ट्रुअल सिंड्रोम जैसे शब्द कभीकभी मजाक में उपयोग किए जाते हैं. पीएमएस में होने वाली सूजन, सिरदर्द, बदनदर्द, ऐंठन और थकान लड़कियों के लिए दर्दनाक स्थिति बना देती है. इस के अलावा और भी गंभीर कंडीशन, जैसे प्रीमैंस्ट्रुअल डिस्फोरिक डिस्और्डर यानी पीएमडीडी भी हो सकती है जो प्रीमैंस्ट्रुअल सिंड्रोम की तरह होता है लेकिन पीरियड आने के एक हफ्ते या दो हफ्ते पहले गंभीर चिड़चिड़ापन, डिप्रैशन या एंग्जाइटी का कारण बन सकता है. आमतौर पर लक्षण पीरियड्स शुरू होने के 2 से 3 दिन बाद तक रहते हैं. लेकिन पहले 1–2 दिन बहुत दर्द वाले हो सकते हैं. यह प्रोस्टाग्लैंडीन नामक एक हार्मोन संबंधी पदार्थ के कारण होता है जिस से दर्द और सूजन के कारण गर्भाशय की मांसपेशियों में कौन्ट्रैक्शन होता है. ज्यादा गंभीर मैंस्ट्रुअल क्रैम्प होना प्रोस्टाग्लैंडीन के हाई लैवल का संकेत दे सकता है.

बीएमजे पब्लिशिंग ग्रुप, यूके द्वारा प्रकाशित क्लीनिकल एविडैंस हैंडबुक के अनुसार, 20 फीसदी महिलाओं में क्रैम्प, मतली, बुखार और कमजोरी जैसे लक्षण देखने को मिलते हैं जबकि कई अन्य ने इमोशनल कंट्रोल और कंसन्ट्रेशन में कमी देखी. एंडोमेट्रियोसिस सोसाइटी इंडिया के आंकड़े सुझाते हैं कि 2.5 करोड़ से अधिक महिलाएं एंडोमेट्रियोसिस से पीड़ित हैं. यह एक क्रोनिक कंडीशन होती है जिस में पीरियड के दौरान बहुत ज्यादा दर्द होता है, जिसे चिकित्सकीय रूप से डिसमेनोरिया कहा जाता है.

दिल का दौरा पड़ने के बावजूद काम करने वाले किसी व्यक्ति की कल्पना करें. पीरियड में दर्द होना उस से भी बुरा हो सकता है. कालेज औफ यूनिवर्सिटी, लंदन की रिसर्च के अनुमान के अनुसार, 68 फीसदी से अधिक महिलाएं भारत में गंभीर पीरियड से संबंधित लक्षण, जैसे ऐंठन, थकान, सूजन व ऐंठन का अनुभव करती हैं और इन में से 49 फीसदी थकावट महसूस करती हैं. लगभग 28 फीसदी महिलाओं को अपने पीरियड्स के दौरान सूजन का अनुभव होता है.

## पीरियड्स में होने वाले दर्द को समझें

हार्मोन जारी करने पर गर्भाशय की ऐंठन के कारण महिलाओं को पीरियड्स के दौरान दर्द का अनुभव होता है. प्रोस्टाग्लैंडीन गर्भाशय में मांसपेशियों के कौन्ट्रैक्शन के प्रोसैस को शुरू करता है. यह दर, जिस में कौन्ट्रैक्शन होता है, उपयोग न की गई यूट्रीन लाइनिंग की शेडिंग को निर्धारित करता है कि शरीर से बाहर खून के साथ क्लौट्स भी निकलेंगे. डिसमेनोरिया कुछ बीमारियों का संकेत भी दे सकता है जैसे–

- पौलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम यानी पीसीओडी मासिकधर्म में होने वाली बीमारियों में सब से आम बीमारी है. यह महिलाओं में निष्क्रिय लाइफस्टाइल के कारण बढ़ रहे हार्मोनल असंतुलन के कारण होती है. यह शरीर में पुरुष हार्मोन का प्रोडक्शन बढ़ाता है और ओव्यूलेशन की प्रक्रिया को बाधित करता है.
- गर्भाशय फाइब्रौएड – हालांकि ये नेचर में सौम्य होते हैं, लेकिन ये असहनीय लक्षण पैदा कर सकते हैं, जैसे असामान्य यूट्रीन ब्लीडिंग, डिस्पेर्यूनिया, पेल्विक पेन, मूत्राशय या मलाशय पर प्रतिरोधी प्रभाव और बांझपन की समस्या. अन्य बीमारियां जो पीरियड्स के दौरान दर्द पैदा कर सकती हैं वे पेल्विक इंफ्लेमेटरी डिजीज (पीआईडी), एंडोमेट्रियोसिस और एडिनोमायोसिस हैं.

## क्या पीरियड के दर्द का इलाज किया जा सकता है?

हां, हलके मासिकधर्म के क्रैम्प का इलाज ओवर द काउंटर (ओटीसी) दवाओं के साथ किया जा सकता है, जबकि ज्यादा गंभीर क्रैम्प के लिए नौनस्टेरौइडल एंटी इंफ्लेमेटरी ड्रग्स की जरूरत होगी. यह सुनिश्चित करें कि दवा दर्द शुरू होने से पहले लें. एक्सरसाइज करना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह ब्लड फ्लो और एंडोर्फिन दोनों के प्रोडक्शन को बढ़ाती है, जो प्रोस्टाग्लैंडीन और रिजल्टंट दर्द को कम कर सकता है.

मासिकधर्म के दौरान स्वच्छता बनाए रखना बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि लगभग 70 फीसदी रिप्रोडक्टिव संबंधी बीमारियां खराब मासिकधर्म की स्वच्छता के कारण होती हैं. ओरल गर्भनिरोधक गोलियों के माध्यम से ट्रीटमैंट किसी भी ओवेरियन हार्मोन लैवल के असंतुलन को ठीक कर सकता है. ताजे भोजन, फलों और सब्जियों को ज्यादा खाएं, धूम्रपान, शराब और कैफीन का सेवन करने से बचें, नमक व चीनी के सेवन को भी कम करें और 30 मिनट के लिए रोज एक्सरसाइज करें.

पीरियड हौलिडे, रोज के कामों में साथ देना और हम कुछ ऐसी ही मदद कर के एक महिला को पीरियड के दिनों में राहत पहुंचा सकते हैं. ●

**(लेखिका सीड्स औफ इनोसैंस एंड जेनेस्ट्रिंग्स लैब की फाउंडर व आईवीएफ एक्सपर्ट हैं)**

# कोरोना ने बताई रिश्तों की अहमियत और असलियत

• किरण आहूजा

रिश्ते मजबूत होते हैं, लेकिन जब हालात बिगड़ते हैं तो वही रिश्ते संवेदनशील और नाजुक हो जाते हैं. कोरोना के समय में अकसर रिश्तों में कड़वाहट आने लगी है. कहीं आप के साथ भी तो ऐसा नहीं हो रहा है?

रक्षाबंधन का त्योहार नजदीक था. स्वीटी ने राखी तैयार कर ली थी. कोरोना वायरस के कारण महीनों से घर के अंदर घर के कामकाज में जुटे रहना, ऊपर से वर्क फ्रौम होम, ऐसा लग रहा था कि दुनिया घर में ही सिमट कर रह गई है. अब अनलौक की स्थिति में लौकडाउन से कुछ राहत मिलने से स्वीटी खुश थी.

स्वीटी ने पूरी प्लानिंग कर ली थी कि सुबह ससुराल में रक्षाबंधन का त्योहार मना कर दोपहर तक मायके चली जाएगी. भाई को अपने हाथों से राखी बांध देगी और इसी बहाने घर से निकल कर मायके में सब से मिलनाजुलना भी हो जाएगा. इतने दिनों से कोरोना से बचाव के उपाय अपनाते हुए पूरी तरह से पता चल गया था कि कैसे अपनेआप को सुरक्षित रखना है और कैसे कोरोना के साथ जिंदगी जीनी है.

स्वीटी जाने की तैयारी में लगी ही थी कि मायके से उस की भाभी का फोन आ गया. स्वीटी ने खुशीखुशी फोन उठाया तो उधर से उस की भाभी ने सब की खैरियत

पूछ बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "स्वीटी, इस बार तो रक्षाबंधन का त्योहार सब अपनेअपने घर पर ही बैठ कर मनाएंगे. मैं ने तो अपने भाई को राखी कूरियर कर दी है. उस ने भी कहा कि शगुन के पैसे वह पेटीएम कर देगा. ठीक है न, डिस्टैंस मेंटेन करना है, तो यह सब करना ही पड़ेगा. तू भी ऐसा कर अपने भैया को औनलाइन या कूरियर से राखी भेज दे. तू अपना बैंक का अकाउंट नंबर व्हाट्सऐप कर दे. हम शगुन के रुपए उस में ट्रांसफर कर देंगे. ठीक है न. अब क्या करें, वक्त ही ऐसा आन पड़ा है. सावधानी बरतने में ही समझदारी है."

"लेकिन भाभी, मैं तो घर आने की सोच रही थी," स्वीटी ने भाभी को अपने मन की बात बताई.

"अरे, क्यों इस मुसीबत की घड़ी में आने की जहमत उठा रही है. आने की कोई जरूरत नहीं. घर पर ही सेफ हैं."

जब भाभी ने साफसाफ उसे आने के लिए मना कर दिया तो अब वह आगे क्या बोलती. "ठीक है भाभी, जैसी आप की मरजी," कह स्वीटी ने फोन रख दिया.

स्वीटी के जेहन में कई विचार एकसाथ उमड़ रहे थे, 'कहां चला गया लोगों के बीच का अपनापन. हमें अगर कोरोना वायरस संक्रमण के थोड़े भी लक्षण महसूस होंगे तो हम तुरंत स्वयं को होम आइसोलेट कर लेंगे, हम क्यों अपने घरवालों को मुसीबत में डालेंगे. क्यों चाहेंगे कि हमारी वजह से यह बीमारी दूसरे में भी चली जाए.

'लेकिन जब हमें कुछ है ही नहीं, और पूरी एहतियात बरतते हुए घर में घुसेंगे, मैं कोविड फ्री, घर के सभी सदस्य कोविड फ्री तो क्यों नहीं मिलजुल सकते. भाभी खुद तो बीच में 2-3 बार अपने मायके जा चुकी हैं और मुझे आने से मना कर रही हैं. ऐसा दोगलापन क्यों? इसी से पता चल जाता है कि कितना अपनापन है दिलों में.'

बात आईगई, हो गई. चलो, रक्षाबंधन के दिन भाई के घर नहीं जाना, तो ठीक

है. फिर तो उसे आराम ही है क्योंकि ससुराल में यह त्योहार उस की जेठानी के घर पर होता था. उसे कोई तैयारी नहीं करनी थी. वह घर पर अपना औफिस वर्क करने बैठ गई. काम करतेकरते थोड़ा ब्रेक लेने की सोच ही रही थी कि उस के मोबाइल पर उस की बड़ी ननद की कौल आ गई, "हैलो, स्वीटी, क्या चल रहा है."

"कुछ नहीं दीदी, वही रूटीन वर्क. आप बताओ कितने बजे तक पहुंच रही हो भाभी के घर?"

"स्वीटी, मैं सोच रही हूं कि इस बार रक्षाबंधन तुम्हारे घर पर कर लेते हैं. भाभी ने तो कोरोना के कारण अपने घर में किसी का भी आनाजाना रोक रखा है. घर में भी मास्क पहने घूमती रहती हैं. 2 बार घर में डिसइन्फैक्टैंट स्प्रे करती हैं. न बाबा न, मुझे नहीं जाना उन के घर. कहीं वहां एक छींक भी आ गई और उन के घर में किसी को कुछ हो गया तो नाम हमारा लग जाएगा.

**"वैसे, उन्होंने आने से मना नहीं किया है लेकिन जिस तरह से वे कह रही हैं कि डिस्टैंस मेंटेन कर के बैठेंगे, उस से मैं यह महसूस करती हूं कि उन के घर जाना ठीक नहीं रहेगा. इस बार मैं तेरे घर ही आ जाती हूं. भैया को वहीं बुला लेते हैं. भाभी को आना होगा तो आ जाएंगी. ठीक है न स्वीटी, तुझे कोई एतराज तो नहीं?"**

ननद ने पूछा तो स्वीटी को कहना पड़ा, "नहीं दीदी, एतराज कैसा. सेफ्टी गाइडलाइंस तो हम भी फौलो करते हैं लेकिन जहां जरूरत है वहां. आप आने का टाइम बता देना, मैं सब तैयारी कर के रखूंगी." और स्वीटी ने फोन रख दिया.

स्वीटी के सामने अपनी भाभी का व्यवहार था और अपनी जेठानी का भी. देखा जाए तो दोनों अपने परिवार की सुरक्षा को देख रही हैं. अच्छी बात है, लेकिन उन का तरीका सही नहीं कहा जा सकता.

घर में जब सभी कोविड फ्री हैं तो आराम से साथ बैठें, खाएपिएं और माहौल खुशनुमा बनाए रखें.

## कुछ व्यावहारिक बातों का पालन करें

- मित्रों से दूरी बना कर बात करें, लेकिन बातों में दूरीपन न झलके, मीठापन बनाए रखें.
- जिन लोगों के बारे में आप पूरी तरह आश्वस्त हैं कि वे कोविड फ्री हैं तो उन्हें घर में आने दें. दूरी बना कर बैठें, आराम से बातचीत करें.
- जब वह घर से चला जाए और आप मानसिक रूप से खुद को फ्री रखना चाहते हैं तो जहां बाहरी व्यक्ति बैठा हो उस जगह पर डिसइन्फैक्टैंट स्प्रे करें. लेकिन यह सब उस के जाने के बाद करें.
- जिस बरतन में उस ने खायापीया हो उसे अच्छी तरह से धो कर रखें.
- औफिस में सब मास्क का प्रयोग कर रहे हैं तो नौर्मल बिहेवियर रखें. बातचीत सामान्य रूप से करें. ऐसा व्यवहार न करें कि दूसरा अछूत है.
- मित्रों से, रिश्तेदारों से फोन पर बातचीत करें. हालचाल पूछते रहिए. रिश्तों की मधुरता बनाए रखें.
- वैसे भी इतनी पारखी नजर होनी चाहिए कि आप एक स्वस्थ व्यक्ति या एक बीमार व्यक्ति की शारीरिक अवस्था के अंतर को देख सकें.

कोरोना वायरस से बचने के लिए दूरी बनाए रखनी सब से अहम बात है, लेकिन दिल से दूरी नहीं. यह बात आप टैलीविजन पर आ रहे चाय के एक विज्ञापन को देखेंगे तो अच्छी तरह समझ जाएंगे, उस में दिखाया गया है कि पति चाय बनाते अपनी पत्नी को खिड़की से बाहर देखता हुआ कह रहा है कि लो, आ गया अमित अस्पताल से. उस से दूर रहेंगे. एक महीना तक उस के गेट के पास तक नहीं जाएंगे. सारी खिड़कियां बंद रखेंगे.

पत्नी चाय बना कर ले आती है. ट्रे में चाय के 3 कप देख कर पति पूछता है, "यह चाय का तीसरा कप..."

पत्नी बड़ी संजीदगी से जवाब देती है, "अमित के लिए, उसे अकेले रहने के लिए कहा गया है. अकेला छोड़ने के लिए नहीं," और पत्नी अमित के घर के बाहर रखे स्टूल पर चाय रख कर, डोरबैल बजा कर आ जाती है.

40 सैकंड के इस विज्ञापन में कितने दिल छूते अंदाज में समझाया गया है कि हम दूर रह कर भी अपनापन दिखा सकते हैं.

विज्ञापन में तो पड़ोसियों की बात कही गई है लेकिन स्वीटी के संदर्भ में तो अपनों की बात हो रही है. और वे भी जो पूरी तरह से स्वस्थ हैं. उन से बेगानों जैसा व्यवहार करना क्या समझदारी है?

**कोरोना महामारी आई है और माना कि जाने में वक्त लगेगा, लेकिन जाएगी जरूर. तब यही रिश्तेनातेदार हमारे सामने होंगे. इंसान का व्यवहार ही उसे अच्छा या बुरा बनाता है.**

हम यह नहीं कह रहे कि आप गले लग जाओ, लेकिन मुंह भी मत मोड़िए. माना कि वक्त ऐसा है कि अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा सर्वोपरि है लेकिन सुरक्षा का पालन करने में भी अपनी स्मार्टनैस दिखाइए. ●

# डाक्टर से औनलाइन परामर्श कैसे लें

औनलाइन डाक्टरी परामर्श से आप अपने मर्ज का निदान पा सकते हैं. डाक्टर की सलाह से आप पूरी तरह संतुष्ट होना चाहते हैं, तो परामर्श लेने से पहले क्या और कैसे पूछना है, यह आप को पता होना चाहिए.

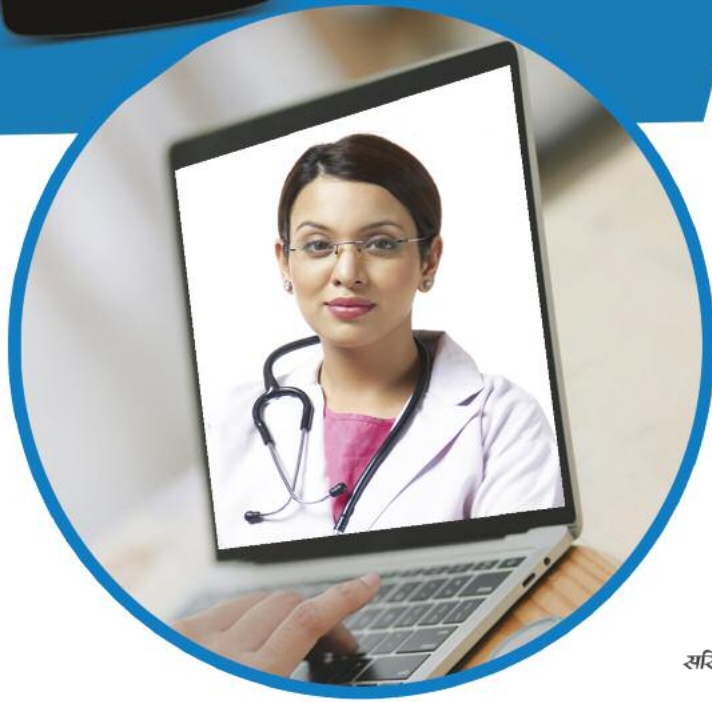

डाक्टर्स ऐप की शुरुआत लोगों की व्यस्त जीवनशैली को देखते हुए की गई थी. बिना किसी अपौइंटमैंट के आप अपनी हैल्थ के बारे में घर बैठे डाक्टर से औनलाइन परामर्श ले सकते हैं.

आज कोरोना संक्रमण के कारण अस्पताल जाने के बारे में सोचते हुए ही लोगों के मन में दहशत सी होने लगती है. कारण साफ है, एक तो अस्पताल जाना अपनेआप को संक्रमण से ग्रसित होने की दावत देने के समान है, दूसरा, अस्पतालों में मरीजों की भीड़ और अव्यवस्थित स्थिति है.

ऐसी हालत में यही बेहतर लगता है कि घर बैठे ही डाक्टर से सलाह ले कर उपचार कर लिया जाए. ऐसा सोचना बिलकुल सही है. लेकिन, यहां भी एक समस्या सामने आती है, वह यह है कि औनलाइन डाक्टर के सामने आने के बाद मरीज कई बार अपनी समस्या पूरी तरह से डाक्टर के सामने रख नहीं पाता. ऐसा लगता है डाक्टर को अपनी प्रौब्लम पूरी तरह से समझा नहीं पाए और दूर बैठा डाक्टर फिजिकल एग्जामिन कर के मर्ज को जान ले, ऐसा हो नहीं सकता. इसलिए महसूस होता है कि पता नहीं उपचार सही मिला भी है या डाक्टर हमारी बात समझा भी है या नहीं. बेकार ही हम ने रुपए डाक्टर परामर्श के नाम पर बरबाद कर दिए.

**सो, डाक्टर के साथ औनलाइन सलाह लेने पर इन बातों का ध्यान अवश्य रखें.**

- आप को जो भी तकलीफ महसूस हो रही है उसे किसी पेपर पर नोट कर लें ताकि डाक्टर जब पूछे तो बताना न भूलें.
- कई बातें बहुत छोटी लगती हैं लेकिन बताने में झिझकें नहीं, डाक्टर से खुल कर अपनी बात कहें.
- यदि आप की कोई केस हिस्ट्री है तो शुरुआत उसी से कीजिए और बाद में

## डाक्टर ऐप के फायदे

- आप को कहीं भी जाने की जरूरत नहीं होती और घर बैठेबैठे ही हैल्थ प्रौब्लम का ट्रीटमैंट करा सकते हैं.
- डाक्टर ऐप पर डाक्टर की फीस उन की क्लीनिक फीस से बहुत कम होती है. अगर आप डाक्टर ऐप के जरिए डाक्टर से सलाह लेते हैं तो 60 फीसदी तक सेविंग कर सकते हैं.
- यहां आप को स्पैशलिस्ट डाक्टर मिलते हैं जो एमडी और एमबीबीएस होते हैं. डाक्टर से मिलने के बाद आप उन की प्रोफाइल भी पढ़ कर उन के बारे में पूरी जानकारी ले सकते हैं.
- डाक्टर से की गई आप की हैल्थ ऐडवाइज 3 दिनों तक वैलिड होती है और उस के बाद वह खुदबखुद बंद हो जाती है. लेकिन अगर आप को डाक्टर से कोई और प्रश्न करना है तो पुरानी चैट में जा कर उन से दोबारा बात भी कर सकते हैं.
- डाक्टर ऐप का प्रयोग करने के लिए आप की उम्र 18+ होनी जरूरी है. ऐसा इसलिए है क्योंकि इस उम्र में व्यक्ति को अपनी प्रौब्लम के बारे में अच्छी तरह से पता होता है और अच्छी तरह से दूसरे को समझा भी सकता है. साथ ही, डाक्टर के परामर्श को गहन रूप से समझ सकता है.

अपनी करंट सिचुएशन के बारे में विस्तार से बताएं. क्योंकि सर्दीजुकाम, पेटदर्द, छोटीमोटी चोट लगना आम बात है लेकिन किडनी रोग, डायबिटीज, कैंसर ऐसी गंभीर बीमारियां हैं जिन की बीमारी को समझने व समझाने में थोड़ा समय लगता है. इसलिए ऐसे मरीजों को जब कोई तकलीफ होती है और वे औनलाइन डाक्टरी परामर्श लें तो अपनी हिस्ट्री जरूर बताएं.

- बारबार डाक्टर न बदलें. यदि एक डाक्टर के उपचार से फायदा हुआ है तो अगली बार उसी से संपर्क करें. डाक्टर आप की मैडिकल प्रौब्लम जान चुका होता है तो उसे भी उपचार करने में आसानी रहती है और आप भी डाक्टर से बात करने में कम्फर्टेबल महसूस करते हैं. हां, यह दूसरी बात है यदि आप को लगता है कि फलां डाक्टर से अच्छा इलाज नहीं मिल रहा है तो डाक्टर बदल लें.
- यदि आप औनलाइन सलाह लेने में घबरा रहे हैं तो आप को एक बार पहले चैकअप करवा लेना चाहिए. ऐसा करने से आप डाक्टर को अपनी समस्या मिल कर बता सकते हैं और आप के मन को संतुष्टि भी हो जाती है. ऐसा करने के बाद आप डाक्टर से औनलाइन सलाह लेने में खुद को परेशान नहीं पाएंगे.

डिजिटल युग में विशेषज्ञ चिकित्सकों से परामर्श घर बैठे लें और मर्ज का इलाज मिनटों में पा कर व्यस्त जीवनशैली को सुगम बनाएं.

लोगों की बढ़ती व्यस्त जीवनशैली ने औनलाइन प्लेटफौर्म को काफी बढ़ावा दिया है. एक डाक्टर से औनलाइन सलाह लेना भविष्य में और भी तेजी से बढ़ेगा. जब आप वास्तव में यह समझेंगे कि यह आप का कितना समय बचाता है तब आप खुद इसे अपनाने लगेंगे. **–किरण आहूजा** ●

# कोविड लाई अनचाही बेवफाई

शून्य में पसरा कमरा,
अलगथलग पड़ी चारपाई,
न कोई आनेजाने वाला,
न ही मिजाज पुरसाई,

बुके और गैट वैल सून कार्ड
की जगह मुंह चिढ़ाती,
सिरहाने रखी कड़वी दवाई,

कोविड के रूप में
यह कैसी बीमारी आई,
जो रिश्तों की दरकन
और अनचाही बेवफाई भी
अपने साथ ले आई.

मरने के बाद चैन की
मौत भी नहीं आ पाई,
न एक बूंद गंगाजल की नसीब हुई,
न हो सकी चार कंधों की जुड़ाई,

हर कोने से खिड़की,
रास्ता ताकती रह गई,
मुखौटे लगाए अपरिचितों
के साथ अर्थी अस्पताल से
सीधे श्मशान आ गई,

कोविड तुम ने यह
किस जन्म की दुश्मनी निभाई,
मौत का कोई गम नहीं,
पर यह रिश्तों की दरकन
और अनचाही बेवफाई
तुम क्यों साथ ले आई.

• चिरंजीव

कहानी

# लौकडाउन सरप्राइज

• दीपा पांडेय

कहां बाराबंकी, कहां दिल्ली. रमा और सुरेश कोरोना महामारी के काल में दूर बैठी बेटी की मदद भी करते तो कैसे, लौकडाउन की जटिल व्यवस्था ने सब गड़बड़ा दिया था.

"यह देखो जी, अब कल से शराब की दुकानें भी खुल गई हैं और लोग दुकानों पर टूट पड़े हैं जम कर शराब पी जा रही है. कहींकहीं तो सोशल डिस्टैंसिंग की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं, ऐक्सिडैंट भी बढ़ रहे हैं और घरों के अंदर की हिंसा भी, "रमा ने चिढ़ कर पति से कहा.

"हर बात को नकारात्मक दृष्टिकोण से नहीं देखना चाहिए. इस से राजस्व आय बढ़ेगी. सरकार इतने सारे सामाजिक कार्यक्रम, जो सभी के हित में चला रही है, के लिए धन की आपूर्ति के स्रोत भी तो होने चाहिए." सुरेश ने समझाया.

"हांहां, आप तो पक्ष लेंगे ही न. पिछले कई दिनों से मधुशाला खुलने का इंतजार ही तो कर रहे थे न. अपनी फैक्ट्री में अभी तक ताला लगा है, उस का इतना गम नहीं है जितना मधुशाला बंद होने का गम था."

"यह सब छोड़ो, अपनी दिल्ली में बैठी बिटिया का 2 दिनों से फोन नहीं आया. उस से जरा पूछो तो क्या हाल है," सुरेश ने टौपिक बदला.

"वीकैंड में नैट पर फिल्म, सीरीज देखने या फिर नींद निकाल कर समय बिता रही होगी, बता रही थी कि सारे सरकारी, अर्धसरकारी औफिस में भी औनलाइन काम होने से सौफ्टवेयर कंपनियों के ऊपर अधिक कार्यभार बढ़ गया है. इसी से उस का कार्य भी बहुत बढ़ गया है," रमा ने जानकारी दी.

"यह अच्छा है कि दिल्ली में उस के साथ 4 लड़कियां फ्लैट शेयर कर रही हैं, एकदूसरे का सहारा बनी हैं. हम इतनी दूर बाराबंकी से उस के लिए कुछ कर भी नहीं सकते," सुरेश परेशान हो उठा.

"हां, हम ने उस की शिक्षादीक्षा में कोई कोरकसर नहीं छोड़ी. 11वीं कक्षा से उसे लखनऊ भेज दिया था. उस ने वहीं से इंजीनियरिंग के बाद तुरंत दिल्ली में सौफ्टवेयर कंपनी जौइन कर ली. बड़ी होशियार है अपनी बेटी," रमा ने बड़े गर्व से कहा.

"मैं ने तो कई बार उस का मन टटोलने की कोशिश कर ली, मगर वह कुछ बताती नहीं. अगर उस की नजर में कोई लड़का नहीं है तो हम उस के लिए रिश्ते की बातचीत उचित घरवर देख कर शुरू करें," सुरेश ने चिंतित स्वर में कहा.

"हां, जब छोटी थी तो हमेशा कहती थी, 'पापा आप अपने जैसा ही लड़का मेरे लिए ढूंढ़ना.' बहुत बकबक करती रहती थी. मगर अब चुपचुप रहती है, ज्यादा बात नहीं करती. पता नहीं पिछले 2 सालों से जब से दिल्ली गई है, कुछ

ज्यादा ही चुप रहने लगी है," रमा उदास हो कर बोली.

"तू फिर नैगेटिव बातें करने लगी. अरे, बड़ी हो गई है, अब बचकानी बातों की फुरसत कहां है उसे. अच्छा चलो, अभी बात कर लेते हैं, लगाओ अपनी लाड़ली सुप्रिया को फोन."

"सुबह के 10 बज गए हैं. वह औनलाइन कार्य में व्यस्त हो गई होगी. अगर आज उस का फोन शाम तक न आया तो फिर मैं स्वयं बात कर लूंगी."

रविवार शाम को सुप्रिया ने अपने कुशलमंगल होने की सूचना दी और बोली, "अच्छा फोन रखती हूं, अभी हम फिल्म देख रहे हैं."

रमा ने डाइनिंग टेबल से बरतन समेटते हुए सुरेश से कहा, "सुनिए जी, मुझे तो कुछ दाल में काला लग रहा है. वह जरूर हम से कुछ छिपा रही है."

बरतन सिंक में रख कर सुरेश चुपचाप बरतन धोने लगा. उस का मन भी अब अपनी इकलौती संतान के प्रति चिंतित हो उठा था. रमा सच कहती है, अब सुप्रिया पहले की तरह मुखर नहीं रही. पहले अपनी पूरी दिनचर्या बताती थी. उसे रोकना पड़ता था कि भई, बस कर. मगर अब उसे न जाने क्या हो गया है. इकलौती संतान होने के बावजूद सुप्रिया, अनुशासनप्रिय और मेधावी छात्रा रही है. उन के लाड़प्यार का उस ने कभी गलत फायदा नहीं उठाया.

दूसरे दिन सुबह रमा समाचार सुनने के लिए टीवी के आगे चायनाश्ता ले कर बैठ गई. पूरे देश से अलगअलग राज्यों के कोरोना मरीजों के आंकड़े पेश होने लगे. लेकिन कुछ देर बाद ही जगहजगह सोशल डिस्टेंसिंग की धज्जियां उड़ने की खबरें आने लगीं. शराब की दुकानों के आगे उमड़ी भीड़ ने बेकाबू होना शुरू कर दिया था.

'अब क्या होगा? लगता है सभी शराब के साथ, कोरोना है मुफ्त वाले औफर को लेने आए हैं,' रमा बड़बड़ाई, फिर आवाज लगाई, "अजी सुनते हो, यहां आ कर तमाशा देखो," कोई प्रतिउत्तर न पा कर रमा घबरा उठी कि कहीं सुरेश भी मधुशाला की तरफ न दौड़ गया हो.

उस ने उठ कर बैडरूम, बाथरूम सब जगह तलाशी लेनी शुरू कर दी. सुरेश को कहीं न पा कर वह छत की सीढ़ियां जल्दीजल्दी चढ़ने लगी. तेजी से छत पर पहुंचने के चक्कर में उस की सांस फूल गई.

"अरे, ऐसी भी क्या जल्दी है, आराम से भी आ सकती थीं," सुरेश, रमा की धौंकनी की तरह से चलती सांस को देख कर बोला.

"मुझे टीवी की भीड़ देख कर ऐसा लगा मानो किसी मुनि की चालीस दिन की तपस्या को सुरासुंदरी ने भंग कर दिया है और उस ने सुरासुंदरी को शापित कर दिया कि जा, जो तुझे लेने को संयम तोड़ कर आए हैं, तू उन्हें कोरोना फैलाने का माध्यम बना. मुझे बहुत डर लग गया. इसीलिए मैं आप को ढूंढ़ने निकल पड़ी."

"इतनी अक्ल मुझे भी है. पता था, आज ही दुकानें खुली हैं, लोग दौड़ पड़ेंगे. भीड़ भी होगी, लंबी लाइन में भी लगना पड़ेगा और कहीं भगदड़ मची तो दोचार लाठी भी पड़ जाएंगी. मैं तो कल आराम से जाऊंगा. न भीड़ होगी और न वायरस पीछेपीछे घर आएगा," सुरेश ने छत पर रखे गमलों में पानी डालते हुए कहा.

"सुनो जी, मैं सोच रही हूं कि एक पीपीई किट तुम्हारे लिए खरीद लूं, जब कभी भीड़ में जाओ तो पहन लेना. पिछली गली में जो सरकारी सिलाई केंद्र है, वहीं आजकल मास्क और किट बन रहे हैं," रमा की बात सुन कर सुरेश मन ही मन बहुत हंसा, फिर बोला, "अरे, मेरे पास दस्ताने, मास्क और सैनिटाइजर मौजूद हैं जो बाहर जा कर सामान लाने के लिए पर्याप्त हैं. वैसे भी, मैं किसी भीड़भाड़ वाली जगह पर नहीं जाता हूं."

रमा को तसल्ली हो गई. दोनों छत से नीचे उतर कर आ गए.

सुरेश टीवी समाचार सुनने में और रमा कपड़ों के ढेर को धोने में व्यस्त हो गई. शाम गहराती गई और सुरेश के हृदय में दुख की कालिमा छाती गई. वह बेसब्री से शाम के 8 बजने का इंतजार करने लगा. रोज शाम को 8 बजे का समय उन की बेटी ने ही फोन करने का तय किया था. इस से

बरतन सिंक में रख कर सुरेश चुपचाप बरतन धोने लगा. उस का मन भी अब अपनी इकलौती संतान के प्रति चिंतित हो उठा था. रमा सच कहती है, अब सुप्रिया पहले की तरह मुखर नहीं रही. पहले अपनी पूरी दिनचर्या बताती थी. उसे रोकना पड़ता था कि भई, बस कर. मगर अब उसे न जाने क्या हो गया है.

पूर्व जब वह लखनऊ में थी तो कालेज के समय के अतिरिक्त उस का फोन कभी भी आ जाता या वे ही कौल कर लेते. कभी तो सुबह ही बात होती. मगर शाम को वह घर पहुंच जाती, फिर कहती, 'सरप्राइज.' अब कहो, तो कहती है वह तो मेरा बचपना था. पता नहीं, बच्चे इतनी जल्दी बड़े क्यों हो जाते हैं. सुरेश ने ठंडी सांस भरी.

शाम 7 बजे ही फोन की घंटी बज उठी. सुरेश चौंक उठा. आज 7 बजे ही सुप्रिया का फोन कैसे आ गया.

"सरप्राइज, देखो पापा, अब लौकडाउन में घर नहीं आ सकती तो क्या? जल्दी फोन कर सरप्राइज तो दे ही सकती हूं न,"

सुप्रिया चहकी. सुप्रिया की वीडियो कौल की आवाज सुन कर रमा भी किचन से सब्जी काटने का सामान उठा कर ले आई और सुरेश की बगल में बैठ कर बोली, "प्रिया, तुम लोगों को सारा सामान उपलब्ध तो हो पा रहा है न?"

"अरे मम्मी, आप भी किस दुनिया में रहती हैं. यहां तो कौल करो, सामान तुरंत हाजिर हो जाता है. पापा, आई लव यू, आप वर्ल्ड के बैस्ट पापा हो. आई लव यू मम्मी, आप वर्ल्ड की बैस्ट मम्मी हो. सौरी मम्मी, अगर मेरी कोई गलती हो तो मुझे माफ कर देना, पापा आप भी मुझे माफ कर देना. क्या पता, कल मुझे वायरस ने जकड़

## हालात

अनगिनत ताले और
चाबी एक भी नहीं
द्वार ही द्वार हैं बाहर से बंद
और भीतर है आदमी
बाहर नहीं कोई.
चाबी रखी है कहां?
सरसराहट, चीख, आर्तनाद
अजनबी सायों के हाहाकार
जब तक होगी सुबह
मर जाएगा आदमी का विवेक.
कैद है दिमाग और तर्क आतंक से
आदमी का दिल पत्थर है
ताला है तो चाबी दो
द्वार है तो खोलने का अधिकार दो
पता नहीं चलता जेल में है
या पागलखाने में, घर में है
या सरायखाने में.

● **देवेंद्र कुमार मिश्रा**

रमा और सुरेश को तसल्ली थी कि सुप्रिया फ्लैट शेयर कर रह रही है और वे सब एकदूसरे का सहारा बनी हुई हैं.

---

लिया और मैं आप से अपनी गलतियों की माफी भी न मांग पाऊं. इसीलिए आज ही मांग ले रही हूं. मम्मी, मुझे आप का बनाया खाना हमेशा याद आता है. पापा, मुझे आप ने कभी किसी बात के लिए नहीं रोका, आप ने मुझे हमेशा प्रोत्साहित ही किया, आज मुझे घर आने का मन कर रहा है. मम्मी, मैं अपने हाथ का बना खा कर ऊब चुकी हूं," तभी उस के हाथ से फोन छीन कर उस की सहेली ऋचा ने कहा, "सौरी आंटीजी और अंकलजी, आप लोग प्रिया से कल आराम से बात कर लीजिएगा. आज इस की तबीयत कुछ ठीक नहीं है, तभी बहकीबहकी बातें कर रही है." फिर फोन काट दिया गया.

रमा का तो दिल ही बैठ गया. वह तो यों भी मामूली बातों पर टसुए बहाने लगती है. आज तो महामारीकाल है, ऐसे में उस का अपनी बेटी का बड़बड़ाना दिल में खौफ पैदा कर गया. उस ने देखा, सुरेश मोबाइल पर संदेश लिखने में लगा है.

"बड़े अजीब हैं आप, बेटी की कोई चिंता नहीं है? मैसेजमैसेज खेलने लगे," रमा गुस्से से बोली, "बेटी की हालत देखी? कितनी बकवास कर रही है?"

अपने मोबाइल की ओर देखते हुए संदेश की प्रतीक्षा में बेचैनी से पहलू बदलते हुए सुरेश ने अपनी पत्नी की ओर ताका. कुछ कहना चाहा, मगर फिर चुप्पी साध ली.

रमा का पारा चढ़ गया. कुछ समय के सन्नाटे के बाद सुरेश के फोन की मैसेजटोन बज उठी.

मैसेज पढ़ कर सुरेश ने रमा की ओर ठंडी सांस भर कर कहा, "बाप हूं मैं, मुझे भी फिक्र है, परियों की तरह रखा है उसे. आज टीवी पर सुबह के समाचार में लाल टीशर्ट और काली नेकर के साथ ही, उस के मुंह पर बंधे स्कार्फ को भी पहचान गया था. बस, खुद को झूठी तसल्ली देता रहा कि वह हमारी सुप्रिया नहीं, कोई और ही है. अब उस से बात कर के और उस की दोस्त को मैसेज कर बात को कन्फर्म भी कर लिया है."

"अरे, पहेलियां क्यों बुझा रहे हो? साफसाफ कहो," रमा बौखला कर बोली.

"टीवी पर देखा था उसे. शराब खरीदने की होड़ में तुम्हारी बिटिया सब से आगे लगी थी. उस का नतीजा भी तुम ने बात कर के देख लिया है," सुरेश ने यह बात कह कर रमा की प्रतिक्रिया जाननी चाही.

"अच्छा सरप्राइज दिया आज तो, मैं तो उस की हरकतों से डर गई थी. इस बार जब घर लौट कर आएगी तो अच्छे से खबर लूंगी," फिर सुरेश की तरफ डबडबाई आंखों से देख कर बोली, "वह सहीसलामत घर लौट आएगी न?" ●

# जीवन की मुसकान

मुंबई के अंधेरी स्टेशन पर मैं अपने 2 छोटेछोटे बेटों को ले कर चर्चगेट की तरफ जाने वाली लोकल ट्रेन में चढ़ रही थी. एक बेटे को चढ़ाया. दूसरे के साथ मैं चढ़ूं, इतने में गाड़ी चल पड़ी. मेरा बेटा डर के मारे कूदने लगा. मैं बेतहाशा ट्रेन के साथ प्लेटफौर्म पर दौड़ रही थी, चिल्ला रही थी, "बेटे, कूदना मत." अंदर की औरतों से हाथ जोड़ कर कह रही थी, "मेरे बेटे को खार स्टेशन पर उतार दीजिए. मैं दूसरी ट्रेन से आ रही हूं."

उस दिन हमारा समय खराब था. उस ट्रेन के जाने के बाद फास्ट ट्रेन आई. हड़बड़ाहट में दूसरे बेटे को ले कर उसी में चढ़ गई. वह खार स्टेशन नहीं रुकी. परंतु मैं दरवाजे पर खड़ी हो कर बेटे को ढूंढ़ रही थी. वह स्टेशन पर नहीं था. मैं बांद्रा उतर कर भीड़ को चीरती हुई वापस आने वाली नई ट्रेन में घुस गई. खार स्टेशन पर उतरी तो बेटे का कुछ पता नहीं. उम्मीद की किरण ले कर घर आई, वहां भी बेटा नहीं था. सास और पति का झुंझलाना, चिंतित होना स्वाभाविक था. दूसरे बेटे को घर में रख कर पति के साथ फिर खार स्टेशन पहुंची.

हम ने बोरीवली से चर्चगेट तक सभी रेलवे स्टेशनों पर बेटे के लिए उद्घोषणा करवा दी.

थोड़ी देर बाद पुलिस से विनती कर मैं ने ही घर फोन लगाया इस आशा से कि कोई मेरे बेटे को घर पर तो नहीं पहुंचा कर आया होगा. फोन बजते ही मेरी सास खनक कर बोलीं, "हांहां, बेटे को विलेपार्ले स्टेशन की एक महिला पुलिस छोड़ कर गई है. जल्दी आओ घर पर."

एक ठंडी सांस लेते हुए, सब का शुक्रिया अदा करते हुए घर पहुंची तो पता चला, जब मैं अंधेरी स्टेशन प्लेटफौर्म पर दौड़ रही थी. तभी एक औरत अंदर से चिल्ला रही थी, "आप का बेटा कूदेगा नहीं. मैं ने पकड़ कर रखा है. आप विलेपार्ले स्टेशन पर आइए, मैं वहां उतरने वाली हूं." वह बेचारी भी क्या करती? उस के पति जैंट्स डब्बे में बैठे थे जो विलेपार्ले उतर कर पत्नी की राह देखने वाले थे.

यह सब मेरे बेटे ने बताया और कहा, "मां, तुम विलेपार्ले आईं नहीं. वे दोनों पतिपत्नी अपना कार्यक्रम छोड़ कर तुम्हारा एक घंटे तक इंतजार करते रहे, फिर उन्होंने मुझे पुलिस के पास छोड़ दिया. एक महिला पुलिस ने मुझ से घर का पता पूछा, तो मैं ने बता दिया. वही मुझे ले कर घर आईं."

**स्वाति वर्तक** (श्रेष्ठ) ●

**आप भी भेजें**

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा.

पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

*अपना अनुभव **नाम** व **पते सहित** आप नीचे लिखे नंबर पर **एसएमएस** या **व्हाट्सऐप** के जरिए **मैसेज**/**औडियो** भी कर सकते हैं.*

**08527666772**

कहानी

# मैं फिर हार गया

• अरशद हाशमी

कितना अलग था राहुल और अमित का जीवन एकदूसरे से, कितनी अलग दुनिया थी दोनों की. लेकिन, अपनी आंतरिक असंतुष्टि का कारण राहुल को ठहराते हुए अमित कभी जान ही नहीं पाया कि असल में उस की हार का कारण क्या था.

"सर, एक बार फिर से बैस्ट सीईओ का अवार्ड जीतने पर आप को लखलख बधाइयां," औफिस में साथ काम करने वाले हरविंदर ने अमित को गले लगाते हुए कहा, तो वहां मौजूद सभी लोगों ने तालियों से अमित का अभिवादन किया.

"थैंक्यू वैरी मच. आप सभी की शुभकामनाएं मेरे लिए बहुत माने रखती हैं. आप सब के सहयोग से ही मैं लगातार दूसरी बार यह अवार्ड जीत पाया हूं. थैंक्स अगेन," अमित ने सभी सहकर्मियों का आभार प्रकट करते हुए कहा.

"सर, खाली थैंक्यू से काम नहीं चलेगा. पार्टी देनी होगी," राकेश ने हंसते हुए कहा तो सभी लोग 'पार्टी...पार्टी' चिल्लाने लगे.

"हां, क्यों नहीं. जब और जहां आप सब कहें," अमित ने भी हंसते हुए जवाब दिया.

"सर, बुर्ज खलीफा में एक बड़ा अच्छा इटालियन रैस्टोरैंट है. उस से अच्छा इटालियन खाना पूरे दुबई में कहीं नहीं मिलेगा," नवेद ने एक रैस्टोरैंट का नाम सुझाया.

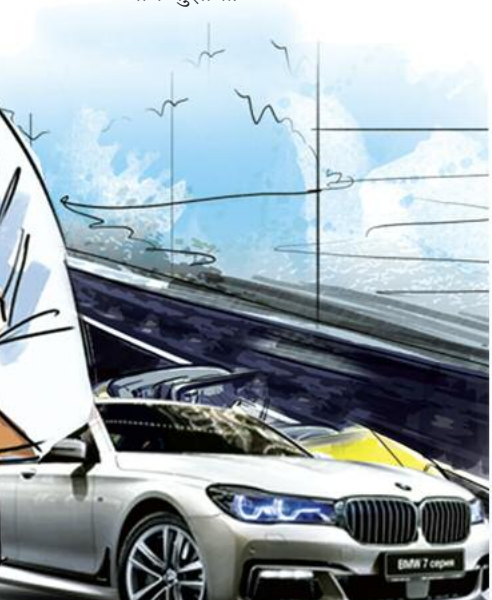

"हां, मैं भी वहां जा चुका हूं. वाकई वह दुबई का नंबर वन रैस्टोरैंट है," राकेश ने नवेद से सहमति जताते हुए कहा.

"फिर तो पार्टी वहीं होनी चाहिए. वैसे भी, हमारे अमित सर हर बात में नंबर वन हैं तो पार्टी भी नंबर वन रैस्टोरैंट में होनी चाहिए," यासिर ने उंगली से एक नंबर का इशारा करते हुए कहा तो सब के साथसाथ अमित भी हंसने लगा.

"सही में. सर, यू आर द बैस्ट एंड नंबर वन," पन्नेलाल ने अमित की तारीफ करते हुए कहा.

"सर, आप तो स्कूलकालेज में भी हमेशा नंबर वन रहे होंगे," आबिद ने कहा तो अमित की हंसी को मानो ब्रेक लग गया. एकदम से उस को राहुल की याद आ गई.

राहुल. अमित के पूरे जीवन में एकमात्र ऐसा व्यक्ति जो कभी उस से आगे निकला हो. वह भी एकदो बार नहीं, पूरे 4 साल वह क्लास में पहले नंबर पर आता रहा और अमित दूसरे नंबर पर. फिर पूरे दिन अमित का मन खिन्न सा रहा. रहरह कर उस को अपने स्कूल और राहुल की याद आती रही. रात को बिस्तर पर लेटने के बाद भी नींद उस की आंखों से कोसों दूर थी. ऐसा लग रहा था मानो कल की ही बात हो जब वह पहली बार दिल्ली पब्लिक स्कूल गया था. 8वीं कक्षा तक की पढ़ाई उस ने देहरादून के सब से मशहूर दून पब्लिक स्कूल से की थी. उस के पापा बड़े सरकारी अफसर थे और उन का ट्रांसफर दिल्ली हो गया तो अमित को भी देहरादून से दिल्ली आना पड़ा.

बचपन से अमित पढ़नेलिखने में बहुत अच्छा था और हमेशा ही क्लास में फर्स्ट

आता था. स्कूल के सारे टीचर उस से बहुत खुश थे. मनुज सर ने तो भविष्यवाणी कर दी थी कि अमित एक महान वैज्ञानिक या इंजीनियर बनेगा.

9वीं क्लास में रिजल्ट आने से पहले ही अमित को पूरा विश्वास था कि वह यहां भी फर्स्ट आएगा, लेकिन जब उस ने रिजल्ट देखा तो उस को मानो एक झटका सा लगा. उसे अपनी आंखों पर यकीन ही नहीं आ रहा था कि वह क्लास में दूसरी पोजीशन पर था. क्लास में ज्यादा किसी से बात न करने वाला राहुल फर्स्ट आया था. उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि बिजनौर जैसे छोटे शहर से आया राहुल कभी उसे पछाड़ कर फर्स्ट आ सकता है.

अब तो मानो अमित पर एक जनून सा छा गया. भले ही इस बार राहुल तुक्के से फर्स्ट आ गया हो लेकिन अगली बार वह उस को अपने आसपास भी नहीं आने देगा. अमित ने पढ़ाई में अपनी पूरी ताकत लगा दी. 10वीं की परीक्षा में उस ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दिया, लेकिन नतीजा वही निकला. राहुल न केवल क्लास में बल्कि स्कूल के साथसाथ पूरे देश में फर्स्ट आया था और अमित सेकंड.

अमित के मम्मीपापा उस की सफलता पर बेहद खुश थे, लेकिन अमित तो दुनिया का सब से दुखी इंसान बना हुआ था. पूरे दिन वह अपने कमरे से बाहर नहीं निकला. उस के मम्मीपापा ने उस को बहुत समझाया कि सेकंड आना कोई विफलता नहीं है, लेकिन अमित पर इन सब बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा. अब उसे, बस, एक ही बात कचोट रही थी कि वह राहुल से पीछे कैसे रह गया.

एक बार फिर से अमित ने अपनेआप से वादा किया कि वह इस बार जरूर फर्स्ट आएगा. वह फिर से पढ़ाई में डूब गया. अगले 2 साल अमित ने सबकुछ भुला दिया, दोस्त, मूवीज, क्रिकेट, सबकुछ. उस का एक ही लक्ष्य था, क्लास में फर्स्ट आना. लेकिन प्रकृति को तो कुछ और ही मंजूर था. न सिर्फ 11वीं बल्कि 12वीं क्लास में भी राहुल ही फर्स्ट आया था और अमित सेकंड. अमित बुरी तरह टूट चुका था. 99 प्रतिशत से भी ज्यादा अंक लाने के बाद भी वह दुखी था. कई बार उस के मन में स्वयं को समाप्त कर लेने का विचार आया, लेकिन मम्मीपापा का ध्यान आते ही उस ने ऐसा कुछ भी करने का विचार त्याग दिया.

पर अच्छी बात यह थी कि उस का चयन देश के सब से प्रतिष्ठित आईआईटी में हो गया था. फर्स्ट न आने की अपनी असफलता को एक बुरा स्वप्न समझ कर वह आईआईटी चला गया और वहां हर साल वह पूरे आईआईटी में फर्स्ट आता रहा. बाद में वह उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका चला गया. और फिर वहीं उस को एक बड़ी कंपनी में शानदार नौकरी भी मिल गई. अब वह कंपनी के दुबई औफिस का हैड था. लगभग हर महीने वह किसी देश के टूर पर होता. आज सबकुछ तो था अमित के पास. पत्नी, प्यारा सा बेटा, बंगला, गाड़ियां, और बड़ा सा बैंक बैलेंस, लेकिन फिर भी उस के दिल में एक शूल था, राहुल.

आज इतने दिनों बाद उस को राहुल की याद आ गई, तो मन विचलित हो गया. क्या कर रहा होगा राहुल? किसी बड़ी कंपनी में ऊंची पोस्ट पर होगा या अपनी कोई कंपनी खोल ली होगी?

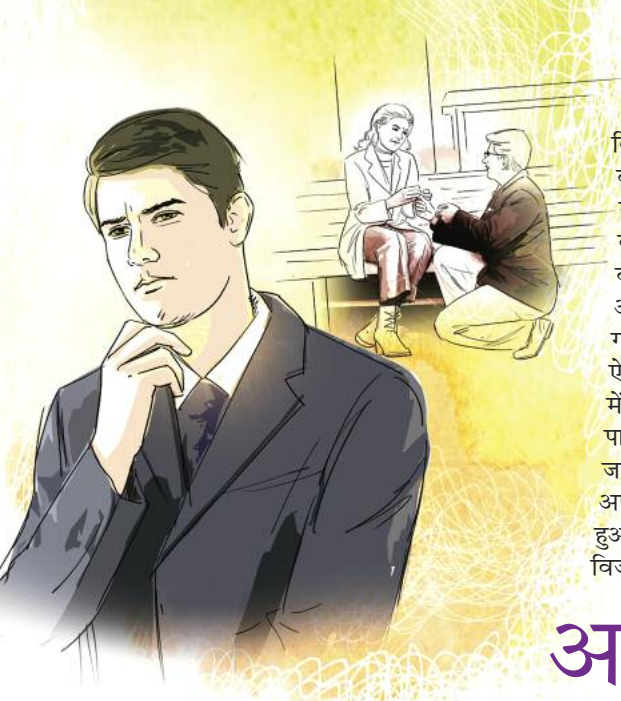

अमित असमंजस में पड़ गया कि राहुल का छोटा सा घर, पत्नी संग प्यार, लोगों के बीच उस की इज्जत, क्या पैसे वाला बन कर भी उसे यह सब हासिल हो पाया?

---

अपने स्कूली दिनों को याद करतेकरते पूरी रात बीत गई लेकिन अमित की आंखों में नींद कहां थी. फर्स्ट न आ पाने की अपनी असफलता उस को अपनी हार जैसी लग रही थी. ऐसे में उस के दिमाग में यह विचार भी आया कि वह स्कूल में भले ही राहुल को हरा न पाया हो लेकिन कामयाबी की इस दौड़ में वह जरूर राहुल को हराएगा.

सुबह होतेहोते उस ने फैसला कर लिया था कि इस बार भारत जा कर वह राहुल को ढूंढ़ निकालेगा और उस को एहसास दिला देगा कि असल में वह ही नंबर वन है.

फिर अगले कुछ दिनों में अमित दिल्ली में था. उस के मातापिता कभी दिल्ली में तो कभी उस के साथ दुबई में रहते थे. डिफैंस कौलोनी में अपने शानदार बंगले को देख कर अमित को अनायास ही राहुल का ध्यान आ गया. उस के दोस्त कहते थे कि ऐसा शानदार बंगला पूरी दिल्ली में कहीं नहीं है. अगर राहुल के पास ऐसा बंगला होता तो उन को जरूर पता होता. अमित को अपनी पहली जीत का आभास सा हुआ तो उस के होंठों पर एक विजयी मुसकान फैल गई.

अगले कुछ दिनों में अमित ने अपने सभी क्लासमेट्स को एक पार्टी देने का प्लान बनाया. दिल्ली के सब से महंगे पांचसितारा होटल में उस ने पार्टी का प्रबंध किया था. काफी सारे लोग आए, लेकिन राहुल नहीं आया. उस का क्लासमेट फैसल इसी होटल में जनरल मैनेजर था. उसी ने बताया कि राहुल अपने शहर बिजनौर में ही रह कर किसी स्कूल में टीचर बन गया है.

'स्कूल टीचर,' अमित ने एक व्यंग्यात्मक हंसी बिखेरी.

यह जान कर कि राहुल किसी छोटे से स्कूल में टीचर है, अमित उस से मिलने के लिए बेचैन ही हो उठा. अब तो अपनी हार का बदला लेने का अवसर उस को साफसाफ नजर आ रहा था.

अगले दिन ही अमित ने अपनी बीएमडब्लू निकाली और बिजनौर की तरफ चल दिया. राहुल का स्कूल ढूंढ़ने में उसे ज्यादा दिक्कत नहीं हुई. वह स्कूल के गेट पर पहुंचा तो वौचमैन से राहुल के

बारे में पूछा. वौचमैन ने अमित को ऊपर से नीचे तक देखा और बोला, "बिलकुल, यहीं तो काम करते हैं हमारे राहुल सर. आप कौन हैं वैसे?"

सवाल के जवाब में अमित ने कुछ सोचते हुए कहा, "हम एक ही स्कूल के हैं."

"अरे, आप राहुल सरजी के दोस्त हैं. आइए न, मैं ले चलता हूं आप को उन तक."

"नहींनहीं, मैं इंतजार कर कर लूंगा, कोई बात नहीं," अमित ने कहा और वह वहीं खड़ा हो कर स्कूल की छुट्टी होने का इंतजार करने लगा.

दोपहर बाद स्कूल की छुट्टी हो गई और थोड़ी देर बाद राहुल भी स्कूल से बाहर आता दिखाई दिया. साधारण से कपड़े पहने राहुल अपनी स्कूटी पर बैठा ही था कि अमित उस के सामने आ गया.

"हाय राहुल. कैसे हो? पहचाना?" अमित ने राहुल की तरफ हाथ बढ़ाते हुए कहा.

महंगे सूटबूट पहने अमित को एक क्षण के लिए तो राहुल पहचान ही नहीं पाया.

"अरे यार, मैं अमित. हम लोग डीपीएस में साथ पढ़ते थे," अमित ने राहुल को याद दिलाते हुए कहा.

"अरे, अमित, तुम यहां? सौरी इतने दिनों बाद देखा तो एकदम से पहचान नहीं पाया," राहुल ने अमित का हाथ अपने हाथों में लेते हुए बड़ी खुशी से कहा.

"वह मैं जरा अपनी कंपनी के काम से चांदपुर आया था. फैसल ने बताया था तुम आजकल बिजनौर में ही रहते हो, तो सोचा मिलता चलूं," अमित ने 'अपनी कंपनी' पर जोर देते हुए कहा. राहुल बात का जवाब देता, उस से पहले ही उस का फोन बज उठा.

राहुल ने फोन उठा लिया और 'हैलो' कहते ही रुक कर सुनने लगा और फिर बोला, "सब ठीक है यहां, तुम बताओ," फिर रुक कर कहा, "हां, तुम मेल भेज दो मैं आगे फौरवर्ड कर दूंगा."

अमित राहुल की बात ध्यान से सुन रहा था, बोला, "स्कूल का काम?"

"अरे नहीं, एक स्टूडैंट है सिंगापुर में रहता है, प्रोफैसर है. जिस कालेज में वह पढ़ाता है वहां एक हिंदी के प्रोफैसर के लिए जगह खाली है उसी के लिए पूछ रहा था. मैं हिंदी के प्रोफैसर को मेल सैंड करने की बात कर रहा था."

"अच्छा," अमित ने कहा.

पिछली छोड़ी हुई बात को आगे बढ़ाते हुए राहुल ने कहा, "यहां आ कर तुम ने बहुत अच्छा किया. चलो, बाकी बातें घर चल कर करेंगे."

राहुल अमित से मिल कर बहुत खुश नजर आ रहा था.

"अरे, भाभी को परेशान करने की क्या जरूरत है. चलो, आज तुम्हें किसी फाइवस्टार होटल में लंच कराता हूं," अमित के दिल को धीरेधीरे बड़ा आनंद आ रहा था.

"परेशानी कोई नहीं है. और यहां बिजनौर में तुम्हें कोई फाइवस्टार होटल नहीं मिलेगा," राहुल ने हंसते हुए कहा.

"अरे यार, तुम्हारे घर तक मेरी गाड़ी चली भी जाएगी या नहीं?" अमित ने व्यंग्य का एक और तीर फेंका.

"हां, यह प्रौब्लम तो है. चलो, तुम्हारी गाड़ी मैं अपने एक मित्र के घर खड़ी करा

दूंगा. उस का घर पास ही है," राहुल अमित के व्यंग्य को समझ नहीं पाया.

"अच्छा, चलो आओ, बैठो, चलते हैं," अमित ने अपनी नई कार की ओर अहंकार से देखते हुए कहा.

"लेकिन मेरा स्कूटर...चलो छोड़ो, इसे बाद में ले जाऊंगा."

अमित और राहुल कार में बैठे और आगे बढ़ गए. रास्ते में राहुल और अमित स्कूल के क्लासमेट्स की बातें कर रहे थे कि बगल में पुलिस की गाड़ी चलती दिखाई दी. गाड़ी से एक पुलिस वाले ने राहुल की तरफ हाथ हिलाया तो राहुल ने अमित को कार साइड में रोकने के लिए कहा. पुलिस की गाड़ी भी साथ में आ कर रुक गई. गाड़ी में से 2 पुलिस वाले बाहर निकले. उन में एक ठाटबाट वाला सीनियर इंस्पैक्टर और एक हवलदार था. दोनों ने राहुल को देखा और कहा, 'नमस्ते, राहुल सर.'

"कैसे हो, बहुत दिन बाद मिले हो," फिर अमित का परिचय कराते हुए कहा, "ये मेरे दोस्त हैं अमित, विदेश में बड़ी कंपनी में उच्च अधिकारी हैं."

'नमस्ते,' सीनियर इंस्पैक्टर ने अमित से कहा और फिर राहुल की तरफ मुखरित हो कर बोला, "सर, बेटे का एडमिशन आप के स्कूल में कराना है, सोचा, एक बार खुद ही आप से कह कर सुनिश्चित कर लूं कि आप ही उसे पढ़ाएंगे. आप ने मुझे पढ़ालिखा कर यहां तक पहुंचा दिया है, तो मेरे बेटे को भी आप से सीखने का मौका मिले, इस से ज्यादा अच्छा और क्या हो सकता है."

"अरे, तुम मुझे यह कौल कर के कह देते," राहुल ने कहा.

## गरीब

*अगर तुम गरीब पैदा हुए हो तो ये तुम्हारी गलती नहीं है, लेकिन अगर गरीब मर जाते हो तो ये तुम्हारी गलती है.*

*–बिल गेट्स*

सरिता

"बिलकुल नहीं, ऐसा अनादर कैसे कर सकता हूं मैं. मैं तो कल आने वाला था आप से मिलने, पर आप आज ही दिख गए."

"अच्छा, चलो यह भी सही ही हुआ."

कुछ देर घरबार की बात कर राहुल अमित के साथ वापस कार में बैठ गया.

अमित ने सब ध्यान से सुना और राहुल का इतना आदर देख कर थोड़ा चौंका भी.

राहुल के दोस्त की गली में जब अमित की लंबीचौड़ी व महंगी कार पहुंची तो लोगों की नजरें भी कार के साथसाथ चलने लगीं. अमित के चहरे पर अत्यंत खुशी के भाव उभरने लगे थे. कार राहुल के दोस्त के घर से बाहर निकली तो लोग और बच्चे 'नमस्ते राहुल सर' कहते हुए आनेजाने लगे. अमित ने कार खड़ी की और

राहुल के साथ उस के घर की तरफ बढ़ने लगा.

"मैं तो सोच रहा था, तुम किसी बड़ी कंपनी में इंजीनियर बन गए होगे. यह तुम टीचर कहां बन बैठे," पैदल चलतेचलते अमित ने राहुल से कहा.

"मैं तो हमेशा से टीचर ही बनना चाहता था," राहुल ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया.

"अच्छा, अगर टीचर ही बनना था तो यह फटीचर स्कूल ही रह गया था. तुम कहो तो अमेरिका या इंग्लैंड में किसी से बात करूं. यों चुटकियों में तुम्हारा चयन करा दूंगा. या कहो तो दिल्ली या दुबई में एक स्कूल ही खुलवा देता हूं. दोस्तों के लिए इतना तो कर ही सकता हूं," अमित ने बड़े गर्व के साथ राहुल से कहा.

"अरे भाई, मैं भी इसी स्कूल में पढ़ चुका हूं. हां, स्कूल की बिल्डिंग जरूर पुरानी है लेकिन यहां की पढ़ाई पूरे जिले में सब से अच्छी मानी जाती है." अपने स्कूल के बारे में बताते हुए राहुल की आंखों में एक चमक सी थी.

"और तुम्हारे औफर के लिए धन्यवाद, लेकिन मैं यहीं खुश हूं," राहुल ने मुसकराते हुए कहा तो अमित को थोड़ी निराशा सी हुई.

"लेकिन इस छोटे से शहर में रह कर तुम कितनी तरक्की कर पाओगे? अपना नहीं तो अपने बच्चों के बारे में सोचो. कल उन को भी किसी बड़े शहर जाना ही होगा. मेरी मानो तो मेरे साथ दुबई चलो. चाहो तो मेरी कंपनी में जौब कर लेना या फिर तुम्हें किसी स्कूल में सैट करा दूंगा," अमित ने राहुल को समझाने की कोशिश की.

राहुल के घर जाने तक गली के कई लोग राहुल को 'नमस्ते सर' कहते सत्कार व्यक्त करने लगे. अमित के साथ कभी ऐसा नहीं हुआ था. राहुल के प्रति लोगों के इस प्रकार के सत्कारभाव को देख वह थोड़ा सकुचाया.

एक आदमी अपने बेटे को ले कर जा रहा था और राहुल को देख, रुक कर कहने लगा, "अरे सर, कैसे हैं आप. सब बढ़िया तो है न?"

"हां, सब ठीक है, आप बताइए."

"हम भी बहुत अच्छे हैं. यह पिंकू जब से आप की क्लास में गया है, इतना तेज हो गया है कि हर समय गणित के जाने कैसेकैसे प्रश्न पूछने लगता है, हम तो कान पकड़ लेते हैं," कह कर वह आदमी हंसने लगा. उसे देख राहुल भी हंस दिया.

अमित यह सब देखसुन असमंजस में पड़ गया. क्या उसे कभी इतना सम्मान, इतना प्यार मिला है लोगों से? वह जहां काम करता है वहां तो जिस की जेब में जितने बड़े नोट हैं उतनी ही बड़ी उस की इज्जत है या कहें उतना ही लोग उसे भाव देते हैं. यहां तो राहुल के साधारण होने पर भी लोग जहां देखते उस के आगेपीछे लग जाते. वह तो किसी को इस तरह का कोई लाभ भी नहीं पहुंचा सकता जिस के लालच में लोग ये सब करते हों. जिस तरह राहुल के छात्रों ने उसे याद रखा है और रख रहे हैं, क्या ऐसा कोई है जो अमित को याद रखेगा?

अमित यह सब सोच ही रहा था कि चलतेचलते राहुल का घर भी आ गया. 2 कमरों का छोटा सा घर था, लेकिन सबकुछ बड़ा व्यवस्थित और साफसुथरा था.

"ये हैं मेरे स्कूल के मित्र अमित. विदेश में रहते हैं. आज कितने ही सालों के बाद मिले हैं. जल्दी से कुछ खाना खिलवाओपिलाओ," राहुल ने अमित का परिचय अपनी पत्नी से कराते हुए कहा.

दोपहर के भोजन के वक्त पर तो राहुल की पत्नी ने झटपट गर्मागर्म रोटी और सब्जी और दाल परोस दी. अमित ने इतना स्वादिष्ट खाना कई वर्षों बाद खाया था.

"सच कह रहा हूं भाभीजी, इतना स्वादिष्ट खाना मैं ने शायद पूरे जीवन में कभी नहीं खाया," अमित ने दिल से खाने की तारीफ करते हुए कहा.

# भयभीत है समाज

भय एक भूत है
आज लगता है प्रत्येक व्यक्ति
छोटा या बड़ा, नर या नारी
शिक्षित या अशिक्षित-आक्रांत है
फंसा है इस के जाल में.

भयभीत है हर युवक, युवती
टूटते रिश्तों का भय
सामाजिक बंधनों,
आर्थिक असुरक्षा का भय
कचोटता है प्रतिपल,
दबोचता है हर घड़ी.

भयभीत हैं मातापिता
स्वप्न सुनहरे भविष्य के
निज के व निज संतान के
हर पल कगार पर हैं
विनाश के.

भय तो पहले भी था
पर तब यह भूत न था
इतना विकराल रूप
अभी धारण किया है इस ने.

हम ने ही इसे पाला है
हम ने इसे पोषित किया
भयभीत समाज जुड़ता नहीं
न स्वयं से न विश्व से.

भयमुक्त हो भय त्याग दो
भय भूत को तुम मार दो.

● **अनुराग जुल्का**

खाने के बाद अमित ने फिर से राहुल को दुबई चलने का औफर दे डाला. इस बार राहुल थोड़ा गंभीर हो कर बोला, "यह सच है कि मैं बहुत ही मामूली पगार पर काम कर रहा हूं और मेरा घर भी छोटा सा है, लेकिन जो चीज मुझे यहां रोकती है वह है मेरी आत्मसंतुष्टि. बचपन से ही मैं एक टीचर बनना चाहता था. एमएससी और पीएचडी करने के बाद देशविदेश से मुझे कई औफर आए, लेकिन मैं ने अपने शहर के इस स्कूल को ही चुना क्योंकि मैं अपने शहर के लिए कुछ करना चाहता था.

"जानते हो, पहले यहां 10 में से एक छात्र ही इंजीनियरिंग या मैडिकल कालेज में एडमिशन ले पाता था. मैं अपनी तारीफ नहीं कर रहा लेकिन पिछले 10 सालों में मेरे स्कूल से 50 बच्चे मैडिकल और 100 से ज्यादा बच्चे इंजीनियरिंग कालेज में प्रवेश ले चुके हैं.

इन बच्चों की सफलता मुझे वह खुशी और आत्मसंतुष्टि देती है जो शायद किसी कंपनी का सीईओ बनने पर भी नहीं मिलती. और अगर अपना मन खुश है तो चाहे बिजनौर में रहो या बेंगलुरु या फिर बोस्टन, इस से कोई फर्क नहीं पड़ता. और फिर यहां मेरी पत्नी और बच्चे भी खुश हैं. मुझे और क्या चाहिए." राहुल के चेहरे पर आत्मसंतुष्टि की चमक थी.

और दूसरी तरफ अमित हैरान था. उस को याद आ रही थी अपनी तनावभरी जिंदगी, न सेहत का ध्यान न परिवार संग बिताने के लिए समय. कभीकभी तो उस को अपने बेटे के साथ डिनर किए हफ्तों बीत जाते.

छुट्टी के नाम पर साल में 2-4 दिन परिवार को कहीं विदेश घुमा लाता, उस में भी उस का फोन लगातार बजता रहता. नौकरों के हाथों से बना खाना खाखा कर वह बचपन के स्वादिष्ट खानों का स्वाद ही भूल चुका था. इतनी कम उम्र में ही उस को हाई ब्लडप्रैशर और हलकी शुगर भी हो गई थी.

सामने दीवार पर राहुल, उस की पत्नी और उन के बेटे की तसवीर लगी थी. सब कितने खुश नजर आ रहे थे. वहीं दूसरी तरफ उस को अपनी पत्नी से लड़ने तक की फुरसत नहीं थी. बेटे के स्कूल में क्या चल रहा है, उस को पता ही नहीं. मम्मीपापा साल में कुछ दिन उस के साथ रहने आते तो उन से भी, बस, थोड़ीबहुत ही बातचीत हो पाती.

अब उस को लग रहा था कि राहुल तो कभी रेस में था ही नहीं, वह तो खुद अपनेआप से ही रेस लगा रहा था, और बारबार अपनेआप से ही हार रहा था.

'मैं फिर हार गया,' अमित के मुंह से निकल गया.

'कुछ कहा तुम ने,' राहुल ने उस को सवालिया नजरों से देखा.

'कुछ नहीं,' अमित ने मुसकराते हुए कहा. अब उस को अपनी हार पर कोई दुख नहीं था. ●


**जीवन में तरक्की के असली माने क्या हैं**

इस तरह के सवालों के सही उत्तर पाने के लिए सरिता नियमित पढ़िए. सरिता के वार्षिक ग्राहक बनिए. रजिस्टर्ड डाक से सुरक्षित डिलीवरी.

**Subscription.mag@delhipress.in** पर ईमेल भेजिए या **08588843408** पर 10 बजे से 6 बजे तक फोन कर पूरी जानकारी लें.

# दिन दहाड़े

बात पुरानी है. मेरे भैया सीडी प्लेयर, फिल्मों की सीडी किराए पर देते थे. एक दिन हमारे घर 2 लड़के आए. दोनों शरीफ लग रहे थे. उन्होंने सीडी प्लेयर तथा सीडी एक दिन के लिए मांगी. भैया ने कहा, 1000 रुपए अग्रिम जमा कराओ. उन लड़कों ने 200 रुपए दिए तथा कहने लगे कि सामने गुप्ताजी के मकान में किराएदार हैं. हम लौटते वक्त दे देंगे. भैया ने कहा, "नहीं." तो वे बोले, "हम सुबह समय पर सीडी प्लेयर लौटा देंगे." भैया उन की बातों में आ गए. उन का नाम, पता लिख कर सामान दे दिया.

अगले दिन सुबह क्या, शाम तक वे सीडी प्लेयर ले कर नहीं आए. भैया चिंता में पड़ गए. जब पता करने गए तो उन के हाथों के तोते उड़ गए.

गुप्ताजी के घर कोई उस नाम का किराएदार नहीं था. भैया ने माथा पकड़ लिया. वे दिन दहाड़े लुट गए थे.

**जगदीश नेगी** (सर्वश्रेष्ठ)

एक दिन एक सरदारजी कई पैंट पीस ले कर हमारे स्कूल में आए. उन्होंने कहा, "हम गवालियर कौटन मिल के ड्राइवर हैं. हमें रियायत दरों पर कंपनी कपड़ा देती है. उसी दर पर हम ये कपड़े ले कर ग्वालियर लौट जाएंगे."

कपड़े देखने में सुंदर व रंगीन थे. इस तरह स्टाफ के कुछ लोगों ने 3-3 पैंट पीस हर एक ने रियायती दरों पर खरीद लिए. जिन के पास उस समय रुपए नहीं थे, उन को प्रधानाचार्य महोदय ने अपनी तरफ से उधार दे कर पूर्ति कर दी. सरदारजी पैसे ले कर चले गए. दूसरे दिन हम ने उन पैंट पीस को धो कर दर्जी से मिलने के लिए तैयार किए तो वे सिकुड़ कर विकृत हो गए. सभी पैंट पीस अपना मूल स्वरूप खो चुके थे, तो दर्जी ने भी हमें उन्हें नहीं बनाने की सलाह दी. **युधिष्ठिर कुमार जोशी**

मेरी रसोईगैस खत्म हो गई थी. गैस वाला सिलैंडर ले कर आया. उस ने अपना टैंपो सड़क पर खड़ा किया तथा मेरे घर में पहली मंजिल पर सिलैंडर देने आया. उस ने मुझ से पैसे लिए तथा सीढ़ियां उतर कर जाने लगा.

तभी उस ने देखा कि एक आदमी टैंपो पर से सिलैंडर उतार रहा है. गैस वाले के देखते ही देखते वह आदमी अपने साथी, जो कि स्कूटर स्टार्ट कर के उस पर बैठा था, के पीछे बैठ कर सिलैंडर ले कर भाग गया. गैस वाला वहीं अपना सिर पकड़ कर बैठ गया. वह दिन दहाड़े लुट चुका था. **सुमन गोयल** ●


**आप भी भेजें**

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

*अपना अनुभव **नाम** व **पते सहित** आप नीचे लिखे नंबर पर **एसएमएस** या **व्हाट्सऐप** के जरिए **मैसेज/औडियो** भी कर सकते हैं.*

**08527666772**

*सरिता*, बीस साल पहले, अगस्त (द्वितीय) 2000

# मृत्युदंड से रिहाई

• श्रुति अग्रवाल

एक अनजाना खौफ मां को अंदर ही अंदर डराए जा रहा था. इसी कारण उन का व्यवहार भी अजीब सा हो गया था. विपिन मां के इस व्यवहार से हैरानपरेशान था...

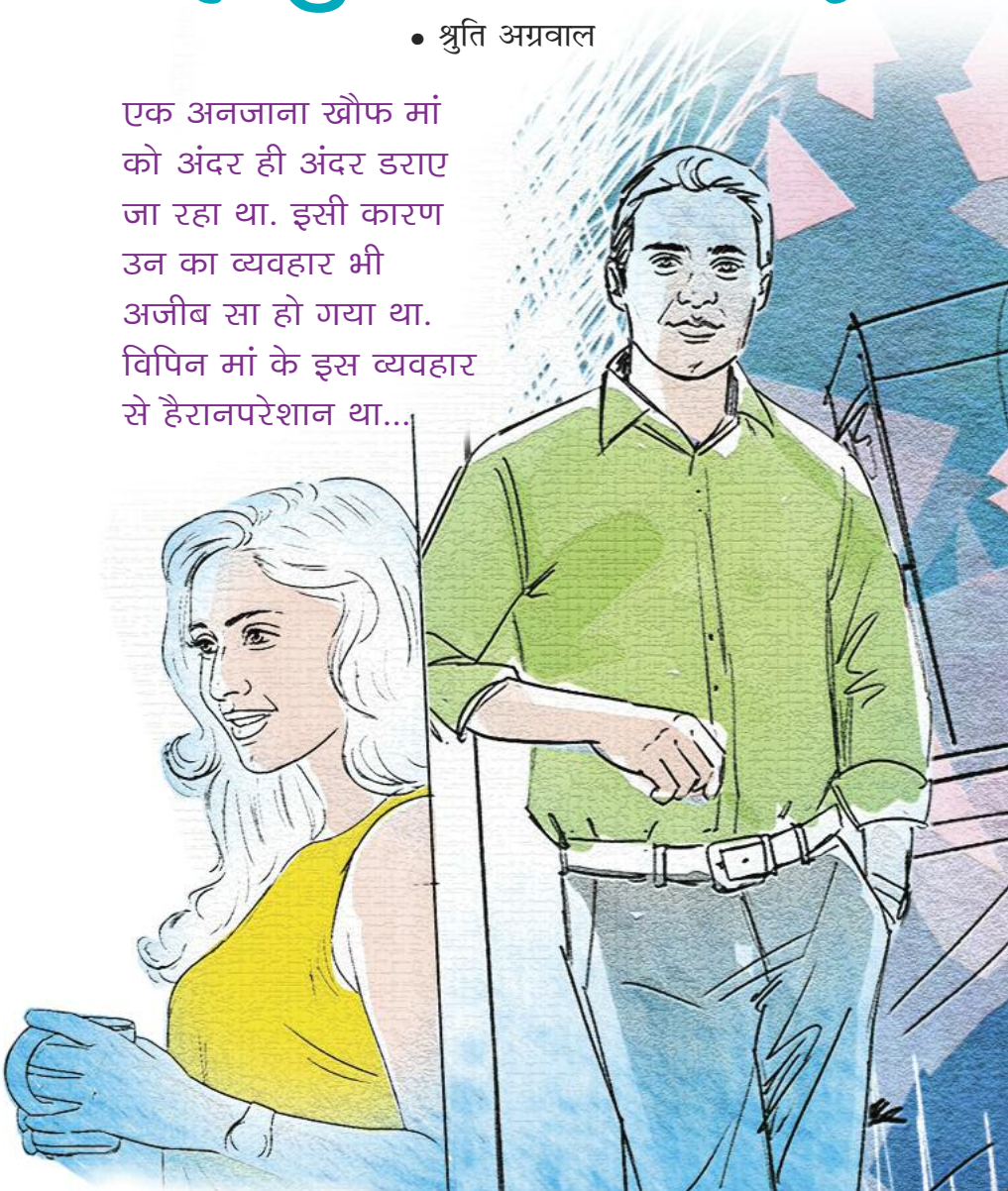

उस की मुखमुद्रा कठोर हो गई थी और हाथ में लिया पेन कागज पर दबता चला गया. 'खट' की आवाज हुई तो विपिन चौंक कर बोला, "ओह मम्मी, आप ने फिर पेन की निब तोड़ दी. आप बौलपेन से क्यों नहीं लिखतीं, अब तो उसी का जमाना है." विपिन के सुझाव को अनसुना कर वे बेटे के हाथ को अपनी गरदन से निकाल कर बालकनी में चली गईं. बिना कुछ कहेसुने यों मां का बाहर निकल जाना विपिन को बेहद अजीब लगा था. पर इस तरह का व्यवहार वे आजकल हमेशा ही करने लगी हैं. उस की समझ में नहीं आ रहा था कि मां ऐसा क्यों कर रही हैं.

आज ही क्या हुआ था भला? वह औफिस से लौट कर आया तो पता चला मम्मी उस के ही कमरे में हैं. वहां पहुंच कर देखा तो वे उस की स्टडी टेबल पर झुकी कुछ लिख रही थीं. विपिन ने कुरसी के पीछे जा, शरारती अंदाज में उन के गले में बांहें डाल कर किसी पुरानी फिल्म के गीत की एक कड़ी गुनगुना दी थी, 'तेरा बिटवा जवान हो गवा है, मां मेरी शादी करवा दे.' इतनी सी बात में इतना गंभीर होने की क्या बात हो सकती है? वे तो पेन की निब को कागज पर कुछ उसी अंदाज में दबाती चली गई थीं जैसे किसी मुजरिम को मृत्युदंड देने के बाद जज निब को तोड़ दिया करते हैं.

इस समय विपिन सीधा सुधा से मिल कर आया था और आज उन दोनों ने और भी शिद्दत से महसूस किया था कि अब एकदूसरे से दूर रहना संभव नहीं है. फिर अब परेशानी भी क्या थी? उस के पास एक अच्छी नौकरी थी, अमेरिका से लौट कर आने के बाद तनख्वाह भी बहुत आकर्षक हो गई थी. फ्लैट और गाड़ी कंपनी ने पहले ही दे रखे थे. और फिर, अब वह बच्चा भी नहीं रहा था.

उस के संगीसाथी कब के

शादी कर अपने बालबच्चों में व्यस्त थे. अब तक तो खुद मम्मी को ही उस की शादी के बारे में सोच लेना चाहिए था. पर पता नहीं क्यों उस की शादी के मामले में वे खामोश हैं. यद्यपि अमेरिका जाने से पहले वे अपने से ही 2-1 बार शादी का प्रसंग उठा चुकी थीं. पर उस समय उस के सामने अपने भविष्य का प्रश्न था. वह कैरियर बनाने के समय में शादी के बारे में कैसे सोच सकता था? उसे ट्रेनिंग के लिए पूरे 2 वर्षों तक अमेरिका जा कर रहना था और मम्मी इस सचाई को जानती थीं कि किसी भी लड़की को ब्याह के तुरंत बाद 2 सालों के लिए अकेली छोड़ जाना युक्तिसंगत नहीं लगता. सो, हलकेफुलके प्रसंगों के अलावा उन्होंने इस विषय को कभी जोर दे कर नहीं उठाया था. यही स्वाभाविक था. वहीं, उस ने भी कभी मां से सुधा के बारे में कुछ बताने की आवश्यकता नहीं समझी थी. सोचा था जब समय आएगा, बता ही देगा.

पर अब हालात बदल चुके हैं. अपने संस्कारजनित संकोच के कारण यह बात वह साफसाफ मां से कह नहीं पा रहा था. परंतु आश्चर्य तो यह है कि मां भी अपनी ओर से ऐसी कोई बात नहीं उठातीं. हंसीमजाक में वह कुछ इशारे भी करता, तो उन की भावभंगिमा से लगता कि वे इस बात को बिलकुल समझती ही न हों.

मम्मी का व्यवहार बड़ा बदलाबदला सा है आजकल. अचानक ही मानो उन पर बुढ़ापा छा गया है, जिस से उन के व्यक्तित्व में एक तरह की बेबसी का समावेश हो गया है. चुप भी बहुत रहने लगी हैं वे. वैसे, ज्यादा तो कभी नहीं बोलती थीं. उन का व्यक्तित्व संयमित और प्रभावशाली था, जिस से आसपास के लोग जल्दी ही प्रभावित हो जाते थे. हालात ने उन के चेहरे पर कठोरता ला दी थी. फिर भी उस के लिए तो ममता ही छलकती रहती थी.

वह जब 3-4 साल का रहा होगा तब किसी दुर्घटना में पिताजी चल बसे थे. मायके और ससुराल से किसी तरह का सहारा न मिलने पर मम्मी ने कमर कस ली और जीवन संग्राम में कूद पड़ीं. बहुत पढ़ीलिखी नहीं थीं, पर जीवन के प्रति बेहद व्यावहारिक नजरिया था. छोटी सी नौकरी और मामूली सी तनख्वाह के बावजूद उस को कभी याद नहीं कि उस के भोजन या शिक्षा के लिए कभी पैसों की कमी पड़ी हो. इसी से वह उन आंखों के हर इशारे की उतनी ही इज्जत करता था, जितनी बचपन में. शायद उन की ममता में ही वह ताकत थी, जिस ने उसे कभी गलत राह पर जाने ही नहीं दिया. मनचाहा व्यक्तित्व मढ़ा था उस का और फिर अपने कृतित्व पर फूली न समाई थीं.

> इधर सुधा का मम्मी से मिलने का इसरार बढ़ता जा रहा था, क्योंकि उस के घर वाले उस के लिए रिश्ते तलाश रहे थे और वह विपिन के बारे में किसी से कुछ कहने से पहले एक बार मम्मी से मिल लेना चाहती थी, पर मम्मी का स्वभाव उसे कुछ रहस्यमयी लग रहा था.

पर यह सब विदेश जाने से पहले की बात है. अब तो मम्मी को बहुत बदला हुआ सा पा रहा था वह. अच्छीखासी बातें करतेकरते एकाएक वितृष्णा से मुंह फेर लेती हैं. हंसना तो दूर, मुसकराना भी

कभीकभी होता है. तिस पर से पेन तोड़ने की जिद? उस ने स्पष्ट देखा है, निब अपने से नहीं टूटती, जानतेबूझते दबा कर तोड़ी जाती है.

उस दिन एक और भी अजीब सी घटना हुई थी. वह गहरी नींद में था, पर अपने ऊपर कुछ गीला, कुछ वजनी एहसास होने से उस की नींद टूट गई थी. उस ने देखा कि मम्मी फूटफूट कर रोए जा रही थीं. छोटे बच्चे की तरह उस का चेहरा हथेलियों में भर कर और अस्फुट स्वर में कुछ बड़बड़ा रही थीं, पर उस के आंखें खोलते, वे पहले की तरह खामोश हो गईं. वह लाख पूछता रहा, पर केवल यही कह कर चली गईं कि कुछ बुरा सपना देखा था. उस ने इतने सालों में पहली बार मम्मी को रोते हुए देखा था, जिस ने इतनी बड़ीबड़ी मुसीबतें सही हों, वह सपने से डर जाए? क्या ऐसा भी होता है?

इधर सुधा का मम्मी से मिलने का इसरार बढ़ता जा रहा था, क्योंकि उस के घर वाले उस के लिए रिश्ते तलाश रहे थे और वह विपिन के बारे में किसी से कुछ कहने से पहले एक बार मम्मी से मिल लेना चाहती थी, पर मम्मी का स्वभाव उसे कुछ रहस्यमय लग रहा था. इसीलिए विपिन पसोपेश में था और कोई रास्ता निकाल नहीं पा रहा था. एक बार उस के मन में यह विचार आया कि कहीं ऐसा तो नहीं कि घर में किसी दूसरी औरत के आने से मां डर रही हैं कि स्वामित्व का गर्व बंटाना पड़ जाएगा? उसे अपना यह विचार इतना ओछा लगा कि मन खराब हो गया. अपना घर मानो काटने को दौड़ रहा था. सो कुछ समय किसी मित्र के साथ बिताने की सोच विपिन बाहर निकल गया.

**नीचा**

*आप की इजाजत के बिना कोई आप को नीचा नहीं दिखा सकता है.*

*–एलिनौर रूजवेल्ट*

सरिता

विपिन उन के व्यवहार से उकता कर घर से निकल गया है, यह उन्हें भी पता है. पर वह भी क्या करे? उन का तो सबकुछ स्वयं ही मुट्ठी से फिसलता जा रहा है. अंधेरों के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं है. यह हरीभरी खूबसूरत बालकनी, जिस के कोनेकोने को सजातेसंवारते वे कभी थकती ही नहीं थीं, आज काट खाने को दौड़ रही है. हालांकि, यह जगह उन्हें बहुत पसंद थी. यहां से सबकुछ छोटा, पर खूबसूरत दिखता है. कुछ उसी तरह जैसे कर्तव्य की नुकीली धार पर से जिंदगी अब मखमलों पर उतर आई थी. शायद अब जीने का लुत्फ लेने का समय आ गया था. नौकरी छोड़ चुकी थीं, इसलिए उन के पास खूब सारा समय था रचरच कर अपने घर को सजाया था उन्होंने. इसी उत्साह में विपिन का 2 वर्षों के लिए अपने से दूर जाना भी उन को इतना नहीं खला था. उसे अपनी जिंदगी को रास्ते

दिखाने हैं, तो हाथ आए मौके लपकने तो पड़ेंगे ही. वे क्यों अपने आंसुओं से उस का रास्ता रोकें?

यह भी सोचा था कि जैसे जीवनभर केवल अपने सहारे ही खड़ी रहीं, बुढ़ापे में भी अपने ही सहारे रहेंगी. मानसिक स्तर पर बेटे पर इतनी आश्रित नहीं होंगी कि उन का वजूद उसे बोझ नजर आने लगे. आर्थिक स्तर पर तो उन की कोई खास जरूरतें ही नहीं थीं. जीवनभर जरूरतों में कतरब्योंत करतेकरते अब तो वह सब आदत में आ चुका है. हां, समय का सदुपयोग करने के लिए आसपास के ड्राइवरों, मालियों और नौकरों के बच्चों को इकट्ठा कर उन्होंने एक छोटा सा स्कूल खोल लिया था और व्यस्त हो गई थीं.

सबकुछ सुखद और बेहद सुंदर था, पर क्या पता था कि खुशियां इतनी क्षणिक होती हैं. एक दिन मेकअप से पुता एक अनजान चेहरा उन के पास आया था. उन्होंने उसे आश्चर्य से देखा था क्योंकि उस के चेहरे पर कोमलता का नामोनिशान न था. उस ने बताया था कि वह अनुपमा प्रकाश, विपिन की प्रेमिका है. उन लोगों ने सभी सीमाएं पार कर ली थीं. सो, अब उस अतिक्रमण का बीज उस के गर्भ में पल रहा है, पर विपिन अमेरिका से न उस की चिट्ठी का जवाब देता है, न फोन पर ही बात करता है. सब तरह से हार कर अब वह उन की शरण में आई है.

क्या इन परिस्थितियों में फंसी हुई किसी परेशान लड़की की आंखें इतनी निर्भीक हो सकती हैं? यह सोच कर उन्होंने उसे डांट कर घर से बाहर निकाल दिया था, पर तब भी शक का बीज तो मन में पड़ ही चुका था. उन्होंने यह भी सोचा कि लड़की के बारे में जांचपड़ताल करेंगी और अगर नादानी में विपिन से कोई गलती हुई है तो इस के साथ कोई अन्याय नहीं होने देंगी. अपने विपिन के बारे में उन के मन में अगाध विश्वास था.

अनुपमा गुस्से से फुंफकारती हुई कह गई थी, 'मैं आत्महत्या कर लूंगी और आप के बेटे को जेल भिजवा कर रहूंगी.' अनुपमा तो गुस्से में कह कर चली गई पर उस के बाद कई प्रश्न उन के दिमाग में उभरते रहे कि कैसा प्रेम होता है यह आजकल का? प्रेम का मतलब एकदूसरे के लिए जान दे देना है या दूसरों को अपने ऊपर जान देने को मजबूर करना है? एक मुंह छिपा कर अमेरिका जा बैठा है तो दूसरी जेल भेजने के लिए जान देना चाहती है. अगर कोई तुम से मुंह मोड़ ही बैठा है तो क्या धमकियों के माध्यम से उसे अपना सकोगी? दबाव में अगर रिश्ता कायम हो ही गया तो कितने दिन चलेगा और कितना सुख दे सकेगा? वैसे, क्या विपिन जैसे समझदार लड़के की पसंद इतनी उथली हो सकती है?

वे तो समझती थीं कि गरजते हुए बादल कभी बरसते नहीं, पर उस पागल लड़की ने तो सचमुच जान दे दी. उस के मरने की खबर से वे एकाएक ही खुद को गुनहगार समझने लगीं. लगा, खुद उन्होंने ही तो उसे 'मृत्युदंड' की सजा दी है. उस ने उन्हें अपने दुख सुनाए और उन्होंने उस पर अविश्वास किया और उसी दिन उस लड़की ने आत्महत्या कर ली.

यह आत्महत्या उन के लिए अविश्वसनीय थी. महानगरों में आधुनिक जीवन जीती हुई ये लड़कियां क्या इतनी भावुक हो सकती हैं कि गर्भ ठहर जाने पर इन्हें आत्महत्या करनी पड़े? जबकि आजकल तो स्कूल में पढ़ने वाली लड़कियां सहेली के घर रुकने का बहाना

कर के गर्भपात करा आती हैं और घर वालों को पता तक नहीं चलता. पर हर तरह की लड़कियां होती हैं, हो सकता है कि वह विपिन से इतनी जुड़ गई हो कि उसे खो देने की कल्पना तक न कर सके. पर उस की आंखों की वह शातिर चमक कैसे भूली जा सकती है. तो क्या कोई बदला लेने को

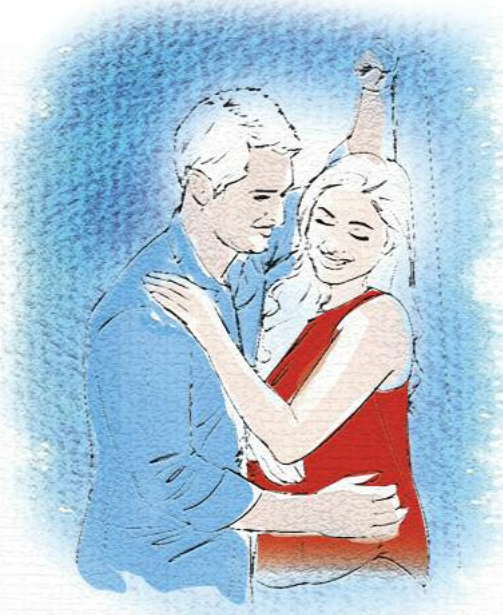

विपिन सुधा से मिल कर आया था और आज उन दोनों ने और भी शिद्दत से महसूस किया था कि अब एकदूसरे से दूर रहना संभव नहीं है.

इतना पागल हो सकता है कि अपनी जान पर ही खेल जाए?

पर नहीं, यह गलती खुद उन से हुई है. अपने पक्ष में लाख दलीलें दें वह, पर एक भावुक, निर्दोष लड़की को समझने में भूल कर ही बैठी हैं वे. अपनी बहू के साथसाथ अपने अजन्मे पोते को भी मृत्युदंड दे चुकी हैं वे. अब इस का क्या प्रायश्चित्त हो सकता है. उस के शव से ही माफी मांगने को जी चाहा था, एक बार उस चेहरे को ध्यान से देखने का मन किया था और शायद यह भी पता करना था कि वह पागल लड़की उन के बेटे के विरुद्ध तो कुछ नहीं कर गई. इसलिए वे बदहवास सी अस्पताल पहुंच गई थीं.

वहां जा कर कुछ और ही पता चला कि वह आत्महत्या से नहीं, बल्कि एड्स से मरी थी, एड्स...? यह जानते ही उन के मन में एक नया डर समा गया. वे सोचने लगीं कि कहीं मेरे विपिन को भी तो नहीं हो गया यह रोग? ऐसा लगता तो नहीं. देखने में तो वह बिलकुल स्वस्थ लगता है. छिपतेछिपाते जहां से भी संभव हुआ, वे इस असाध्य रोग के बारे में जानकारी एकत्र करती रहीं और पता चला कि इस के कीटाणु कभीकभी तो 6 वर्ष तक भी शरीर के अंदर निष्क्रिय बैठे रहते हैं, फिर जब हमला करते हैं तो जाने कितनी बीमारियां लग जाती हैं और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बिलकुल समाप्त हो जाती है.

असुरक्षित यौन संबंधों से फैलता है यह रोग और संबंध तो असुरक्षित ही रहे होंगे जो वह गर्भवती हो बैठी. कुछ भी नहीं बचता इस रोग के बाद, सिवा मौत के.

मौत? विपिन की? नहीं, इस के आगे वे नहीं सोच पातीं. दिमाग ही चक्कर खाने लग जाता है. वे अपनेआप को अपने बेटे की सच्चरित्रता का विश्वास दिलाना चाहती हैं, पर मन का डर हटता ही नहीं. वैसे भी, उम्र बढ़ने के साथसाथ अपनों की फिक्र बढ़ती जाती है, तिस पर से ऐसे भयंकर रोग का अंदेशा?

विपिन की शादी के लिए जो भी रिश्ता आया, उन्होंने उलटे हाथ लौटा दिया. अनुपमा प्रकाश को तो उन्होंने अनजाने में मृत्युदंड दिया था, पर अब जानतेबूझते एक अनजान लड़की को मौत के मुंह में कैसे धकेल दें. पर विपिन का क्या करें जो उन के व्यवहार से भरमाया हुआ है. कैसे वे बेटे से कहें कि तेरी जिंदगी में अब तो गिनती के दिन ही बचे हैं. कोशिश करती हैं कि सामान्य दिखें, पर इतना सटीक अभिनय कोई कर सकता है क्या? उठतेबैठते वह इशारा करता है कि शादी करा दो, पर क्या करें वे? क्या जवाब दें?

और फिर एक दिन एक लड़की को ले आया विपिन उन से मिलाने. साधारण शक्लसूरत की नाजुक सी लड़की सुधा थी. पता नहीं क्यों उन्हें उस लड़की पर बहुत गुस्सा आया. क्या सोचती हैं ये लड़कियां? कोई कमाताखाता कुंआरा लड़का मिल जाए तो मक्खियों की तरह गिरती जाएंगी उस पर. एक ही औफिस में साथ काम करती है तो क्या विपिन के पुराने किस्से न सुने होंगे? सब भूल कर जान देने को तैयार बैठी हैं इस फ्लैट, गाड़ी और तनख्वाह के पैसों के लिए? वे क्या मृत्युदंड देंगी किसी को, थोड़ेथोड़े भौतिक सुखों के लिए लोग स्वयं को मृत्युदंड देने को तैयार रहते हैं और इस विपिन को क्या लड़कियों के अलावा और कुछ सूझता ही नहीं?

यही सब सोच कर वे सुधा के साथ काफी रुखाई से पेश आई थीं. और उतरा मुंह लिए विपिन उसे वापस पहुंचा आया था. लौट कर उन के सामने आया तो उस की आंखों में एक कठोर निश्चय चमक रहा था. वे समझ रही थीं कि आज वे उस के प्रश्नों को टाल नहीं सकेंगी. डर भी लग रहा था. मन ही मन तैयारी भी करती जा रही थीं कि क्या कहेंगी और कितना कहेंगी.

"मम्मी, सुधा बहुत रो रही थी," विपिन के स्वर में उदासी थी.

"रोने की क्या बात थी?" उन्होंने कड़ा रुख अपना कर बोला था.

"क्या वह तुम्हें पसंद नहीं आई मम्मी?"

"मुझे ऐसी लड़कियां बिलकुल पसंद नहीं जो लड़कों के साथ घूमतीफिरती रहती हैं."

"क्या बात करती हो, मां, वह मुझे प्यार करती है. मैं उसे तुम को दिखाने के लिए लाया था."

"क्या होता है यह प्यारव्यार... अपनाअपना स्वार्थ ही न? क्या चाहिए था उसे, फ्लैट, गाड़ी, रुपया यही न?"

"नहीं मम्मी, तुम उसे गलत समझ रही हो. हम तो एकदूसरे को उसी समय से चाहते हैं जब मैं ने मामूली तनख्वाह पर यह नौकरी शुरू की थी."

विपिन इस तरह से उन के सामने झूठ बोलेगा, वह सोच भी नहीं सकती थीं. तैश में मुंह से निकल गया, "यह अनुपमा प्रकाश कौन थी? तुम उसे कैसे जानते हो?"

"मेरे औफिस में टाइपिस्ट थी."

"तुम्हें कैसी लगती थी?"

"मैं उसे ज्यादा नहीं जानता था. अमेरिका से वापस आने पर पता चला कि उस के साथ कोई घटना घटी थी."

"तेरे अमेरिका जाने पर वह आई थी. ऐयाशी का सुबूत ले कर गर्भवती थी वह," क्रोध में वह तुम से तू पर उतर आई थी.

"क्या कह रही हो तुम?"

"मर गई वह तेरे लिए और उस की

बिना पर तू दूसरी शादी की तैयारी कर रहा है ? यही संस्कार हैं तेरे ?"

"ओह, तो यह बात है, मम्मी ? वह अच्छी लड़की नहीं थी. काफी बदनाम थी. मैं उस का अधिकारी था. एक बार काम में बहुत सी गलतियां मिलने पर कुछ डांट दिया था. वह बुरा मान गई होगी शायद और बदला लेने चली आई होगी."

"झूठ मत बोल. किसी लड़की के लिए ऐसे कहते शर्म नहीं आती तुझे, जिस ने तेरे लिए जान दे दी ?"

एकाएक ही उन्हें आशा की एक किरण नजर आई. वह रुंधी आवाज में पूछ रही थीं, "सच बोल विपिन, उस से तेरा कोई संबंध नहीं था. मेरी कसम खा कर बोल."

"नहीं मम्मी, मैं तो उस से बहुत कम बार मिला हूं. मेरा विश्वास करो."

"मैं उस के मरने पर अस्पताल गई थी बेटे, उसे एड्स था. यह तो छूत की बीमारी होती है न ?" उन्होंने सहमते हुए अपना मन खोल ही डाला.

विपिन अवाक सा उन का मुंह देखे जा रहा था, फिर एकाएक ठठा कर हंस पड़ा. उस ने उठ कर अपनी बांहों में मां को उठा कर गोलगोल घुमाना शुरू कर दिया.

"मेरी पगली मम्मी."

"मुझे सुधा के घर ले चलेगा आज ? बेचारी सोचती होगी कि कैसी खूसट सास है."

वे हवा में लटकेलटके बोलती जा रही थीं. गोलगोल घूमते हुए उस कमरे में ताजे फूलों की खुशबू लिए बालकनी से ठंडीठंडी हवा आ कर उन के फेफड़ों में भरती जा रही थी, आज तो मृत्युदंड से रिहाई का दिन था, सुधा का नहीं, विपिन का भी नहीं, खुद उन का. ●

## इन्हें आजमाइए

✓ लाइफपार्टनर आपसी झगड़े में घर के सदस्यों को बीच में ले आते हैं खासकर मातापिता को. लेकिन आप यह गलती कभी न करें क्योंकि आप के झगड़ों की वजह आप के मातापिता नहीं हैं, बल्कि आप के बीच की गलतफहमियां हैं, इसलिए यह गलती न करें.

✓ बारिश के मौसम में ज्यादा देर तक गीले रहने या गीले कपड़े पहने रहने से शरीर से दुर्गंध आनी शुरू हो जाती है. इस से बचने के लिए एक बालटी पानी में नमक व एक चम्मच डियो मिला कर नहाएं. इस से ताजगीभरा एहसास और बौडी से भीनीभीनी खुशबू आती है.

✓ टी ट्री औयल को गुलाब के तेल में मिलाएं और मिश्रण में थोड़ी सी हलदी मिलाएं और इसे चेहरे पर मौजूद स्पौट पर लगाएं. यह चेहरे पर मौजूदा दागधब्बों को कम करने का काम करता है. यह बेहतरीन स्पौट ट्रीटमैंट है.

✓ ज्वैलरी से स्किन पर एलर्जी हो जाए तो फिर स्किन के संपर्क में आने वाले जूलरी के हिस्से पर ट्रांसपैरेंट नेल पौलिश लगा दें. इस से जूलरी भी सेफ रहेगी और काली नहीं पड़ेगी न ही स्किन पर एलर्जी होगी.

✓ तेजपत्ते को सुखा कर उस के पाउडर को मंजन की तरह इस्तेमाल करना दांतों की सफेदी और चमक बरकरार रखने में कारगर है.

कहानी

# इंतजार

• पद्मा अग्रवाल

सोमा ने, मजबूरी में ही सही, सूरज से विवाह कर लिया था लेकिन अपनी बेइज्जती उसे हरगिज बरदाश्त नहीं थी. इसलिए तो आज वह अकेली थी. क्या अकेलापन उस की नियति बन गया था?

सुबह के 6 बजे थे. रोज की तरह सोमा की आंखें खुल गई थीं. अपनी बगल में अस्तव्यस्त हौल में लेटे महेंद्र को देख वह शरमा उठी थी. वह उठने के लिए कसमसाई, तो महेंद्र ने उसे अपनी बांहों में जकड़ लिया था.

"उठने भी दो, काम पर जाने में देर हो जाएगी."

"आज काम से छुट्टी, हम लोग आज अपना हनीमून मनाएंगे."

"वाहवाह, क्या कहने?"

पुरानी कड़वी बातें याद कर के वह गंभीर हो उठी, बोली, "यह बहुत अच्छा हुआ कि अपुन लोगों को शहर की इस कालोनी में मकान मिल गया है. यहां किसी को किसी की जाति से मतलब नहीं है."

"सही कह रही हो. जाने कब समाज से ऊंचनीच का भेदभाव समाप्त होगा? लोगों को क्यों नहीं समझ में आता कि सभी इंसान एकसमान हैं." महेंद्र बोला था.

"वह सब तो ठीक है, लेकिन अब उठने भी दो."

"आज हमारे नए जीवन का पहलापहला दिन है. यह क्षण फिर से तो लौट कर नहीं आएगा. आज मैं तुम्हारी बांहों में बांहें डाल कर मस्ती करूंगा. इस पल के लिए तुम ने मुझे बहुत लंबा इंतजार करवाया है. आज 'जग्गा जासूस' पिक्चर देखेंगे. बलदेव की चाट खाएंगे. राजाराम की शिकंजी पिएंगे. तुम जहां कहोगी वहां जाऊंगा, जो कहोगी वह करूंगा. आज मैं बहुतबहुत खुश हूं."

"ओह हो, केवल बातों से पेट नहीं भरने वाला है. पहले जाओ, दूध और डबल रोटी ले कर आओ."

"मेरी रानी, दूध के साथसाथ, आज तो जलेबी और कचौड़ी भी ले कर आऊंगा." यह कह कर वह सामान लेने चला गया.

वह उठ कर रोज की तरह झाड़ूबुहारू और बरतन आदि काम निबटाने लगी थी. लेकिन आज उस की आंखों के सामने बीते हुए दिन नाच उठे थे. अभी वह 25 वर्ष की होगी, परंतु अपनी इन आंखों से कितना कुछ देख लिया था.

अम्मा स्कूल में आया थीं. इसलिए उसे मन ही मन टीचर बनाने का सपना देखती रहती थीं. बाबू राजगीरी का काम करते थे. उन्हें पैसा अच्छा मिलता था. लेकिन पीने के शौक के कारण सब बरबाद कर लेते थे. वे 2 दिन काम पर जाते, तीसरे दिन घर पर छुट्टी मनाते. अपनी मित्रमंडली के साथ बैठ कर हुक्का गुड़गुड़ाते और लंबीलंबी बातें करते.

अम्मा जब भी कुछ बोलती तो गालीगलौज और मारपीट की नौबत आ जाती.

पश्चिम उत्तर प्रदेश में संभलपुर से थोड़ी दूर एक बस्ती थी जिसे आज की भाषा में चाल कह सकते हैं. लगभग 10-12 घर थे. सब की आपस में रिश्तेदारी थी. बच्चे आपस में किसी के भी घर में खापी लेते और सड़क पर खेल लेते. कोई काका था, कोई दादी तो कोई

दीदी. आपस में लड़ाई भी जम कर होती, लेकिन फिर दोस्ती भी हो जाती थी.

वह छुटपन से ही स्कूल जाने से कतराती थी. वह लड़कों के संग गिल्लीडंडा और क्रिकेट खेलती. कभीकभी लंगड़ीटांग भी खेला करती थी.

अम्मा स्कूल से लौट कर आती तो सड़क पर उसे देखते ही चिल्लाती, 'काहे लली, स्कूल जाने के समय तो तुम्हें बुखार चढ़ा था, अब सब बुखार हवा हो गया. बरतन मांजने को पड़े हैं. चल मेरे लिए चाय बना.

वह जोर से बोलती, 'आई अम्मा.' लेकिन अपने खेल में मगन रहती जब तक अम्मा पकड़ कर उसे घर के अंदर न ले जाती. वे उस का कान खींच कर कहतीं, 'अरी कमबख्त, कभी तो किताब खोल लिया कर.'

अम्मा की डांट का उस पर कुछ असर न होता. इसी तरह खेलतेकूदते वह बड़ी हो रही थी. लेकिन हर साल पास होती हुई वह बीए में पहुंच गई थी. कालेज घर से दूर था, इसलिए बाबू ने उसे साइकिल दिलवा दी थी.

बचपन से ही उसे सजनेसंवरने का बहुत शौक था. अब तो वह जवान हो चुकी थी, इसलिए बनसंवर कर अपनी साइकिल पर हवा से बातें करती हुई कालेज जाती.

वहां उस की मुलाकात नरेन सिंह से हुई. वह उस की सुंदरता पर मरमिटा था. कैफेटेरिया की दोस्ती जल्द ही प्यार में बदल गई. उस की बाइक पर बैठ कर वह अपने को महारानी से कम न समझती. 19-20 साल की कच्ची उम्र और इश्क का भूत. पूरे कालेज में उन के इश्क के चर्चे सब की जबान पर चढ़ गए थे. वह उस के संग कभी कंपनीबाग तो कभी मौल तो कभी कालेज के कोने में बैठ कर भविष्य के सपने बुनती.

एक दिन वे दोनों एकदूसरे को गलबहियां डाले हुए पिक्चरहौल से निकल रहे थे, तभी नरेन के चाचा बलवीर सिंह ने उन दोनों को देख लिया था. फिर तो उस दिन घर पर नरेन की शामत आ गई थी.

सोमा की जातिबिरादरी पता करते ही नरेन को उस से हमेशा के लिए दूर रहने की सख्त हिदायत मिल गई थी.

पश्चिम उत्तर प्रदेश जाटबहुल क्षेत्र है. वहां की खाप पंचायतें अपने फैसलों के लिए कुख्यात हैं. जाट लड़का किसी वाल्मीकि समाज की लड़की से प्यार की पेंग बढ़ाए, यह बात उन्हें कतई बरदाश्त नहीं थी.

वे लोग 15-20 गुडों को ले कर लाठीडंडे लहराते हुए आए. और शुरू कर दी गालीगलौज व तोड़फोड़.

वे लोग बाबू को मारने लगे, तो वह अंदर से दौड़ती हुई आई और चीखनेचिल्लाने लगी थी. एक गुंडा उस को देखते ही बोला, ऐसी खूबसूरत मेनका को देख नरेन का कौन कहे, किसी का भी मन मचल उठे.'

बाबू ने उसे धकेल कर अंदर जाने को कह दिया था. पासपड़ोस के लोगों ने किसी तरह उन लोगों को शांत करवाया, नहीं तो निश्चित ही उस दिन खूनखराबा होता.

पंचायत बैठी और फैसला दिया कि महीनेभर के अंदर सोमा की शादी कर दी जाए और 10 हजार रुपए जुर्माना.

उस का कालेज जाना बंद हो गया और आननफानन उस की शादी फजलपुर गांव के सूरज के साथ, जो कि स्कूल में मास्टर था, तय कर दी गई.

उस के पास अपना पक्का मकान था. थोड़ी सी जमीन थी, जिस में सब्जी पैदा होती थी. अम्माबाबू ने खुशीखुशी यहांवहां से कर्ज ले कर उस की शादी कर दी.

बाइक, फ्रिज, टीवी, कपड़ेलत्ते, बरतनभांडे, दहेज में जाने क्याक्या दिया. आंखों में आंसू ले कर वह सूरज के साथ शादी के बंधन में बंध गई थी.

ससुराल का कच्चा खपरैल वाला घर देख उस के सपनों पर पानी फिर गया था. 10-15 दिन तक सूरज उस के इर्दगिर्द घूमता रहा था. वह दिनभर मोबाइल में वीडियो देखता रहता था. आसपास की औरतों से भौजीभौजी कह कर हंसीठिठोली करता या फिर आलसियों की तरह पड़ा सोता रहता.

बचपन से ही उसे सजनेसंवरने का बहुत शौक था. अब तो वह जवान हो चुकी थी, इसलिए बनसंवर कर अपनी साइकिल पर हवा से बातें करती हुई कालेज जाती.

रोज रात में दारू चढ़ा कर उस के पास आता. नशा करते देख उसे अपने बाबू याद आते. एक दिन उस ने उस से काम पर जाने को कहा. तो, नशे में उस के मुंह से सच फूट पड़ा. न तो वह बीए पास है और न ही सरकारी स्कूल में मास्टर है. यह सब तो शादी के लिए झूठ बोला गया था. वह रो पड़ी थी. फिर उस ने सूरज को सुधारने का प्रयास किया था. वह उसे समझाती, तो वह एक कान से सुनता, दूसरे से निकाल देता.

आलसी तो वह हद दर्जे का था. पानमसाला हर समय उस के मुंह में भरा ही रहता. जुआ खेलना, शराब पीना उस के शौक थे. यहांवहां हाथ मार कर चोरी करता और जुआ खेलता.

उस का भाई भी रात में दारू पी कर आता और गालीगलौज करता.

कुछ पैसे अम्मा ने दिए थे. कुछ उस के अपने थे. वह अपने बक्से में रखे हुए थी. सूरज उन पैसों को चुरा कर ले गया था. एक दिन उस ने अपनी पायल उतार कर साफ करने के लिए रखी थी. वह उस को यहांवहां घंटों ढूंढ़ती रही थी. लेकिन जब पायल हो, तब तो मिले. वह तो उस के जुए की भेंट चढ़ गई थी. यहां तक कि वह उस की शादी की सलमासितारे जड़ी हुई साड़ी ले गया और जुए में हार गया.

अस्तव्यस्त बक्से की हालत देख वह साड़ी के गायब होने के बारे में जान चुकी थी. वह खूब रोई. जा कर अम्माजी से कहा, तो वे बोली थीं, 'साड़ी ही तो ले गया, तुझे तो नहीं ले गया. मैं उसे डांट लगाऊंगी.'

उस की शादी को अभी साल भी नहीं पूरा हुआ था, लेकिन उस ने मन ही मन सूरज को छोड़ कर जाने का निश्चय कर लिया था. वह नशे में कई बार उस की पिटाई भी कर के उस के अहं को भी चोट पहुंचा चुका था.

वह बहुत दुखी थी, साथ ही, क्रोधित भी थी. सूरज नशा कर के देररात आया. आज कुछ ज्यादा ही नशे में था. बदबू के भभके से उस का जी मिचला उठा था. फिर उस के शरीर को अपनी संपत्ति समझते हुए अपने पास उसे खींचने लगा. पहले तो उस ने धीरेधीरे मना किया, पर वह जब नहीं माना, तो उस ने उसे जोर से धक्का दे दिया. वह संभल नहीं पाया और जमीन पर गिर गया. कोने में रखे संदूक का कोना उस के माथे पर चुभ गया और खून का फौआरा निकल पड़ा.

फिर तो उस दिन आधीरात को जो हंगामा हुआ कि पौ फटते ही उसे उस के घर के लिए बस में बैठा कर भेज दिया गया.

बाबूअम्मा ने उसे देख अपना सिर पीट लिया था. अम्मा बारबार उसे ससुराल भेजने का जतन करती, लेकिन वह अपने निर्णय पर अडिग रही.

उसे अब किसी काम की तलाश थी क्योंकि अब वह अम्मा पर बोझ बन कर घर में नहीं बैठना चाहती थी.

सब उसे समझाते, आदमी ने पिटाई की तो क्या हुआ? तुम ने क्यों उस पर हाथ उठाया आदि.

अम्मा ने अमिता बहनजी से उस की नौकरी के लिए कहा तो उन्होंने उसे अपने कारखाने में नौकरी पर रख लिया. अंधे को क्या चाहिए दो आंखें. वहां शर्ट सिली जाती थी. उसे बटन लगा कर तह करना होता था. इस काम में कई औरतेंआदमी लगे हुए थे.

सुपरवाइजर बहुत कड़क था. वह एक मिनट भी चैन की सांस नहीं लेने देता. किसी को भी आपस में बात करते या हंसीमजाक करते देखता, तो उसे नौकरी से निकालने की धमकी दिया करता.

कारखाने का बड़ा उबाऊ वातावरण था. औसत दरजे का कमरा, उस में 10-12 औरतआदमी, चारों और कमीजों का ढेर और धीमाधीमा चलता पंखा. नए कपड़ों की गरमी में लगातार काम में जुटे रह कर वह थक जाती और ऊब भी जाती.

थकीमांदी जब वह घर लौटती तो एक कोठरी में बाबू की गालीगलौज और नशे में अम्मा के साथ लड़ाई व मारपीट से दोचार होना पड़ता. लड़ाईझगड़े के बाद उसे सोता समझ दोनों अपने शरीर की भूख मिटाते. उसे घिन आती और वह आंखों में ही रात काट देती.

सवेरे पड़ोस का रमेश उसे लाइन मारते हुए कहता, 'अरे सोमा, एक मौका तो दे मुझे, तुझे रानी बना कर रखूंगा.'

वह आंखें तरेर कर उस की ओर देखती और नाली पर थूक देती.

विमला काकी व्यंग्य से मुसकरा कर कहती, 'कल तुम्हारे बाबू बहुत चिल्ला रहे थे, क्या अम्मा ने रोटी नहीं बनाई थी?'

वह इस नाटकीय जीवन से छुटकारा चाहती थी. उस ने नौकरी के साथसाथ बीए की प्राइवेट परीक्षा पास कर ली थी.

जब वह बीए पास हो गई तो उस की तरक्की हो गई. आंखों ही आंखों में वहां काम करने वाले महेंद्र से उस की दोस्ती हो गई. वह अम्मा से छिपा कर उस के लिए टिफिन में रोटी ले आती. दोनों साथसाथ चाय पीते, लंच भी साथ खाते. कारखाने के सुपरवाइजर दिलीप ने बहुत हाथपैर पटके कि तुम्हें निकलवा दूंगा, यहां काम करने आती हो या इश्क फरमाने. लेकिन, जब आपस में मन मिल जाए तो फिर क्या?

'महेंद्र एक बात समझ लो, तुम से दोस्ती जरूर की है लेकिन मुझ से दूरी बना कर रहना. मुझ पर अपना हक मत समझना, नहीं तो एक पल में मेरीतेरी दोस्ती टूट जाएगी.'

'देख सोमा, तेरी साफगोई ही तो मुझे बहुत पसंद है. जरा देर नहीं लगी और सूरज को हमेशा के लिए छोड़ कर आ गई.'

इस तरह आपस में बातें करतेकरते दोनों अपने दुख बांटने लगे.

'महेंद्र, तुम शादी क्यों नहीं कर लेते?'

'जब से लक्ष्मी मुझे छोड़ कर चली गई, मेरी बदनामी हो गई. मेरे जैसे आदमी को भला कौन अपनी लड़की देगा.'

'वह छोड़ कर क्यों चली गई?'

'उस का शादी से पहले किसी के साथ चक्कर था. अपनी अम्मा की जबरदस्ती के चलते उस ने मुझ से शादी तो कर ली लेकिन महीनेभर में ही सबकुछ लेदे कर भाग गई. उस का अपना अतीत उस की आंखों के सामने घूम गया था.

अब महेंद्र के प्रति उस का लगाव अधिक हो गया था.

एक दिन उस को बुखार था, इसलिए वह काम पर नहीं गई थी. वह घर में अकेली थी. तभी गंगाराम (बाबू के दोस्त) ने कुंडी खटखटाई, 'एक कटोरी चीनी दे दो बिटिया.'

---

महेंद्र ने सोमा से दूरी बना कर रखी थी. उस ने लालची निगाहों से कभी उस की ओर देखा भी नहीं था.

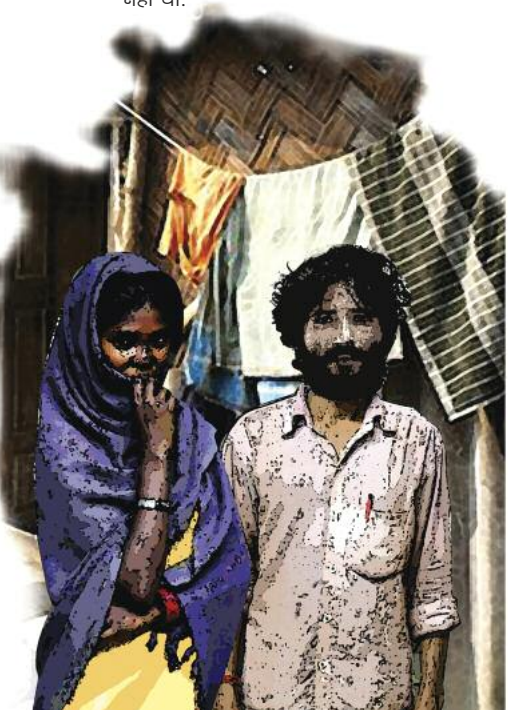

वह चीनी लेने के लिए पीछे मुड़ी ही थी कि उस ने उस को अपनी बांहों में जकड़ लिया था. लेकिन वह घबराई नहीं, बल्कि उस की बांहों में अपने दांत गड़ा दिए. वह बिलबिला पड़ा था. उस ने जोर की लात मारी और पकड़ ढीली पड़ते ही वह बाहर निकल कर चिल्लाने लगी. शोर सुनते ही लोग इकट्ठे होने लगे.

लेकिन उस बेशर्म गंगाराम ने जब कहा कि तेरे बाबू ने मुझ से पैसे ले कर तुझे मेरे हाथ बेच दिया है. अब तुझे मेरे साथ चलना होगा.

'थू है ऐसे बाप पर, हट जा यहां से, नहीं तो इतना मारूंगी कि तेरा नशा काफूर हो जाएगा,' वह क्रोध में तमतमा कर बोली, 'मैं आज से यहां नहीं रहूंगी.'

आसपास जमा भीड़ बाबू के नाम पर थूक रही थी. लड़ाई की खबर मिलते ही अम्मा भी भागती हुई आ गई थी. वह उसे समझाने की कोशिश करती रही लेकिन उस ने तो कसम खा ली थी कि वह इस कोठरी के अंदर पैर कभी नहीं रखेगी.

उसी समय महेंद्र उस का हालचाल पूछने आ गया था. सारी बातें सुन कर बोला, 'तुम मेरी कोठरी में रहने लगो, मैं अपने दोस्त के साथ रहने लगूंगा.'

अम्मा की गालियों की बौछार के साथसाथ रोनाचिल्लाना, इन सब के बीच वह उस नर्क को छोड़ कर महेंद्र की कोठरी में आ कर रहने लगी थी. अम्मा ने चीखचीख कर उस दिन उस से रिश्ता तोड़ लिया था.

महेंद्र के साथ जाता देख अम्मा उग्र हो कर बोल रही थी, 'जा रह, उस के साथ, देखना महीनापंद्रह दिन में तुझ से मन भर जाएगा. बस, तुझे घर से बाहर कर देगा.'

महेंद्र को सोमा काफी दिनों से जानती थी. उस ने उस की आंखों में अपने लिए सच्चा प्यार देखा था. उस की निगाहों में, बातों में वासना की झलक नहीं थी.

कारखाने में वह अब सुपरवाइजर बन गई थी. उस के मालिक उस के काम से बहुत खुश थे.

महेंद्र पढ़ालिखा तो था ही, वह अब पूरे एरिया का इंस्पैक्टर बन गया था.

प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत एक घर के लिए सोमा का नाम निकल आया था. उस के लिए एक लाख रुपए जमा करने थे. नाम उस का निकला था पैसे भी उसी के नाम पर जमा होने थे. लेकिन महेंद्र ने निसंकोच पलभर में पैसे उस के नाम पर दे दिए. अब उस का अपना मकान हो गया था.

मकान मिलते ही वे दोनों बस्ती से दूर इस कालोनी में आ कर रहने लगे थे.

सोमा को अपने जीवन में सूनापन लगता. जब उस से सब अपने पति या बच्चों की बात करतीं, तो उस के दिल में कसक सी उठती थी कि काश, उस का भी पति होता, परिवार और बच्चे हों. लेकिन महेंद्र ने उस से दूरी बना कर रखी थी. उस ने लालची निगाहों से कभी उस की ओर देखा भी नहीं था.

जबकि सोमा के सजनेसंवरने के शौक को देखते हुए महेंद्र बालों की क्लिप, नेलपौलिश, लिपस्टिक आदि लाता रहता था. कभी सूट तो कभी साड़ी भी ले आता था. एक दिन लाल साड़ी ले कर आया था, बोला, 'सोमा, यह साड़ी पहन, तेरे पर लाल साड़ी खूब फबेगी.'

'साड़ी तो तू सच में बड़ी सुंदर लाया है. लेकिन इसे भला पहनूंगी कहां, बता?'

'हम दोनों इतवार को पिक्चर देखने चलेंगे, तब पहनना.' वह शरमा गई थी.

दोनों के बीच पतिपत्नी का रिश्ता नहीं था, लेकिन दोनों साथसाथ एक ही घर में रहते थे.

वह कमरे में सोती तो महेंद्र बाहर बरामदे में. उस के अपने घर की खबर मिलते ही सूरज जाने कहां से प्रकट हो गया और पूरी कालोनी में महेंद्र की रखैल कह कर गालीगलौज करते हुए पति का हक जमाने लगा.

महेंद्र को बोलने की जरूरत ही नहीं पड़ी थी. सोमा अकेले ही सूरज का सामना करने के लिए काफी थी. उस की गालियों के सामने उस की एक नहीं चली थी और हार कर वह लौट गया था.

कई बार रात के अंधेरे में वह करवटें बदलती रह जाती थी. समाज की ऊलजलूल बातें और लालची मर्दों की कामुक निगाहें, मानो वह कोई ऐसी मिठाई है, जिस का जो चाहे रसास्वादन कर सकता है.

महेंद्र के साथ रहने से वह अपने को सुरक्षित महसूस करती थी. बैंक में अकाउंट हो या कोई भी फौर्म, पति के नाम के कौलम को देखते ही उस के गले में कुछ अटकने लगता था.

वह महेंद्र की पहल का मन ही मन इंतजार करती रहती थी.

महेंद्र अपनी बात का


**विवाह के लिए जातिबंधन किसलिए?**

इस तरह के विषयों के सही उत्तर पाने के लिए सरिता नियमित पढ़िए. सरिता के वार्षिक ग्राहक बनिए. रजिस्टर्ड डाक से सुरक्षित डिलीवरी.

**Subscription.mag@delhipress.in** पर ईमेल भेजिए या **08588843408** पर 10 बजे से 6 बजे तक फोन कर पूरी जानकारी लें.

पक्का निकला था, उस ने भी सोमा का मान रखा था.

दोनों साथ रहते, खाना खाते, घूमने जाते लेकिन आपस में एक दूरी बनी हुई थी.

'सोमा, कल काम की छुट्टी कर लेना.'

'क्यों?'

'कल आर्य कन्या स्कूल में आधार कार्ड के लिए फोटो खिंचवाने चलना है. फोटो खींची जाएगी, अच्छे से तैयार हो कर चलना.'

वह मुसकरा उठी थी.

अगले दिन उस ने महेंद्र की लाई हुई साड़ी पहनी, कानों में झुमके पहने थे. उस ने माथे पर बिंदिया लगाई. फिर आज उस के हाथ मांग में सिंदूर सजाने को मचल रहे थे.

हां, नहीं, हां, नहीं, सोचते हुए उस ने अपनी मांग में सिंदूर सजा लिया था. हाथों में खनकती हुई लाल चूड़ियां, आज वह नवविवाहिता की तरह सज कर तैयार हुई थी. आईने में अपना अक्स देख वह खुद शरमा गई थी.

महेंद्र उस को देख कर अपनी पलकें झपकाना ही भूल गया था. वह बोला, 'क्या सूरज की याद आ गई तुम्हें?

वह इतरा कर बोली, 'चलो, फोटो निकलवाने चलना है कि नहीं?'

सोमा को इतना सजाधजा देख महेंद्र उस का मंतव्य नहीं समझ पा रहा था.

वह चुपचाप उस के साथ चल दिया था. वहां फौर्म भरते समय जब क्लर्क ने पति का नाम पूछा तो एक क्षण को वह शरमाई, फिर मुसकराती हुई तिरछी निगाहों से महेंद्र को देखते

**जीवन**

*जीवन की लंबाई नहीं, गहराई माने रखती है.*

*–राल्फ वाल्डो इमर्सन*

सरिता

हुए उस का हाथ पकड़ कर बोली थी, 'महेंद्र'.

महेंद्र के कानों में मानो घंटियां बज उठी थीं. इन्हीं शब्दों का तो वह कब से इंतजार कर रहा था. वह अभी भी विश्वास नहीं कर पा रहा था कि सोमा ने उसे आज अपना पति कहा है.

रात में वह रोज की तरह अपने कमरे में जा कर लेट गया था. आज खुशी से उस का दिल बल्लियों उछल रहा था. लेकिन वह आज भी अपनी खुशी का इंतजार कर रहा था.

आज नवविवाहिता के वेश में सजधज कर अपनी मधुयामिनी के लिए सोमा आ कर अपने प्रेमी की बांहों में सिमट गई थी.

अब उस के मन में समाज का कोई भय नहीं था कि महेंद्र जाट है और वह वाल्मीकि. अब वे केवल पतिपत्नी हैं. वह मुसकरा उठी थी.

महेंद्र की आवाज से वह वर्तमान में लौटी थी, "सोमा, दरवाजा तो खोलो, मैं कब से इंतजार कर रहा हूं." ●

कहानी

# नजरिया बदल रहा

• डा. नीरजा श्रीवास्तव

अपर्णा आधुनिक युवती थी. ऊपरी चकाचौंध, हाई लाइफस्टाइल उसे आकर्षित करता था. तभी तो शीर्ष के साथ अमेरिका में बसने का सपना देखने लगी थी. लेकिन जब हकीकत की दुनिया में देखा तो...

"देख अपर्णा, इधर आ जल्दी." "क्या है मम्मा?" अपर्णा वीडियो पौज कर मोबाइल हाथ में लिए चली आई थी.

"वह देख, पार्थ नीचे खड़ा अपने गमलों को कितने प्यार से पानी दे रहा है. सादे कपड़ों में भी कितना हैंडसम दिखता है."

अपर्णा ने मां रागिनी को घूर कर देखा.

"यह देख, कितना हराभरा कर दिया है उस ने यह बगीचा. अभी आए कुल 2 महीने ही तो हुए हैं इन लोगों को यहां," वह फुसफुसा कर बताए जा रही थी.

"मम्मा, आप तो पीछे ही पड़ जाते हो. बस, कोई लड़का दिख जाना चाहिए आप को. उस की खूबियां गिनाने लग जाती हो. बोल दिया न, मुझे नहीं करनी शादीवादी, वह भी एक सरकारी नौकरी वाले से कतई नहीं. शगुन दी की शादी की थी न सरकारी डाक्टर से. बेचारी आज तक वहीं बनारस में अटकी अस्पताल, मंदिर और घाटों के दर्शन कर रही हैं."

"तेरी प्रौब्लम क्या है. स्मार्ट है, हैंडसम है पार्थ, दिल्ली विश्वविद्यालय में बौटनी का लैक्चरर है. उस का अपना घर है. उस पर से अकेला लड़का है, एक बहन है, बस."

"हां, एक बहन है, जिस की शादी हो चुकी है. बड़े भले लोग हैं. पिता डिग्री कालेज में इंग्लिश के प्रोफैसर थे, रिटायर हो चुके हैं. मां स्कूल टीचर थीं, रिटायर हो चुकीं. अपनी ही जाति के हैं...और कुछ? मम्मा कितनी बार बताओगे मुझे यही बातें," वह खीझी सी एक सांस में सब बोल कर ही ठहरी थी और रागिनी को खींच कर अंदर ले आई थी.

"अभीअभी नौकरी लगी है उस की, रिश्तों की भरमार है उस के लिए, कमला बहनजी बता रही थीं. कोई रुका थोड़े ही रहेगा तेरे लिए," रागिनी ने कहा.

"हां, तो किस ने कहा है रुकने के लिए. मैट्रिमोनियल में देखो, हजार मिलेंगे एक से एक, यूएस, इंग्लैंड में वैल सैटल्ड, हैंडसम लड़के. प्रिया, शिखा, रूबी, जया मेरी सारी खास सहेलियां कोई अमेरिका, आस्ट्रेलिया तो कोई कनाडा, लंदन की उड़ानें भर रही हैं या तैयारी में हैं. किसी की शादी हो चुकी है तो किसी की इंगेजमैंट. आप को तो मालूम है, प्रिया तो पिछले महीने ही शादी कर लंदन चली गई. मुझे तो वर्ल्ड के बैस्ट प्लेस जाना है यूएसए, उस में भी न्यूयौर्क."

"हम से इतनी दूर जाने की सोच रही है, अप्पू. तेरे और शगुन के अलावा कौन है हमारा. पास है तो शगुन कभीकभी आ जाती है. कभी हम भी मिल आते हैं. तू आसपास भारत में ही कोई ढूंढ़. तेरे लिए व हमारे लिए, यही सही रहेगा. शगुन तो समझदार है, सब संभालना जानती है. दुनियादारी का पता है उसे. तुझे तो कुछ भी नहीं मालूम. बस, तेरे परीलोक जैसे सपने. मैट्रिमोनियल से अनजाने लोगों से रिश्ता कर तुझे परदेस भेज दें, कुछ गड़बड़ हुई तो... न्यूज तो देखतीपढ़ती है न?"

"शीर्ष की तो याद होगी आप को, जो मेरे साथ बीएससी में था. जिस ने एक दिन हमें अपनी कार में लिफ्ट दी थी, आप का पैर मुड़ गया था मार्केट में, जोर की मोच आ गई थी आप को. इतने सालों बाद वह कुछ समय पहले अचानक मुझे मौल में मिल गया था. उस की कंपनी उसे यूएस भेज रही है वह भी सीधा न्यूयौर्क. 3 साल का असाइनमैंट है. अपने पेरैंट्स को मना रहा था. वे नहीं चाहते कि

जाए और यदि जाना ही है तो शादी कर के जाए. पर वह चला गया.

"मुझ से बोल रहा था. 'वहीं कोई दूसरी कंपनी जौइन कर लूंगा. पागल हूं जो इतनी अच्छी जगह छोड़ इंडिया वापस रहने आऊंगा. हां, शादी जरूर भारत की लड़की से करूंगा ताकि घर का काम बढ़िया हो सके और घर का खाना भी मिल सके. हाहा वह रुक कर हंसा था, फिर बोला. तब तक तुम अपनी पीएचडी पूरी कर लो. अगर वेट किया मेरा, तो शादी तुम्हीं से करूंगा. मेरी पहली पसंद तो तुम ही थीं. यह बात और है मैं ने कभी जाहिर नहीं किया.' कह कर वह मुसकरा रहा था. मैं आप को बताने ही वाली थी."

"अरे, तुझे बना रहा है. वह भी कैसा लड़का है जैसे मांबाप से कोई मतलब नहीं, उन्हें भी ले जाने की बात कहता तो भी बात समझ आती. वह तेरी क्या कद्र करेगा."

"नहीं मम्मा, फोन नंबर दिया है उस ने मुझे, उस पर उस से मेरी कई बार बात भी हुई है. कई बार उस के फोन भी आ चुके हैं. उस ने प्रौमिस किया है, 6 महीनों में लौटने वाला है, तब आप सब से मिलेगा अपने मम्मीपापा के साथ, शादी की बात करने."

"वाह, कब आएगा, कब बात करेगा. इतना ही था तो उन्हें हम से मिलवा कर क्यों नहीं गया? एक नंबर का फेंकू लगता है. पापा से बात करती हूं, ला, पता दे उस का. हम खुद ही जा कर उस के मांबाप से बात करते हैं."

"मैं कभी घर नहीं गई उस के, न ही उस से कभी पता पूछा. शायद कालकाजी में घर है उस का."

"कमाल है, घरपरिवार भी देखा नहीं. और इतना बड़ा फैसला ले लिया. सच में बच्चों वाला दिमाग है तेरा. कब आएगा, कब बात करेगा वह. 27 की हो चली है तू. धीरगंभीर स्थिर चित्त, पार्थ जैसा ही कोई संभाल सकता है तुझे, जान रही हूं." उन्हें कुछ इसी थीम पर गिरीश कर्नाड और शबाना आजमी की 'स्वामी' फिल्म याद हो आई थी. जिद्दी चंचल लड़की और गंभीर लड़का...

"एक बार फिर अच्छी तरह सोच ले. फिर कहूंगी पार्थ तेरे लिए बिलकुल फिट है. वे लोग भी तुझे पसंद करते हैं."

"कहां हो भई दोनों मांबेटी. देखो कुमार के घर का बना गरम इडलीसांभर फिर दे गए और मेरी प्रिय मखाने की खीर भी. विश्व में बढ़ रहे करोना संकट के लिए टीवी पर प्रधानमंत्री क्या बोलते हैं. यहां भी लौकडाउन होना तो तय है."

## यह अंक आप को कैसा लगा

**इस अंक की कौन सी रचना आप को पसंद आई, कौन सी नहीं आई, आप किन विषयों पर लेख और कहानियां पढ़ना पसंद करेंगे? हमें बताएं, हम आप की आलोचनाओं और सुझावों का स्वागत करेंगे.**

**अपना पत्र संपादक, सरिता, दिल्ली प्रैस, ई-8, रानी झांसी रोड, झंडेवाला, नई दिल्ली-110055 पर डाक से या editor@delhipress.biz पर ईमेल से या 08527666772 पर एसएमएस या व्हाट्सऐप से भेजें. –संपादक**

पापा नंदन कुमार की आवाज पर दोनों टीवी रूम में चली आईं.

21 दिनों का लौकडाउन हुआ, फिर 19 दिनों का. सभी बताए नियमों का पालन कर रहे थे. पार्थ और अपर्णा की भी छुट्टी हो गई थी. तालीथाली, दीयाबत्ती अभियान में अपर्णा ने पूरी बिल्डिंग में सब से अधिक जोरशोर से हिस्सा लिया. नीचे पार्थ के घर होहल्ला न सुन कर अपर्णा मुंह बिचकाती रही. जरा भी जज्बा नहीं देश के लिए. कैसा अजीब आदमी है, अकड़ खां बना बैठा होगा कहीं, प्रवक्ता पार्थ. अंधेरे में अपनी उन किताबों में भी तो नहीं खो सकता इस समय. कुमार साहब ने दीप बाहर रख दिए थे, तो थाली वाले दिन मिसेज कुमार ने मंदिर की घंटी टुनटुना दी थी. बस, हो गया देशप्रेम. अपर्णा को खल रहा था. पार्थ तो वैसे भी कम ही बाहर निकलता. उसे यह सब बचकाना लगता. हां, सब्जीफल, दूध लाने के लिए जरूर जाता, मांपापा को जाने नहीं देता.

एक दिन कुमार फिर घर आए, बोले, "भाईसाहब, बहनजी, आप भी पार्थ से ही मंगा लिया कीजिए. आप क्यों जाएंगे, यह ही ले आया करेगा न. बुजुर्गों और छोटे बच्चों को ही ज्यादा खतरा है कोरोना से."

तो रागिनी ने घूमने को उतावली अपर्णा को सामान लाने के बहाने पार्थ के साथ भेज दिया. एक पंथ दो काज. शायद, पार्थ को पसंद ही करने लगे.

सामान ले कर अपर्णा पार्थ की कार में पहले ही आ बैठी. पार्थ अभी लाइन में था. तब तक उस ने शीर्ष को फोन लगा दिया. इतने दिनों से फोन लग नहीं रहा था. आज कौल कनैक्ट हो गई. तो उस ने शीर्ष की पूरी खबर ली. बहुत दिनों से फोन नहीं आया, न मिला तुम्हारा फोन. अधिक बिजी हो या मुझे भूल गए. किसी और के चक्कर में तो नहीं पड़ गए. क्या हाल है वहां? न्यूज में तो तुम्हारा न्यूयौर्क सब से अधिक कोरोना की चपेट में है. दिल घबरा रहा था, और तुम हो कि फोन ही नहीं उठा रहे. तुम सेफ तो हो?"

"अरे, यहां सब मजे में हैं. छुट्टियां हो गई हैं. अपार्टमैंट से ही काम होता है औनलाइन. मुझे क्या होना है. स्टैच्यू औफ लिबर्टी के साथ हूं. और तुम सब?"

"ठीक है सब. छुट्टियां यहां भी हो गई हैं. अच्छा, तुम्हारे पेरैंट्स तो ठीक हैं? कौन है उन के पास? कैसे कर रहे होंगे मैनेज. उन का घर का पता, फोन नंबर दो, तो कभी जरूरत पर मदद को परमिशन ले कर पहुंचा जा सकता है. मम्मा को सब बता दिया, वे मिलना भी चाहती हैं."

"पापा की तो डेथ हो गई."

"ओह, वैरी सैड ऐंड पेनफुल. कब? कैसे?"

"10 दिन तो हो ही गए, कोरोना से. मम्मी को भी आइसोलेशन में रखा गया है. रिश्तेदारों को भी जाने नहीं दे रहे. यहां से जाना ही पौसिबल नहीं था. सारी फ्लाइटें बंद. मामा लोग उन से फोन से कनैक्टेड हैं और मैं भी. क्या कर सकता हूं."

"फिर क्या कह रहे थे, मैं मजे में हूं?"

"तो, मैं तो ठीक ही हूं. फादरमदर की वैसे भी उम्र थी ही, जाना तो वैसे भी था, फिर मैं इंडिया आ कर भी क्या कर लेता, न देख सकता न छू सकता. अच्छा है यहां सेफ हूं. कुछ हुआ तो बैस्ट इलाज हो जाएगा. चिल्ल... डोंट वरी फौर मी."

''अच्छा है यहां सेफ हूं. कुछ हुआ तो बैस्ट इलाज हो जाएगा,'' शीर्ष की बातें सुन कर अपर्णा को हैरानी हो रही थी.

---

"तुम अपने फादरमदर के लिए ही बोल रहे हो न?" अपर्णा को आश्चर्य हो रहा था. ऐसा निर्मोही, स्वार्थी बेटा कैसे हो सकता है? क्या फायदा ऐसे एडवांस शहर, ऊंचे स्तर और पैसों का जो ऐसे समय भी मांबाप के पास न रह सके, न आ सके और फिर उन के प्रति मन में ऐसी भावना रखे.

"क्या सोचने लगी भई, कोई तुम्हें तो नहीं मिल गया? अरे दोचार महीनों की बात है. सबकुछ नौर्मल हो जाएगा. वैज्ञानिक लगे हुए हैं, दवावैक्सीन जल्द ही ढूंढ़ निकालेंगे ये लोग. शादी कर के तुम्हें भी यहां ले आऊंगा. फिर अपनी तो घरबाहर ऐश ही ऐश होगी. हाहा, ओके, औनलाइन काम का वक्त हो गया. रखता हूं, बहुत काम है. ट्वेंटी डेज से पहले कौल नहीं कर पाऊंगा. ओके, बाय, लव यू स्वीटहार्ट." उस के फ्लाइंग किस के साथ ही फोन कट गया था.

अपर्णा इधरउधर देखने लगी, कहां रह गया पार्थ. वह भी जाने कितना सामान ले रहा है पागल सा. रोज ही तो आता है मार्केट, फिर भी. उस ने नजरें दूर घुमाईं तो पार्थ नजर आया. वह मास्क लगाए, गरीब बच्चों में दूध की थैली, केले, बिस्कुट और ब्रैड बांट रहा था. तभी किसी गरीब बूढ़ी महिला ने उस से हाथ जोड़े कुछ कहा तो वह फिर राशन की दुकान में घुस गया. लौट कर उस ने लाई आटेचावल की थैलियां महिला के सिर पर अपनी मदद से रखवा दीं. महिला ने हाथ जोड़ कर हाथ ऊपर उठाए तो अपर्णा समझ गई कि जरूर गरीब महिला उसे दुआएं दे रही है. अपना सामान ला कर पार्थ ने गाड़ी में रखा.

"एक मिनट," कह कर उस ने जा रहे ठेले से साग खरीदा और कूड़े में खाना ढूंढ़ती कमजोर गाय को खिला कर वापस चला आया, "सौरी, थोड़ा टाइम लग गया."

"आप रोज ही ऐसे इतना सब..." वह हैरान थी. दिल भी भर आया था उस का.

"इतनाउतना कुछ नहीं. बहुतथोड़ा ही कर पाता हूं. दुनिया की जरूरत के आगे यह तो नगण्य ही है."

अपर्णा ने पहली बार पार्थ के चेहरे को ध्यान से देखा था, 'जज्बा भी, जज्बात भी और सुंदर, सही सोच भी, मतलब सोने जैसा दिल. शीर्ष के दिल, दुनिया से कितना अलग, निर्मल...शायद मम्मी सही ही कह रही थीं. मुझे अब उन की ही बात मान लेनी चाहिए. नजरिया बदलने लगा था. उस ने एक बार ऊपर से नीचे किन्हीं खयालों में गुम ड्राइव करते पार्थ को देखा और मन ही मन मुसकरा उठी. ●

दिल्ली प्रैस

# तथ्य, तर्क, तकनीक, विज्ञान

ये आपके सुखद, स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक हैं

धर्म, पाखंड, अंधविश्वास, जाति और रंग को फिर से हावी न होने दें

सरिता गृहशोभा

सरस सलिल चंपक

सदा से जागरूकों की पत्रिका

# पाठकों की समस्याएं

**मैं 26 साल की हूं. शुरू से मेरा ध्यान पढ़ाईलिखाई में रहा. मेरा कभी कोई बौयफ्रैंड नहीं रहा. ऐसा नहीं है कि सैक्स में मुझे कोई इंट्रैस्ट नहीं है, बल्कि इसलिए कि पढ़ने में मेरा ध्यान लगा रहे, अपने को रोमांटिक, सैक्सी बातों से दूर रखती थी. मेरी सहेलियां इस बात के लिए मुझे बोलती भी थीं कि लाइफ में सब एंजौय करना चाहिए. खैर, मातापिता ने मेरे लिए एक लड़का पसंद कर लिया है. वे लोग जल्दी से जल्दी शादी करना चाहते हैं. उस लड़के से मेरी फौर्मल मीटिंग हुई है. मुझे वह बेहद पसंद आया. मैं खुश हूं. बस, जानना यह चाहती हूं कि लव मैरिज और अरैंज मैरिज के सैक्स में क्या अंतर होता है?**

सैक्स का लव या अरैंज मैरिज से कोई लेनादेना नहीं है. यह तो अपनीअपनी सैक्स ड्राइव पर निर्भर करता है कि आप सैक्स की इच्छा को अपने अंदर कैसे ज्यादा से ज्यादा समय तक के लिए जीवित रखते हैं.

आप लव मैरिज और अरैंज मैरिज के अंतर की बात दिमाग से निकाल दें क्योंकि मैरिज में अच्छे सैक्स के लिए आप की और आप के पार्टनर की बैड पर सही कैमिस्ट्री होनी सब से ज्यादा जरूरी है. आप दोनों एकदूसरे की फीलिंग्स को, बौडी को और जरूरतों को जानें और समझें. मैरिड लाइफ के लिए यही अहम है.

*

**मैं 30 वर्षीया महिला हूं. शादी के 5 वर्षों बाद काफी इलाज के बाद बच्चा हुआ है. शुरू के कुछ दिन तो मैं स्तनपान कराती रही लेकिन अब ज्यादा दूध नहीं आता है. बच्चे का पेट नहीं भरता, इसलिए रोता है. आखिर में उसे ऊपरी दूध देना पड़ रहा है. बच्चे को मिल्क पाउडर वाला दूध पिलाते वक्त बहुत दुखी होती हूं. हर वक्त उस की सेहत की चिंता सताती रहती है. क्या करूं?**

देखिए, सब से पहले तो आप डाक्टर से मिल कर परामर्श लीजिए कि स्तनों में दूध न आने की वजह क्या है. दूध का न आना मां के स्वास्थ्य से जुड़ा होता है, जैसे मोटापा भी शरीर में दूध उत्पादन की प्रक्रिया के धीमा होने का कारण हो सकता है. शिशु के जन्म के समय तनाव, रक्त में लौह तत्त्व के स्तर को भी सीधे दूध के उत्पादन दर से संबंधित माना जाता है. कुछ दवाओं का उपयोग करने से भी यह समस्या हो सकती है.

लेकिन, तब तक आप की समस्या है नवजात शिशु को ऊपरी दूध पिलाने की. देखिए, कई बार मजबूरी हो जाती है कि बच्चे को मां के दूध के बजाय मिल्क पाउडर से बना दूध दिया जाता है. बेबी मिल्क पाउडर तरल दूध को वाष्पीकृत कर के कृत्रिम रूप से बनाया जाता है. यह पूरी तरह से एक नवजात की पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने में मददगार होता है. मां के दूध का यह सुरक्षित विकल्प है. इस में वे सभी पोषक तत्त्व होते हैं जो एक नवजात शिशु के विकास

के लिए जरूरी हैं. यह बच्चे को एनीमिया से बचाने और संक्रमण के खिलाफ लड़ने के लिए मजबूत बनाता है. सो, ज्यादा चिंता न करें. तनावमुक्त रह कर खुशी के साथ अपने बच्चे को बेबी मिल्क पाउडर से बना दूध पिलाएं और उस की देखभाल करने में ध्यान लगाएं.

*

**मेरी एक काफी करीबी दोस्त है. बचपन से ले कर कालेज तक हम ने अपनी हर चीज शेयर की है. बाकी सब तो ठीक है लेकिन उस का मेरा मेकअप प्रोडक्ट शेयर करना मुझे बिलकुल पसंद नहीं. मैं ने यह बात उसे बातोंबातों में कई बार बोल भी दी है लेकिन वह नहीं मानती. साफ बोल दूं तो कहीं वह बुरा न मान जाए. क्या करूं, सलाह दें.**

दोस्ती में अपने सीक्रेट्स और चीजें शेयर करना अच्छी बात है लेकिन मेकअप प्रोडक्ट शेयर करना स्किन को नुकसान पहुंचा सकता है. इस के अलावा मेकअप प्रोडक्ट शेयरिंग से जुड़ी अन्य बीमारियों में हर्पीस भी शामिल है, जो घावों और खुजली, चकत्ते और सूजन का कारण बनता है. जैसे, आंखों का काजल, आईलाइनर और मस्कारा शेयर करने से लाल आंखें, आंखों में खुजली, जलन, आंख से पानी आना आदि समस्याएं हो सकती हैं. वहीं, लिपस्टिक शेयर करने से हर्पीस समेत कई अन्य इन्फैक्शन हो सकते हैं.

मेकअप ब्रश और ऐप्लिकेटर आसानी से एक व्यक्ति से दूसरे में बैक्टीरिया ले जा सकते हैं, आप अपनी दोस्त को साफसाफ शब्दों में यह बात समझाएं. समझदार होगी तो आप का कहना जरूर मानेगी. तब भी न माने तो कह दें कि आप को स्किन प्रौब्लम हो रही है, इसलिए मेकअप प्रोडक्ट्स शेयर नहीं कर सकती. तब वह बुरा माने या अच्छा, चिंता मत करिए. वैसे, समझदार फ्रैंड है, तो बुरा बिलकुल नहीं मानेगी.

*

**मैं 28 वर्षीय युवक हूं. एक महीने पहले ही मेरी शादी हुई है. वाइफ मुझे बहुत प्यार करती है. हर तरह से मेरा ध्यान रखती है. मैं भी उस से बहुत खुश हूं. सैक्स लाइफ एंजौय कर रहे हैं. सैक्स से पहले फोरप्ले हम दोनों को एक्साइटमैंट से भर देता है. बस, इंटरकोर्स करते समय वह दर्द की शिकायत करती है, ऐसा क्यों है? कृपया सलाह दें.**

यह समस्या महिलाओं में अकसर देखने को मिलती है. इंटरकोर्स के दौरान दर्द होना उन्हें सैक्स से दूर कर देता है. यह समस्या वैजाइना में सूखेपन, सूजन या किसी इन्फैक्शन आदि के कारण होती है.

वैसे आप को मालूम होना चाहिए कि आप की पत्नी को कब दर्द हो रहा है और कब वह सैक्स के दौरान सहयोग दे ही है. जिस में वह आनंद उठाए, ऐसी पोजिशन में सैक्स करें तो यह समस्या उत्पन्न ही नहीं होगी. साथ ही, इस के लिए एक अच्छा लुब्रिकैंट भी इस्तेमाल करना चाहिए. अगर इस से भी आराम न हो या इंटरकोर्स के दौरान लगातार दर्द हो तो डाक्टर से सलाह लें. **–कंचन** ●

**आप भी अपनी समस्या भेजें**

पता : **कंचन, सरिता**
**ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.**
***समस्या हमें एसएमएस या व्हाट्सऐप के जरिए मैसेज/औडियो भी कर सकते हैं.***

**08527666772**

# चोरों के काम में हस्तक्षेप नहीं

• दिनेश बैस

धर्म के आगे और उस से भी बढ़ कर धर्म के रक्षक पुजारियों के समक्ष आप की एक नहीं चल सकती. अब मैं आप को और क्याक्या बताऊं. आप खुद ही देख लीजिए.

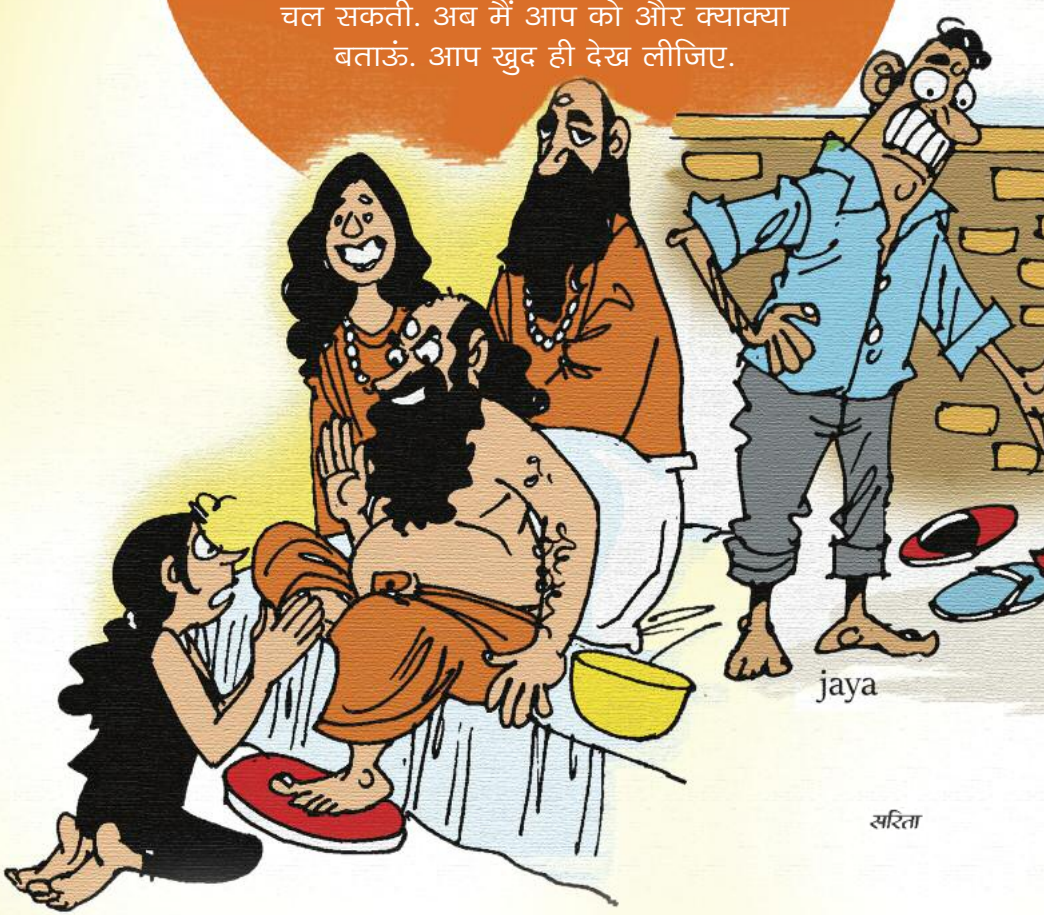

धर्मात्माओं का जुलूस था. किन्हीं पहुंचे हुए स्वामी या कौन जाने, बापू, बाबा की शोभायात्रा निकल रही थी. महिलाएं अधिक उत्साह में थीं. ब्यूटीपार्लर्स के कठिन परिश्रम ने उन में से अनेक को कटरीनाओंकरीनाओं के स्तर पर ला खड़ा किया था. यों राखी सावंतों और मल्लिकाओं की भी नींद उड़ा देने वाली प्रतिभाओं की कमी नहीं थी. धर्मजुलूस

में नचबलिये का कसबाई संस्करण, डीजे के परम सहयोग से पूरे धमाके के साथ उपस्थित था. चार मरियल घोड़ी की सड़ियल सी बग्घी पर विराजमान, स्वास्थ्य के साक्षात अवतार, संत श्री आध्यात्मिक दृश्य पर मुग्ध थे. वे चिंतनलीन थे कि स्वर्ग में भी अप्सराएं इंद्र का पौकेट बुक संस्करण मानने में संकोच नहीं कर रही थी.

उन्होंने स्वयं को सराहा कि उन्होंने उचित व्यवसाय का चयन किया है.

कोई नहीं जानता था कि अनेक बबलियां भी संत श्री की भक्तिन थीं. उन का अपना व्यवसाय था. जुलूस में घनघोर भक्ति नृत्य में लीन भक्तिनों को ज्ञात नहीं हुआ कि कब उन के गले साफ हो गए. वे मनोकामना पूर्ण करने का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए धर्म के आयोजन में शामिल हुई थीं. हार और झुमके उतरवा कर घर पहुंचीं.

आत्मज्ञान यह प्राप्त हुआ कि झुमका बरेली के बाजार में गिरने का एकाधिकार समाप्त हो गया है. अब गले के हार, झुमके आदि का पतन संतश्रीयों के दरबार में भी हो सकता है.

भगवान की लीला निराली है. वह क्या, कब, कैसे करता है, तुच्छ प्राणी नहीं समझ सकता. भक्त घमंड में रहते हैं कि भगवान पर उन का अधिकार है. उन की प्रार्थना भगवान सुनेगा. भगवान भक्तों का प्रार्थनापत्र रिजैक्ट कर देता है. चोरों की अपील स्वीकार कर लेता है.

इस गफलत में स्वयं मेरे कई जूतेचप्पल भगवान को प्यारे हो चुके हैं. पुजारीजी ने आह्वान किया– भक्त आ, माथा टेक ले. कुछ दानदक्षिणा अर्पित कर. भगवान तेरी मनोकामना पूर्ण करेंगे.

मैं उन के बहकावे में आ गया.भगवान

के घर में माथा टेकने गया. बाहर आया. जूते अंतर्ध्यान हो चुके थे.

मैं ने पुजारीजी से शिकायत की. यह मनोकामना तो नहीं थी मेरी?

पुजारीजी उल्टे पड़ गए. अधम, जूते जैसी तुच्छ वस्तु से ऐसा मोह उचित नहीं है. तू क्या चाहता है कि प्रभु तेरे जूतों की रखवाली करें? मूर्ख, पापी. वे श्राप देने की मुद्रा में दुर्वासा हुए जा रहे थे.

दे नहीं पाए. उन्हें अफसोस हुआ. अब सतयुग नहीं था कि बिना किसी जांचपड़ताल के किसी को भी श्राप दे दिया. भस्म कर दिया.

अब कलियुग आ चुका था. कानून का राज था. वह किसी भारतीय दंड संहिता जैसे निरर्थक ग्रंथ से संचालित होता था. उस ग्रंथ की सब से अनुचित बात यह थी कि राजा भोज हों या गंगू तेली, सब को एक ही तराजू में तोलता था. भगवान के विषय में तो ज्ञात नहीं, पर कलियुग के कानून के बारे में सिद्ध था. समदर्शी है नाम तिहारो–

पुजारीजी आत्मलीन हो चुके थे. गहन चिंतन में डूब चुके थे. यह अन्वेषण करने में कि चढ़ोतरी के बाजार में छाई मंदी का नाश करने हेतु कौन से उपाय किए जाएं? अन्यथा उन्हें यह ज्ञान दिया जाता कि भगवान की दृष्टि में सब तुच्छ है.

उन की दृष्टि में मेरे पैर तुच्छ हैं. इसलिए उन की रक्षा करने वाले मेरे जूतों के चोरी में हस्तक्षेप नहीं करते हैं. उन की दृष्टि में भक्तिनों के गले और कान तुच्छ

हैं. इसलिए उन में फंसे सोने के हार तथा झुमके चोरी हो जाने देते हैं. सच यह है कि वे चोरी के किसी काम में हस्तक्षेप नहीं करते हैं.

आदमी सौ प्रतिशत टैक्स चोरी करे, उन की बला से. टैक्स चोरी रोकने का काम राजस्व विभाग का है, वह देखे.

धर्म का धंधा करने वाले चोरी की जमीन पर धर्म की दुकान खोल कर बैठ जाएं. भगवान को चिंता नहीं. सरकारी जमीन को अवैध कब्जे से बचाना संबंधित विभाग का काम है, वह समझे.

चोर जी भगवान के मुकुट, स्वर्णाभूषण आदि उतार कर ले जाते हैं, भगवान कुछ नहीं कहते हैं. यहां तक कि भगवान को उठा ले जाते हैं, भगवान सहर्ष चले जाते हैं. वे धर्म पांखंडियों की कैद में रहें या चोरों के गोदाम में या अमीरों के ड्राइंगरूमों में, भगवान की सेहत पर क्या अंतर पड़ता है? न उन्हें यहां चढ़ोतरी में आई मेवामिठाई खानी है न वहां भूख झेलनी है. भूख झेलना प्राणियों का गुण है. वे तो भगवान हैं.

उन्हें यह दिव्य ज्ञान भी देते कि भगवान ही अगर चोरी रोकने निकल पड़ेंगे तो पुलिस भाइयों में आलसी होने का खतरा बढ़ जाएगा. हालांकि, अब पुलिस भी चोरी रोकने की ओर विशेष ध्यान नहीं देती है क्योंकि उस का अपहरण राजनीतिबाजों ने कर रखा है. जो समय वह जनता की रक्षा में व्यय करती, उसे वीआईपियों ने चुरा लिया है. ●


दिल्ली प्रैस

| आफर क्रमांक | पत्रिका | प्रतियों की संख्या | अंक | अवधि | प्रति मूल्य | वार्षिक मूल्य | सब्सक्रिप्शन आफर (रजिस्टर्ड डाक) | चिह्नित करें |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | गृहशोभा | 1 | पाक्षिक | 1 वर्ष | 50.00 | 1200.00 | 1000.00 | ☐ |
| 2. | सरिता | 1 | पाक्षिक | 1 वर्ष | 50.00 | 1200.00 | 999.00 | ☐ |

यह फार्म अपने चैक/डी.डी. के साथ भेजें

नाम: ..... जन्मतिथि: DD MM YY

पता: .....

..... पिन:

मोबाइल नं.: फोन नं.: ई-मेल:

चैक / डी.डी. नं.: तिथि:

DELHI PRAKASHAN VITRAN PRIVATE LIMITED के पक्ष में देय होगा.

क्रैडिट कार्ड: अमेक्स वीसा मास्टर कार्ड अंतिम तिथि: MM YY

जारी करने वाले बैंक का नाम:

हस्ताक्षर तिथि

नियम व शर्तें : कृपया इस फार्म को चैक/डीडी के साथ इस पते पर भेजें- DELHI PRAKASHAN VITRAN PVT. LTD. ई-8, झन्डेवालान एस्टेट, माउंड फ्लोर, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली - 110055 चैक/डीडी का भुगतान भारत में मान्य हो. यह विशेष योजना कुछ समय के लिए ही है. पत्रिका डिलीवरी के लिए कृपया 4-5 हफ्तों का समय दें. पत्रिका की प्रति आपको रजिस्टर डाक के द्वारा प्राप्त होगी. समस्त विवाद केवल दिल्ली न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र के अधीन है. अधिक जानकारी के लिए दिल्ली प्रैस के सब्सक्रिप्शन विभाग से संपर्क करें: फोन-टोल फ्री नंबर 1800 103 8880 फोन नंबर 41398888 (सभी लैंडलाइन और मोबाइल द्वारा मान्य, सोमवार से शनिवार सुबह 10:00 से शाम 6:00 तक) ईमेल : subscription@delhipress.in, आप औनलाइन http://www.delhipress.in/subscribe पर भी सब्सक्राइब कर सकते है.

# चुगली की आदत बच्चों में न पनपने दें

• किरण सिंह

यहां की बात वहां करना, किसी के पीठपीछे उस की बुराई करना, किसी को भलाबुरा कहना आदि चुगली करना है. बच्चों में अकसर चुगली की आदत एक बार पड़ जाती है तो फिर यह उम्रभर रहती है.

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, चुगली करना अपने दिल की भड़ास निकालने का एक माध्यम है या यों कहें कि हीनभावना से ग्रस्त व्यक्ति चुगली कर के खुद को तुष्ट करने का प्रयास करता है. इसीलिए वह खुद में कमियां ढूंढ़ने के बजाय दूसरों की मीनमेख निकालने में अपनी ऊर्जा खपाता रहता है.

## चुगलखोर व्यक्तियों की दोस्ती टिकाऊ नहीं होती

वैसे हम चुगलखोरों को लाख बुराभला कह लें लेकिन सच यह है कि निंदा रस में आनंद बहुत आता है. शायद यही वजह है कि अपेक्षाकृत चुगलखोरों

के संबंध अधिक बनते हैं या यों कहें कि चुगलखोरों की दोस्ती जल्दी हो जाती है. लेकिन यह भी सही है कि उन की दोस्ती टिकाऊ नहीं होती क्योंकि वास्तविकता का पता लगने पर लोग चुगलखोरों से किनारा करने लगते हैं.

## बच्चों में चुगलखोरी

अकसर देखा गया है कि बच्चे जब गलती करते हुए अभिभावकों द्वारा पकड़े जाते हैं और पैरेंट्स पूछते हैं कि कहां से सीखा, तो वे अपने को तत्काल बचाने के लिए अपने दोस्तों या फिर भाईबहनों का नाम ले लेते हैं जिस से पैरेंट्स का ध्यान उन पर से हट कर दूसरों पर चला जाता है. यहीं से चुगलखोरी की आदत लगने लगती है.

एक बार सोनू की मम्मी ने सोनू को पैसे चोरी करते हुए पकड़ लिया और फिर डांटडपट कर पूछने लगीं कि यह सब कहां से सीखा. सोनू ने तब अपना बचाव करने के लिए पड़ोस के दोस्त का नाम ले लिया. यह बात सोनू की मम्मी ने उस के दोस्त की मम्मी से कह दी. परिणामस्वरूप, सोनू के दोस्त ने सोनू को चुगलखोर कह कर उस से दोस्ती तोड़ ली और सोनू दुखी रहने लगा.

यहां पर सोनू की मम्मी को सोनू को यह सब किस ने सिखाया है, यह न पूछ कर चोरी के साइड इफैक्ट्स बता कर आगे से ऐसा न करने की सीख देनी चाहिए थी. साथ ही, यह भी बताना चाहिए था कि चुगली करना और चोरी करना दोनों ही गलत हैं.

## ऐसे बढ़ती है चुगली करने की प्रवृत्ति

कभीकभी पैरेंट्स अनजाने में ही अपने बच्चों को आहत कर उन में चुगली करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं. दीपक के पापा हमेशा ही अपने बेटे दीपक की तुलना अपने दोस्त के बेटे कुणाल से करते हुए कुणाल की प्रशंसा कर दिया करते थे जिस से दीपक का कोमल सा बालमन आहत हो जाता था और वह कुणाल की तरह बनने की कोशिश करता था. जब उस की तरह बनने में नाकामयाब हो गया तो वह अपने पापा से कुणाल की झूठीसच्ची चुगली करने लगा.

सो, मातापिता को बच्चों में छोटी उम्र से ही चुगली की आदत पनपने नहीं देनी है और उन्हें यह बताना है कि चुगली करना गलत है. बचपन से ही बच्चों में चुगली की आदत नहीं पनपेगी, तो बड़े हो कर भी वे खुद पर ध्यान देंगे बजाय किसी के प्रति कुंठित मन से चुगली करने के. ●

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम
★★½ मध्यम ★★ साधारण ★½ औसत

## माई क्लाइंट्स वाइफ ★★½

यह एक सस्पैंस थ्रिलर फिल्म है जो अंत तक दर्शकों को बांधे रखती है. फिल्म देखते वक्त दर्शक यही सोचते हैं कि जो कुछ उन्हें दिखाया जा रहा है, वही सच है, लेकिन क्लाइमैक्स में जब सच की परतें उघड़ती हैं तो दर्शक हक्केबक्के रह जाते हैं. यह फिल्म सिर्फ सस्पैंस ही नहीं परोसती, पतिपत्नी के आपसी रिश्तों की बात भी करती है. पतिपत्नी की आपसी अनबन, पत्नी पर शक करना, मारपीट और रिश्तों में आई खटास को भी निर्देशक ने दिखाया है. इस सब को दिखाते वक्त निर्देशक ने रहस्य बनाए रखा है. दर्शक कहानी में इस कदर खो जाते हैं कि उन्हें परदे पर जो दिख रहा है वे उसे ही सच समझने लगते हैं. कभी वे पति को पत्नी पर अत्याचार करने वाला समझने लगते हैं तो कभी पत्नी को चरित्रहीन.

यह फिल्म की कहानी की विशेषता ही है कि पति की बातें सुन कर लगता है कि पत्नी बेवफाई कर रही है और पत्नी की बातें सुन कर लगता है कि पति उस पर खामखां शक कर रहा है कि वह दूसरे पुरुषों के साथ संबंध बनाती है.

निर्देशक मीना भास्कर पंत की इस कहानी को कहने की शैली बहुत ही लाजवाब है.

फिल्म की कहानी छत्तीसगढ़ के रायपुर शहर की है. रघुराम सिंह (अभिमन्यु सिंह) हवालात में बंद है. उस पर आरोप है कि उस ने अपनी बीवी सिंघौरा (अंजलि पाटिल) से मारपीट की है. पुलिस ने उस पर दफा 307 (अटैंप्ट टू मर्डर) का चार्ज लगाया है, जबकि रघुराम सिंह का कहना है कि पत्नी उसे फंसाना चाहती है. रघुराम का वकील मानस (शारिब हाशमी) कन्फ्यूज्ड है कि सचाई क्या है. तहकीकात के दौरान बहुत सी संदिग्ध बातें होती हैं, संदिग्ध लोग आतेजाते हैं और पुलिस अफसर अंत में राज खोलता है.

फिल्म की शुरुआत रात के अंधेरे में दौड़ती जा रही साइरन बजाती एंबुलैंस से होती है. दूसरे ही सीन में फिल्म की नायिका अपने सारे सुबूत मिटा कर और एक पत्र छोड़ कर घर से जाती दिखती है. पत्र में लिखा है कि 'आज के बाद मैं ने दुनिया के लिए अपनी गुमनाम पहचान का हर सुबूत जला डाला है, यह सच मैं दुनिया को बताना चाहती हूं.'

रघुराम सिंह अपने वकील को बताता है कि उस की पत्नी उस की पीठ पीछे घर में दूसरे मर्दों को बुलाया करती है. वह अबला नारी बनने की कोशिश कर रही है, उसे मर्दों को अपने सामने झुकाने में मजा आता है. दूसरी ओर रघुराम की पत्नी सिंघौरा का कहना है कि उस के जन्मदिन वाले दिन केबल औपरेटर घर पर आया था. उस वक्त वह पौर्न फिल्म देख रही थी. केबल वाले की नीयत खराब हो गई थी. पति छिप कर घर

आया. केबल वाला भाग गया और रघुराम ने पत्नी की जम कर पिटाई की.

पुलिस ने जब केबल वाले को पकड़ा तो उस के मुंह से जो असलियत सुनी उसे सुन कर पुलिस को कुछ और ही पता चला. इस के अलावा घर में 2 नौकर भी हैं, जिन की बातें रहस्यमयी हैं.

गहन तहकीकात के बाद पुलिस को असली कहानी पता चली. दरअसल, पेशे से बिल्डिंग कौंट्रैक्टर रघुराम को अपनी पत्नी के चालचलन पर शक था. उस की पत्नी ने रघुराम पर दफा 370 का केस

रजिस्टर कराया था. उस के सिर में लगी गहरी चोट का इलाज डा. जावेद (शारिब हाशमी) के क्लीनिक में चला. वहीं डाक्टर जावेद ने सिंघौरा की कहानी बुनी और अपनी पत्नी आफरीन (अंजलि पाटिल) को सिंघौरा बनाया और खुद वकील बना.

नौकरों ने पुलिस को बताया कि जावेद और आफरीन घर में अजीबअजीब हरकतें करते थे. डाक्टर जावेद किसी और घर में घटी घटना को अपने घर में इमेजिन कर रहा था और इस तरह उस ने रघुराम और सिंघौरा की कहानी को गढ़ लिया.

आफरीन अब इस कहानी से परेशान हो चुकी थी. उस ने मुसलिम कपड़े पहने, बुरका पहना, नमाज पढ़ी. घर आए वकील, जो असल में जावेद ही था, को कुरसी से बांध कर गुमनामी के अंधेरे में गायब हो गई.

आफरीन को उस रात के बाद कभी देखा नहीं गया. डाक्टर जावेद रोलप्ले विकार का शिकार था. उस के खिलाफ कोई शिकायत न होने पर पुलिस उस पर कोई मुकदमा दर्ज नहीं कर पाई.

यह एक सस्पैंस थ्रिलर फिल्म है. अल्फर्ड हिचकौक के बाद बौलीवुड में कई सस्पैंस थ्रिलर फिल्में बनीं, जैसे 'वह कौन थी', 'कोहरा', 'बीस साल बाद' आदि. इस फिल्म में दर्शक बारबार चौंकते हैं. हर अगले सीन में अनजाने भय का एहसास होता रहता है. शारिब हाशमी और अंजलि पाटिल के किरदारों को देख कर दर्शक चौंक जाते हैं कि ऐसा तो उन्होंने सोचा न था.

फिल्म का निर्देशन काफी अच्छा है, फिल्म के संपादन में अभी और कसावट की गुंजाइश थी. संवाद अच्छे हैं. फिल्म की सिनेमेटोग्राफी काफी अच्छी है. रात के समय लाइटों का जलनाबुझना रहस्यमयी वातावरण बनाता है. फिल्म के एक सीन में पंडवानी गायिका तीजन बाई का आना रुचिकर लगता है.

सिंघौरा बनी अंजलि पाटिल का काम लाजवाब है. अभिमन्यु सिंह और शारिब हाशमी का अभिनय भी काफी अच्छा है. इस फिल्म को शेमारू कंपनी ने ओटीटी प्लेटफौर्म पर रिलीज किया है.

# शकुंतला देवी ★★½

यह फिल्म 'मानव कंप्यूटर' नाम से विख्यात शकुंतला देवी की बायोग्राफी है, जिसे विद्या बालन पर फिल्माया गया है. विद्या बालन ने कई यादगार फिल्में की हैं, जिन में 'डर्टी पिक्चर', 'कहानी', 'तुम्हारी सुलु', 'मिशन मंगल' में उस के अभिनय को काफी सराहा गया. 'शकुंतला देवी' सिर्फ बायोग्राफी ही नहीं है, यह फिल्म 'डर्टी पिक्चर' के कहीं बहुत ऊपर है. इस फिल्म में शकुंतला देवी के जमा, घटा, गुणा और स्क्वैयररूट जैसे दुरूह फार्मूले ही नहीं हैं, भरपूर मनोरंजन भी है. निर्देशक ने दर्शकों को गणित में ही उलझाए नहीं रखा है, विद्या बालन की प्रतिभा को एक बार फिर खुल कर दिखाने का मौका दिया है.

हमारे समाज में गणित को अमूमन बहुत मुश्किल माना जाता है. इसे लड़कियों के करने लायक नहीं माना जाता. न जाने क्यों समाज की ऐसी धारणा है कि वह मानता है कि लड़कियों में दिमाग कम होता है, वे गणित जैसा मुश्किल सब्जैक्ट ले कर उत्तीर्ण नहीं हो सकतीं. जबकि आज महिलाएं सिर्फ गणित ही नहीं, विज्ञान के क्षेत्र में भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर चल रही हैं.

1929 में जन्मी शकुंतला देवी ने समाज की इस धारणा को ध्वस्त किया. उस ने बड़ी हो कर इंसानों के लिए अंकगणित की जटिलताओं को चुटकियों में हल कर के दुनिया को अचंभित कर दिया. उसे 'मानव कंप्यूटर' की उपाधि दी गई. 1950 में जब एलजीबीटी शब्द का आविष्कार नहीं हुआ था, शकुंतला देवी ने होमोसैक्सुअल विषय पर किताब लिखी. उस वक्त महिलाओं का घर से निकलना वर्जित माना जाता था. शकुंतला देवी ने विदेशों में जा कर अपनी प्रतिभा का परचम फहराया. उस ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के खिलाफ चुनाव भी लड़ा था. वह महिला सशक्तीकरण का एक उदाहरण बनी.

शकुंतला देवी के इस व्यक्तित्व को विद्या बालन ने परदे पर सजीव कर दिखाया है. 1934 से 2000 तक के सफर में शकुंतला के बचपन, जवानी, प्रौढ़ावस्था को शामिल किया गया है. इस सफर की शुरुआत शकुंतला देवी की महज 5 साल की उम्र से होती है. वह बड़े से बड़े सवाल का मुंहजबानी हल सुना देती थी. वह स्कूल जाना चाहती थी, मगर बेरोजगार पिता शकुंतला के शो कराने लगे. परिवार को

पैसा मिलने लगा और देखते ही देखते शकुंतला की ख्याति पहले शहर, फिर देशविदेश में फैलने लगी. उस के आजाद खयाल स्वभाव ने उसे परिवार से दूर कर दिया. वह मां से गुस्सा थी क्योंकि उस ने पिता के गलत तरीकों को सहते जिंदगी गुजार दी. वह लंदन चली गई. उस के शोज वहां होने लगे. देखते ही देखते लंदन, अमेरिका, रोम तथा अन्य यूरोपीय देशों में

उस की ख्याति फैलती चली गई. उस की मुलाकात परितोष (जिश्शु सेन गुप्ता) से हुई और दोनों ने शादी कर ली. जल्दी ही दोनों में अलगाव हो गया. उन की एक बेटी अनु (सान्या मलहोत्रा) पैदा हुई जो बड़ी हो कर मां के इस गणित से काफी दूर रहने लगी. वह मां का सम्मान नहीं करती थी. अनु की शादी अजय अभय कुमार (अमित साध) से होती है. वह एक बेटी की मां भी बन जाती है, पर अभी तक अपनी मां से नाराज है. वह अपनी मां शकुंतला देवी से कानूनन संबंधविच्छेद चाहती है और इस के लिए उस ने अदालत में मुकदमा भी दर्ज करा दिया है. अदालत में पेशी के दौरान दोनों मांबेटी मिलती हैं और बेटी का नजरिया बदल जाता है.

मांबेटी के उतारचढ़ाव, प्रेम, कटुता से भरे रिश्ते की इस कहानी को बेटी के नजरिए से पेश किया गया है.

फिल्म का मध्यांतर से पहले का हिस्सा बांधे रखता है. वह भाग मजेदार और मनोरंजक है. विद्या बालन का चोटियां बनाए लंदन जाना, वहां क्लबों में शराब पीना, नाचना देख कर लगता है कि वह पूरी तरह किरदार में रम गई है. मध्यांतर के बाद कहानी कहीं भटक सी जाती है. फिल्म का बारबार फ्लैशबैक में जाना फिल्म के प्रवाह को अवरुद्ध करता है. फिल्म में विद्या बालन को ओवर कौन्फिडैंट दिखाया गया है. वह कहती है, 'मैं कभी नहीं हारती.' इस तरह की और भी कई छूटें निर्देशक ने ले ली हैं.

फिल्म का निर्देशन अच्छा है. निर्देशक ने एक ऐसी मां को चित्रित किया है जो जीवन में खुद आगे बढ़ने के साथसाथ अपनी बेटी पर भी पकड़ बनाए रखना चाहती है. विद्या बालन जैसी अभिनेत्री ही शकुंतला देवी का किरदार निभा सकती थी. लगता है, मानो यह किरदार उसी के लिए ही लिखा गया है. बेटी की भूमिका में सान्या मलहोत्रा का काम भी बढ़िया है. जिश्शु सेना गुप्ता, अमित साध, शीबा चड्ढा सब ने बढ़िया परफौर्मेंस दी है. फिल्म का गीतसंगीत पक्ष अच्छा है. गाने सुन कर ऐसा लगता है जैसे 50 के दशक के हों. छायांकन बढ़िया है. विदेशी लोकेशनें सुंदर बन पड़ी हैं. संवाद भी अच्छे हैं. परिवार के साथ फिल्म देखी जा सकती है.

## रात अकेली है ★½

मर्डर मिस्ट्री वाली यह एक क्राइम थ्रिलर फिल्म है. फिल्म के पहले ही सीन में हत्या हो जाती है. हत्या क्यों हुई, किस ने की, मारने वाला कौन है जैसे कई राजों को अंत तक राज ही रहने दिया गया है. दर्शक बंधे से रहते हैं. यही फिल्म की विशेषता है.

फिल्म की शुरुआत रोचक है, जासूसी फिल्म की तरह 3 मर्डर हो जाते हैं. रात के अंधेरे में एक गाड़ी की 2 चमकती सी आंखों सी लाइटें और एक शादी वाले घर में एक राजनीतिक मुखिया का खून. फिल्म का रहस्य गहराता जाता है. इंस्पैक्टर जटिल यादव (नवाजुद्दीन सिद्दीकी) केस की तहकीकात करता है. उसे पता चलता है कि बूढ़े राजनीतिज्ञ ठाकुर रघुवेंद्र सिंह (खालिद तैयबजी) की शादी उसी दिन एक कमउम्र की जवान लड़की राधा (राधिका आप्टे) से हुई थी और उसी रात ठाकुर का मर्डर हो

गया. पहले तो इंस्पैक्टर का शक राधा पर जाता है कि उसी ने अपने प्रेमी के साथ मिल कर ठाकुर की हत्या की होगी, क्योंकि ठाकुर ने अपनी वसीयत भी नहीं कर रखी थी और सारी जायदाद की मालिक अब राधा ही होगी. जैसेजैसे इंस्पैक्टर की तहकीकात आगे बढ़ती है, उसे पता चलता है कि एक विधायक मुन्ना राजा (आदित्य यादव) परिवार के बहुत करीब है. ठाकुर के परिवार में बेटा, बेटी, छोटे भाई की विधवा, पहली पत्नी का भाई, किशोर नौकरानी और एक बूढ़ी औरत भी है.

5 साल पहले ठाकुर की पत्नी और ड्राइवर की भी हत्या हो गई थी. इंस्पैक्टर जटिल यादव एक से एक कड़ियां जोड़ते हुए नतीजे पर पहुंचता है और सब के सामने राज खोलता है कि खून किस ने किया है. परिवार के साथसाथ दर्शक भी भौचक्के रह जाते हैं. इंस्पैक्टर की बातों से पता चलता है कि ठाकुर रसिक किस्म का इंसान था और युवा लड़कियों के साथ सैक्स संबंध बनाता था. वह अपनी भतीजी को अपने सामने निर्वस्त्र बैठा कर उस की फोटुएं खींचता था. यह सब ठाकुर के भाई की विधवा जानती थी. इस बात का परदाफाश होते ही ठाकुर के भाई की विधवा खुद को गोली मार लेती है. ठाकुर का बेटा घर छोड़ कर चला जाता है.

फिल्म की इस कहानी में महिला यौनशोषण, बाल यौनशोषण, पारिवारिक व राजनीतिक दांवपेचों को दिखाया गया है. फिल्म में पुरुष पात्र महिलाओं पर अपनी धाक जमाते नजर आते हैं, फिल्म का निर्देशन अच्छा है. काफी अरसे के बाद एक अच्छी मर्डर मिस्ट्री दर्शकों को देखने को मिली है.

नवाजुद्दीन सिद्दीकी पुलिस अफसर की भूमिका में जंचा है. राधिका आप्टे नवाजुद्दीन की जोड़ी 'बदलापुर' और 'मांझी : द माउंटेनमैन' के बाद एक बार फिर से परदे पर है. अन्य कलाकार अपनीअपनी भूमिकाओं में फिट हैं. एकाध गाना बैकग्राउंड में चलता रहता है. सिनेमेटोग्राफी काफी अच्छी है. फिल्म के संवाद भी अच्छे हैं. इंस्पैक्टर बने नवाजुद्दीन द्वारा बोला गया संवाद 'एक बार दिमाग ठनक गया तो चाहे वरदी चली जाए या चौकी, हम सच कहीं से भी खोद निकालेंगे' लाजवाब है.

## यारा ★★

दोस्ती पर बनी इस फिल्म को फ्रैंडशिप डे (30 जुलाई) को जी-5 ओटीटी प्लेटफौर्म पर रिलीज किया गया है. इसे 'बुलेट राजा', 'पान सिंह तोमर', 'साहेब, बीवी और गैंगस्टर' जैसी फिल्में बनाने वाले तिग्मांशु धूलिया ने बनाया है. तिग्मांशु की फिल्मों में क्राइम के साथसाथ गोलीबारी को प्रमुखता से दिखाया जाता है. 'यारा' भी जुर्म की काली दुनिया पर आधारित है.

हर इंसान के दिमाग में सपने चलते रहते हैं. सपनों को पूरा करने के 2 रास्ते होते हैं. पहला रास्ता है मेहनत का और दूसरा जुर्म की काली दुनिया का. फिल्म

'यारा' के बचपन के 4 दोस्त दूसरे रास्ते को अपनाते हैं और बंदूक के दम पर पूरी दुनिया को जीतने की कोशिश करते हैं. ये चारों दोस्त ताश के खेल में 4 इक्के जैसे हैं, यानी हमेशा जीत इन्हीं की होती है.

फिल्म की कहानी 1950 के दशक से शुरू हो कर 1997 तक चलती है. फागुन (विद्युत जामवाल) अपने पिता चांद के साथ राजस्थान के एक गांव में रहता है. उस का पिता देसी हथियार बनाने का काम करता है. कुछ वर्षों बाद एक आदमी किशोर (अमित साध) को वहां ले कर आता है. एक दिन चांद के बनाए कट्टे से जमींदार का खून हो जाता है. जमींदार का भाई चांद को जान से मारने आता है तो फागुन और मितवा जमींदार के भाई पर गोली चला कर भाग जाते हैं. बस में उन्हें चमन (संजय मिश्रा) मिलता है. दोनों उस के साथ भारत-नेपाल सीमा पर बने एक गांव में पहुंच जाते हैं. वहां उन्हें उन के हमउम्र रिजवान (विजय वर्मा) व बहादुर (केनी बसुमतारी) मिलते हैं. चारों मिल कर 'चौकड़ी गैंग' बना लेते हैं. यह गैंग भारत-नेपाल बौर्डर पर तस्करी करता है.

एक दिन बड़े हो चुके फागुन की मुलाकात नक्सल आंदोलन से जुड़ी एक युवती सुकन्या (श्रुति हासन) से होती है. चारों दोस्त उस के ग्रुप को हथियार सप्लाई करते हैं. फागुन को सुकन्या से प्यार हो जाता है. एक दिन पुलिस इन चारों को पकड़ लेती है. पुलिस इन पर थर्ड डिगरी का इस्तेमाल करती है. इन पर मुकदमा चलता है और फागुन को 10 वर्ष, मितवा को 4 वर्ष, रिजवान और बहादुर को 7-7 वर्ष की सजा हो जाती है. जेल से छूटने के बाद फागुन, रिजवान और बहादुर मिलते हैं लेकिन मितवा का पता नहीं चल पाता. तीनों दिल्ली में अपना काम शुरू करते हैं. एक दिन मितवा भी लौट आता है. चारों की जिंदगी बदल जाती है.

इस फिल्म में तिग्मांशु ने ऊंची जातियों के लोगों द्वारा नीची जाति वालों पर अत्याचार करते दिखाया है. फागुन का पिता लोहार था, इसीलिए जमींदार का भाई उस की जान लेने पर आमादा था, इस के अलावा नक्सलवाद की झलक भी

देखने को मिलती है. लेकिन यह सब फिल्म में छिप सा गया है. दोस्ती को भी हलके अंदाज में दिखाया गया है. 'ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे' फिल्म में इस का आभास नहीं हो पाता.

फिल्म का निर्देशन कमजोर है, पटकथा भी ढीली है. विद्युत जामवाल ने 'कमांडो-3' में जो हैरतअंगेज स्टंट दिखाए थे, वे इस फिल्म में नदारद हैं. फिल्म का कभी वर्तमान, कभी फ्लैशबैक में चले जाना प्रवाह में बाधा डालता है. विद्युत जामवाल के अलावा अन्य कलाकार खास प्रभावित नहीं कर पाते. श्रुति हासन कुछ हद तक ठीक लगी. गाने नहीं हैं, संगीत चलताऊ है. छायांकन अच्छा है. ●

# "आत्मविश्वास है तो आप कुछ भी कर सकते हैं"

# विद्या बालन

• सोमा घोष

अभिनेत्री विद्या बालन अपने किरदारों से जानी जाती हैं, चाहे वह 'द डर्टी पिक्चर' की सिल्क का किरदार हो या 'कहानी' की विद्या का. अपनी जर्नी के बारे में विद्या ने रोचक बातें बताईं. पेश हैं अंश.

फिल्म 'परिणीता', 'लगे रहो मुन्ना भाई', 'द डर्टी पिक्चर' और 'कहानी' आदि कई फिल्मों से अपने अभिनय का लोहा मनवा चुकी अभिनेत्री विद्या बालन स्वभाव से हंसमुख, विनम्र और स्पष्ट भाषी हैं. 'लगे रहो मुन्ना भाई' फिल्म उन के कैरियर का टर्निंग पौइंट था, जिस के बाद से उन्हें पीछे मुड़ कर देखना नहीं पड़ा. उन्होंने बेहतरीन परफौर्मेंस के लिए कई अवार्ड जीते. साल 2014 में उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया. वे आज भी निर्माता, निर्देशक की पहली पसंद

हैं. अपनी कामयाबी से वे खुश हैं और मानती हैं कि एक अच्छी स्टोरी ही एक सफल फिल्म दे सकती है. विद्या तमिल, मलयालम, हिंदी और इंग्लिश में पारंगत हैं. विद्या की फिल्म 'शकुंतला देवी' अमेजन प्राइम वीडियो पर रिलीज हो चुकी है, जिस में उन्होंने शकुंतला देवी की भूमिका निभाई है.

फिल्म 'शकुंतला देवी' में खास क्या लगा? कितनी तैयारियां करनी पड़ीं? इस प्रश्न के जवाब में विद्या कहती हैं, "जब मुझे इस भूमिका का औफर मिला तो सब से पहले मैं ने अपनेआप से पूछा कि आखिर मैं यह फिल्म क्यों करना चाहती हूं. मैं जानती हूं कि शकुंतला देवी गणित की जीनियस हैं, उन का दिमाग कंप्यूटर से भी तेज चलता है. पर जब मैं ने उन पर रिसर्च करनी शुरू की तो इतनी मनमोहक उन की कहानी थी कि मैं दंग रह गई. न कहने की कोई गुंजाइश नहीं थी.

"इस के लिए मैं ने कई सारी तैयारियां की थीं. शकुंतला के सारे शोज बहुत आकर्षक और मनोरंजक थे, जिन्हें मैं ने देखा. इस के अलावा पलभर में कठिन सवाल को हल कर लेना भी अद्भुत था. असल में शकुंतला देवी लोगों को बताना चाहती थीं कि मैथ्स हर क्षेत्र में है और मुझे उन की उस क्वालिटी, एसेंस और स्प्रिट को पकड़ना था. उन्होंने गणित को हर क्षेत्र में देखा था, उन्हें नंबर्स से प्यार था. मुझे भी नंबर्स से बहुत प्यार है. इसलिए मुझे मेरी भूमिका को समझना आसान था. इस के अलावा उन के बात करने का तरीका सीखना पड़ा, जिस के लिए मैं ने एक कोच की सहायता ली, जिन्होंने मुझे संवादों को बोलना सिखाया. उन की जिंदगी के सारे लेयर्स की गहराई में मुझे जाना पड़ा ताकि बायोपिक अच्छी बने. इस के साथसाथ शकुंतला देवी की बेटी अनुपमा बनर्जी और उन के दामाद अजय ने हमारे साथ बहुतकुछ शेयर किया जिस से सिनेमेटिक लिबर्टी लेने की जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि इस में बहुत सारा ड्रामा है, जिस में उन के जीवन के उतारचढ़ाव और संघर्ष शामिल हैं, जैसा हर इंसान के जीवन में होता है."

अधिकतर महिलाएं अपने परिवार के लिए अपनी इच्छाओं को दांव पर लगाती हैं, इस बारे में विद्या क्या सोचती हैं, वे कुछ यों बताती हैं, "यह सही है कि महिलाएं हमेशा परिवार को अधिक महत्त्व देती हैं. जब वे मां बनती हैं तो उन का जीवन बच्चे के इर्दगिर्द घूमता है. शकुंतला देवी का कहना था कि वह बच्चे को प्यार करती है, पर वह अपने कैरियर को भी उतना ही प्यार करती है और दोनों को साथ में करने में कोई हर्ज नहीं. दरअसल, समाज में महत्त्वाकांक्षी महिला को आज भी सहयोग कम मिलता है. मां बनना ही उस की सब से बड़ी उपलब्धि मानी जाती है. हर महिला को अपनी आइडैंटिटी की लड़ाई अकेले ही लड़नी पड़ती है. उसे आजादी उतनी ही मिलती है, जितनी वह अपने परिवार के साथ रह कर पा सके. उस से आगे निकल कर नहीं.

"इस के अलावा महिला कितनी भी कामयाब क्यों न हो जाए, परिवार उसे उस रूप में स्वीकार नहीं कर पाता. शकुंतला देवी को विश्व एक महान जीनियस मानता था, पर घर पर उन की बेटी उन से नौर्मल मां बनने की इच्छा जाहिर करती थी. हर बच्चा अपनी जिंदगी के इर्दगिर्द मातापिता को ही देखना चाहता है. आज भी कामकाजी महिलाएं वैसा न कर पाने की स्थिति में खुद में अपराधबोध की शिकार होती हैं."

विद्या से सवाल करने पर कि आप ने हमेशा एक स्ट्रौंग महिला की भूमिका निभाई है, इस का प्रभाव आप की रियल लाइफ पर कितना पड़ा, वे कहती हैं, "हर चरित्र कुछ न कुछ सिखाता है. मैं ने भी बहुतकुछ सीखा है. यह आप को अंदर से पूरा भी करता है. शकुंतला देवी से मैं ने सीखा है कि अगर आप में आत्मविश्वास है तो आप कुछ भी कर सकते हैं. वे स्कूल भी नहीं गई थीं, लेकिन पूरे विश्व ने उन्हें ह्यूमन कंप्यूटर माना. इसलिए अगर आप को खुद पर विश्वास है तो आप अपनी मंजिल तक पहुंच सकते हैं."

**अपनी जिंदगी पर अपनी मां के प्रभाव के विषय में विद्या बताती हैं, ''मैं दूसरों के बारे में हमेशा सोचती थी, मां ने मुझे खुद के बारे में सोचना सिखाया. वे मुझे अभी भी याद दिलाती रहती हैं. साल 2007-08 में जब मेरी ड्रैसिंग और वजन को ले कर काफी आलोचना की जा रही थी, मैं ने अभिनय छोड़ने का मन बना लिया था. पर, मां ने मुझे पास बैठा कर समझाया था कि मेहनत करने पर वजन घट जाएगा, किसी के कहने पर तू हार नहीं मान सकती. मैं ने उन की बात मानी और आज यहां पर पहुंची हूं.''**

फिल्म थिएटर पर रिलीज न हो कर डिजिटल पर रिलीज हुई है, इस बारे में विद्या कहती हैं, "कोरोना संक्रमण के इस माहौल में जो भी हो रहा है, वह ठीक ही है. इस समय सब लोग घरों में हैं. इस फिल्म को परिवार के साथ देख सकते हैं. 200 देशों के लोग इसे देख सकेंगे, जो मेरे लिए खुशी की बात है, कोई रिग्रेट नहीं है."

बायोपिक कई बार सफल नहीं होती, इस पर विद्या अपनी राय इस तरह देती हैं, "पूरा विश्व महिलाओं को आगे लाने की कोशिश कर रहा है. कई देशों में घरेलू हिंसा पर भी आंदोलन किए जा रहे हैं. ऐसे में इस तरह की फिल्में सब में आत्मविश्वास को भरने में कामयाब होती हैं. हालांकि, महिलाओं से जुड़ी कई अच्छी कहानियां हैं जिन की बायोपिक बनाई जानी चाहिए. ये कहानियां सब को प्रेरित करती हैं."

परिवार के प्रैशर की वजह से कई महिलाएं शादी के बाद या बच्चे हो जाने के बाद काम नहीं कर पातीं और रिग्रेट करती रहती हैं, इस पर विद्या का कहना है, "कभी भी किसी काम के लिए देर नहीं होती. जब भी आप को जिंदगी में कुछ करने की इच्छा होती है, आप कर सकते हैं. जो महिलाएं काम और परिवार को ले कर असमंजस में रहती हैं, उन के लिए मेरा कहना है कि आप अपने काम को कैरियर के साथ जारी रखिए. थोड़ी समस्या शुरू में आ सकती है पर धीरेधीरे वे समझ जाएंगे कि आप की भी एक जिंदगी है, एक सपना है, जिसे आप पूरा करना चाहती हैं और अगर न समझें तो मान लो कि वे लोग सही माने में आप से प्यार नहीं करते, क्योंकि जिसे आप प्यार करते हैं उन के लिए आप का पूरा सहयोग रहता है, उन की खुशी आप की खुशी होती है.

"बच्चे की जिम्मेदारी केवल मां की नहीं, बल्कि पिता और पूरे परिवार की भी है. मां सबकुछ त्याग कर घर संभाले, यह ठीक नहीं. मां के भार को कम करने की जरूरत है, ताकि मां भी खुद की जिंदगी अच्छी तरह जी सके." आखिर में अपने पति और अपनी दोस्ती पर विद्या कहती हैं, "पतिपत्नी में आपसी विश्वास ही एक अच्छी दोस्ती को जन्म देता है. एक अच्छा दोस्त आप की हर मुश्किल घड़ी में साथ रहता है और यह जरूरी भी है." ●

# हमारी बेड़ियां

वर्ष 2019 का अंतिम माह, दिसंबर की 26 तारीख को सूर्यग्रहण पड़ा. टीवी पर एक से बढ़ कर एक पंडित, ज्योतिषी, अपनीअपनी ढपली बजा रहे थे कि 25 दिसंबर की शाम 5 बजे से सूतक लग जाएगा. इस अवधि में खानापीना वर्जित है. यह तनधनपरिवार के लिए हानिकारक होगा आदिआदि.

लेकिन बच्चों और वृद्धों को इस बंधन से मुक्त भी कहा गया. इसी दौरान हमारी परिचिता 78 वर्षीया दक्षिण भारतीय आंटी, जो कि डायबिटिक हैं, ने सूर्यग्रहण का धर्म पूरापूरा ही निभाया. उन्होंने सूर्यग्रहण के वक्त न कुछ खाया न पिया, यहां तक कि मैडिसिन भी नहीं ली जोकि रोज नाश्ते के बाद लेती हैं.

हद तो तब हो गई जब वे ग्रहण के वक्त एक कीर्तन में भी चली गईं. वहां से आते वक्त शुगर लो होने से उन के पांव लड़खड़ाए और वे गिर पड़ीं. यह तो अच्छा था कि उन के मोबाइल से किसी भले व्यक्ति ने उन की बहू को फोन कर दिया. सिर में चोट लगने के कारण उन्हें सीधा अस्पताल ले जाया गया. वहां 3 दिन रहीं.

पुण्य कमाने व अगला जन्म सुधारने के चक्कर में और कब तक ऐसी व्यर्थ की बेड़ियां हमारे दिमाग को जकड़े रहेंगी? विज्ञान का तथ्य समझ कर पोंगापंथी छोड़नी ही होगी.

**मीता प्रेम शर्मा** (सर्वश्रेष्ठ)

होलिका जलने के दूसरे दिन की बात है. अलसुबह उठते हुए परिवर्तित दुनिया की नई संस्कृति से अपरिचित दादीमां ने अपने पोपले मुंह से अपने पोते की बहू को आवाज लगाई, "ओ रमा, आज घर का चूल्हा होली के अधजले अंगारे से जलता है. यह हमारी पुश्तैनी परंपरा है. तुझे मालूम है न."

नई ब्याहता बहू रमा ने आदरपूर्वक जवाब में दादी मां से कहा, "अम्माजी, अब चूल्हा है कहां? रसोई गैस है, और उस के लिए इन अंगारों की जरूरत नहीं."

"क्यों नहीं है?" दादी मां ने अपना अगला आदेश दिया, "रसोई गैस पर ही अधजले अंगारों को रख कर रसोई की शुरुआत कर, हम अपनी चली आ रही परंपराओं का तो पालन करेंगे."

यह सब पढ़ने के बाद अब आप क्या कहेंगे? **एस सी कटारिया** ●

**आप भी भेजें**

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

*अपना अनुभव* ***नाम*** *व* ***पते सहित*** *आप नीचे लिखे नंबर पर* ***एसएमएस*** *या* ***व्हाट्सऐप*** *के जरिए* ***मैसेज/औडियो*** *भी कर सकते हैं.*

**08527666772**

ननमुन...
- पंकज गोस्वामी -
इन तीन भाइयों को देखो.
इन के बाल स्टाइलिश कटे हुए हैं.
पता करें कौन से सैलून से कटवाते हैं ये लोग?
सैलूनवैलून कुछ नहीं... पापा सिर पर कटोरा रखते हैं और नीचे के बाल काट देते हैं बस...

# WE SPEAK IN 30 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

## BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the **Delhi Press** Group today.

# DELHI PRESS

**To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,**

**E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe**

THE CARAVAN CHAMPAK सरिता गृहशोभा चंपक मुक्ता सरस सलिल फार्म फूड सत्यकथा मनोहर कहानियां

Highlights CHAMPS Highlights Genies MOTORING

(REGISTERED) RNI 625/57 DL(C)-14/1088/2018-20 WPP U(C)151/16/2018-20
P.O. SRT Nagar ND-55, Posting Dt. 11 to 17 Published on 05/08/2020. Pgs. 148

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया

झुर्रियां | काले घेरे | छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- सन स्क्रीन
- फेस वाश

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

Natural Immunity Booster

ZEEGOLD
WOMEN
SOFT GELATIN CAPSULES

रोजाना सम्पूर्ण पोषण

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

ताकत व जीवन शक्ति । अधिक स्टेमिना । तनाव मुक्त रखें । जोशीला बनाए

Multi-Vitamin, Multi-Mineral
with
KOREAN GINSENG

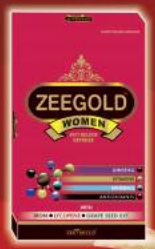

रोजाना सम्पूर्ण पोषण
सभी आयु में उपयोगी

9896101444

Online Shopping:
www.wellncare.com